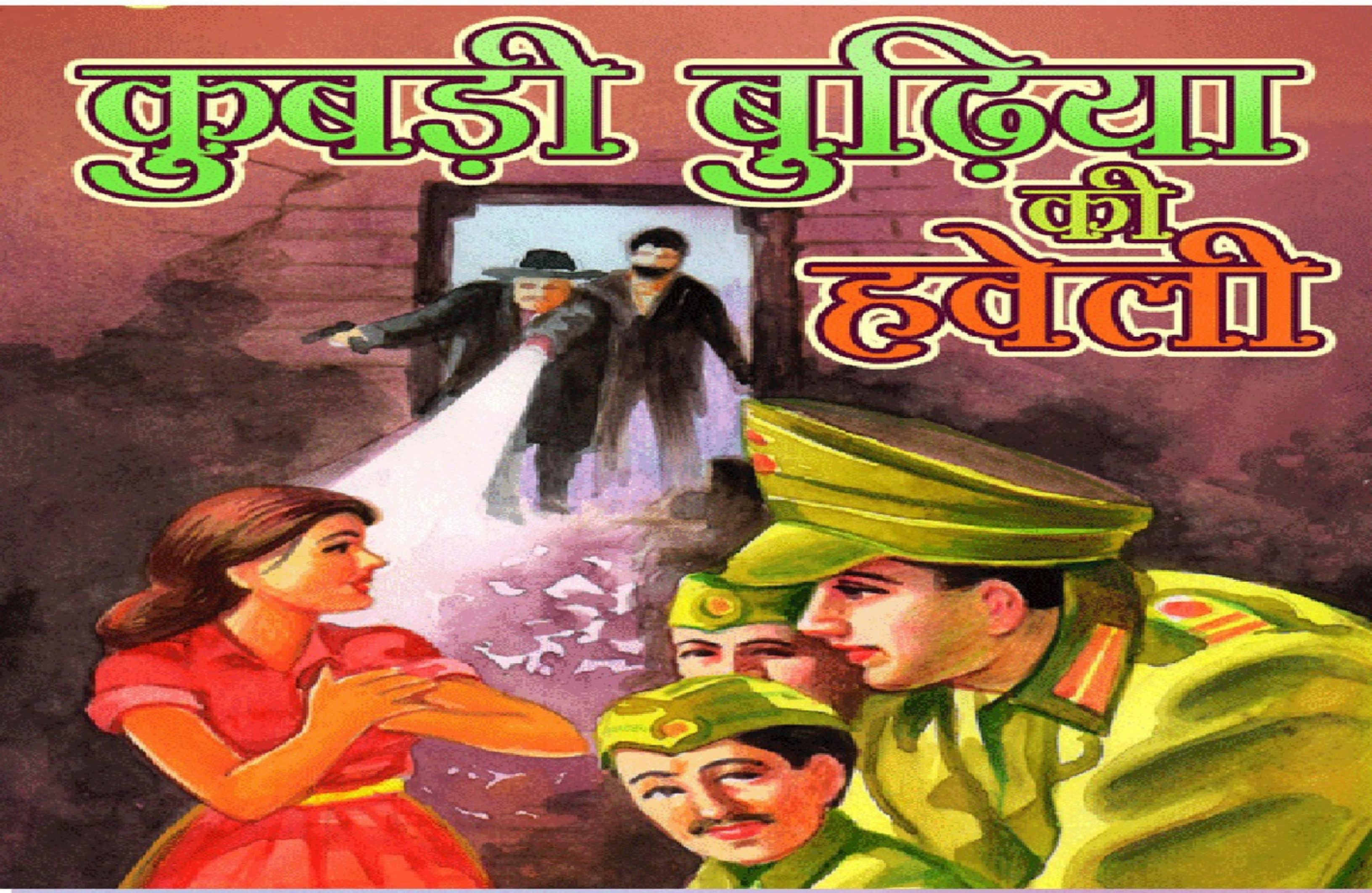
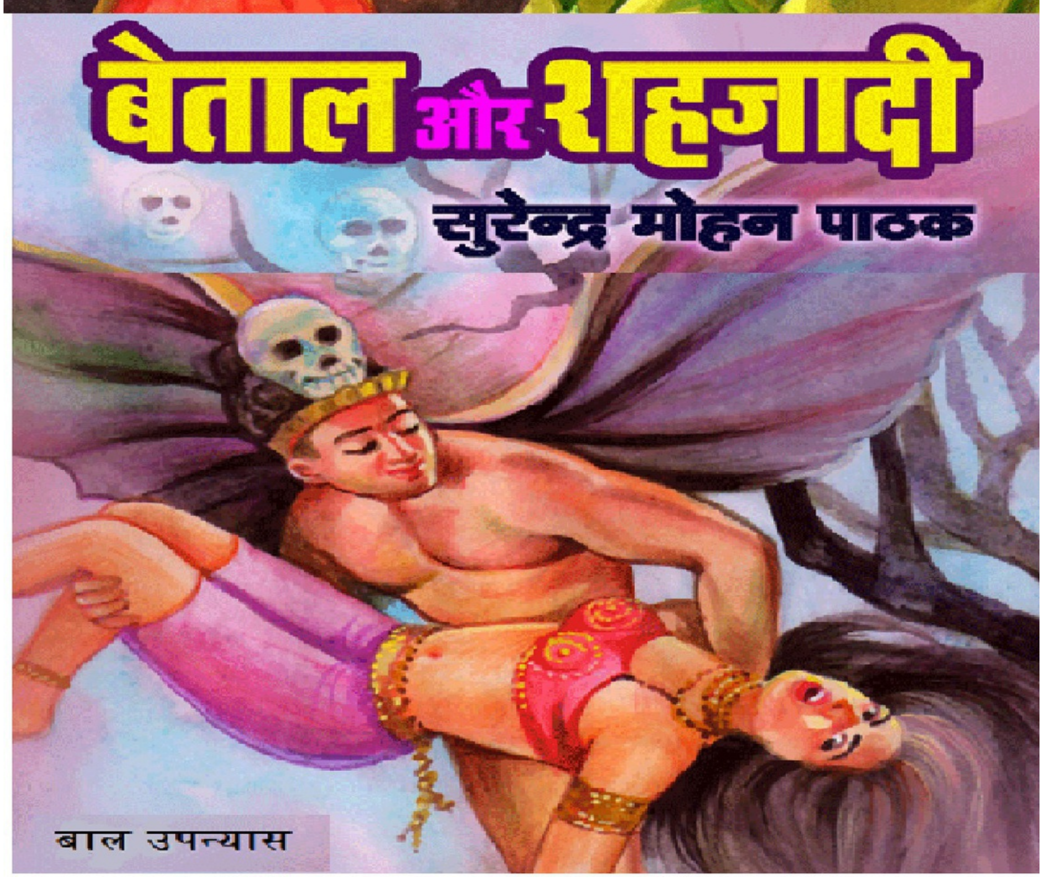

कुबड़ी बुढ़िया
की
हवेली


बेताल और शहजादी
सुरेन्द्र मोहन पाठक
बाल उपन्यास


कुबड़ी बुढ़िया की हवेली


बेताल और शहजादी
सुरेन्द्र मोहन पाठक
बाल उपन्यास

कुबड़ी बुढिया की हवेली
बेताल और शहजादी

(बाल उपन्यास)

Surender Mohan Pathak

First Edition
कुबड़ी बुढिया की हवेली: 1971
बेताल और शहजादी: 1972

Author Website: www.smpathak.com
Author e-mail: contact@smpathak.com

Contents

कुबड़ी बुढिया की हवेली

गर्मियां आ गई ।

स्कूल बन्द हो गये । राजू और मिनी को इस बार गर्मियों की छट्टियां बिताने के लिये गांव में उनके दादा के पास भेज दिया गया ।

राजू और मिनी वकील हरि प्रकाश के बच्चे थे । राजू ग्यारह साल का था और मिनी नौ साल की थी । वकील साहब की पत्नी मीना एक बेहद आधुनिक युवती थी और वह बच्चों का लम्बे समय के लिए गांव में जाकर रहना पसन्द नहीं करती थी । उसका ख्याल था कि गांव में रहकर बच्चे अस्वस्थ हो जाएंगे और बुरी आदतें सीख जायेंगे । हर साल गर्मी की छुट्टियों में वकील साहब बच्चों को गांव भेजने की बात करते थे लेकिन मीना जिद पकड़ लेती थी कि वह बच्चों को गांव नहीं भेजेगी ।

इस बार वकील साहब की जीत हुई थी । वे अपनी मोटर पर राजू और मिनी को और उनके कुत्ते शेरा को गांव में अपने पिता के पास छोड़ गये थे ।

वकील साहब के पिता अर्थात राजू और मिनी के दादा जी गांव के चौधरी थे । गांव में उनका एक बहुत बड़ा खुले-खुले कमरों और ऊंची ऊंची छतों वाला मकान था । बाहर एक बहुत बड़ा आंगन था जहां भैंसें बांधी जाती थी और जिसके एक कोने में उनके नौकर मोती का परिवार रहता था ।

बच्चे गांव में आकर बहुत खुश हुए ।

अगले दिन चौधरी साहब ने उन्हें सारे गांव में घुमा दिया । सारा गांव राजू और मिनी और उनके कुत्ते शेरा को पहचान गया । क्योंकि गांव के सारे लोग चौधरी साहब के जाने पहचाने थे इसलिए चौधरी साहब ने उनके गांव में घूमने या उनके कहीं खेलने पर किसी प्रकार की रोक नहीं लगाई ।

राजू और मिनी खुश थे ।

अगले दिन वे दोनों गांव के एक सिरे पर स्थित कुबड़ी बुढ़िया की हवेली देखने गये । हवेली बहुत बड़ी थी । उसका नाम कुबड़ी बढ़िया की हवेली कैसे पड़ गया था यह किसी को मालूम नहीं था ।

हवेली के दरवाजे पर हवेली का रखवाला बैठा था । उसने अपने सामने साफ सुथरे आधुनिक कपड़े पहने दो बच्चों को देखा तो वह झट जान गया कि वे कौन थे ।

“तुम चौधरी साहब के बच्चे हो ?” - उसने पूछा ।

दोनों ने हामी भर दी ।

“हवेली देखने आये हो ?”

दोनों ने फिर सहमतिसूचक ढंग से सिर हिला दिया ।

“लेकिन तुम्हारा कुत्ता भीतर नहीं जा सकता ।”

“ठीक है ।” - राजू बोला - “हम कुत्ता यहीं छोड़ जाएंगे । शेरा तुम यहीं ठहरना, हम अभी आते हैं ।”

शेरा ने हांफते हुए यूं गर्दन हिलाई जैसे बात उसकी समझ में आ गई हो ।

“आओ ।” - रखवाला बोला ।

राजू और मिनी रखवाले के साथ हो लिये ।

शेरा ने उनके पीछे आने का उपक्रम नहीं किया ।

रखवाला उन्हें हवेली के विभिन्न स्थानों में फिराने लगा ।

बच्चों ने देखा कि हवेली अभी भी ऐसी लगती थी जैसे वहां कोई रहता हो । चीजें धूल मिट्टी से अटी हुई नहीं थी । लगता था रखवाला सफाई का खास ख्याल रखता है ।

हवेली की दीवारों पर ढाल और तलवारें और अन्य कई प्रकार के शस्त्र टंगे हुए थे । दीवारों पर तेजस्वी योद्धाओं के बड़े बड़े तीन चित्र लगे हुए थे जो शायद हवेली के पुराने मालिकों के थे । एक बहुत बड़ा हाल था जिसकी एक पूरी दीवार पर दरबार का चित्र अंकित था । सिंहासन पर राजा बैठा था । उसकी बगल में एक बर्फ जैसी सफेद घनी दाढी मूंछ वाला आदमी खड़ा था जो राजा को एक कागज पकड़ा रहा था । सिंहासन के आसपास वर्दीधारी कर्मचारी खड़े थे और सामने जनता की भीड़ लगी हुई थी ।

राजू और मिनी दरबार के उस चित्र से बहुत प्रभावित हुए ।

“यह ठाकुर कृपाल सिंह का दरबार है ।” - रखवाला बोला - “यह तीन सौ साल पुराना चित्र है । उस समय ठाकुर कृपाल सिंह इस इलाके के राजा थे । वे अपनी दयालुता और न्यायप्रियता के लिए हर जगह मशहूर थे । आओ अब तुम्हें एक और चीज दिखाऊं ।”

बच्चे रखवाले के पीछे चल पड़े ।

“बच्चों तुमने शहंशाह जहांगीर का नाम तो सुना ही होगा ।” - रखवाला बोला ।

बच्चों ने हामी भर दी ।

“फिर तुमने यह भी सुना होगा कि शहंशाह जहांगीर का इन्साफ सारे हिन्दुस्तान में मशहूर था । जहांगीर ने अपने महल में एक घन्टा लटका रखा था जिसकी जंजीर तक किसी भी आम आदमी की पहुंच थी । अगर किसी को इन्साफ नहीं मिलता था या वह बिना कारण सताया जाता था तो वह जहांगीर के महल के पास जाकर उस घन्टे की जंजीर खींच देता था । घन्टा चौबीस घन्टों में किसी भी क्षण बजे जहांगीर फौरन फरियादी की फरियाद सुनने के लिए हाजिर होता था । ऐसा ही एक इन्तजाम अपने जीवन में ठाकुर कृपाल सिंह ने भी किया था ।”

उसी क्षण वे एक बन्द दरवाजे के सामने पहुंच गए । रखवाले ने दरवाजा खोला । वे भीतर प्रविष्ट हो गए ।

वह एक गोल मीनार थी । मीनार की छत के साथ एक विशाल घंटा लटका हुआ था ।

"इस घन्टे से बंधी हुई जंजीर हवेली के बाहर रहती थी । उस जंजीर तक प्रजा के हर आदमी की पहुंच थी । जिसे भी इन्साफ नहीं मिलता था वह आकर यह घन्टा बजा देता था और फिर ठाकुर कृपाल सिंह खुद उस आदमी की कठिनाई को सुनते थे ।

"अब यह घन्टा नहीं बजता ?" - मिनी ने पूछा ।

अब तो इसकी जंजीर ही टूट गई है । ठाकुर कृपाल सिंह के जमाने के साथ ही इस घन्टे का महत्व भी खतम हो गया है लेकिन..."

रखवाला हिचकिचाया ।

"लेकिन क्या ? मिनी उत्सुक स्वर में बोली ।

"यह घन्टा अब भी किसी अंधेरी रात को कभी कभी अपने आप बजने लगता है ।" - रखवाला बोला ।

"अपने आप ?" - राजू नेत्र फैला कर बोला ।

"अच्छा !" - मिनी हैरानी से बोली ।

"हां ।" - रखवाला बोला - "ठाकुर कृपाल सिंह के जमाने में भी एक बार यह घन्टा अपने आप बजा था ।"

"कैसे ?"

"ठाकुर कृपाल सिंह का युवराज मेहमान के तौर पर पड़ोसी राज्य में गया हुआ था । पड़ोसी राजा ने विश्वासघात किया और धोखे से उसकी हत्या करवा दी । ठाकुर कृपाल सिंह को युवराज की मौत की सूचना बहुत समय बाद मिली थी लेकिन कहते हैं जिस समय पड़ोसी राज्य में युवराज की मौत हुई थी उस समय यह घन्टा जोर-जोर से अपने आप बजने लगा था ।"

"कमाल है ।" - राजू बोला ।

मिनी बेहद प्रभावित दिखाई दे रही थी ।

"आओ अब बाहर चलें ।" - रखवाला बोला ।

"इस हवेली में कोई गुप्त रास्ता नहीं है ।" - रास्ते में एकाएक मिनी बोली ।

"क्या मतलब ?" - रखवाला बोला ।

"मैंने किताब में पढ़ा था कि पुराने जमाने की हवेलियों और किलों में गुप्त रास्ते होते हैं । अगर हवेली पर हमला हो जाता था और राज परिवार फंस जाता था तो सब लोग चुपचाप उस गुप्त रास्ते से कूच कर जाते थे । जैसे हवेली में कोई जमीन के नीचे बनी सुरंग निकलती हो जिसका मुंह हवेली से बहुत दूर किसी एकान्त जगह पे जाकर खुलता हो ।"

"ऐसा कोई रास्ता यहां नहीं है ।" - रखवाला जल्दी से बोला ।

"या शायद रास्ता हो ।" - राजू बोला - "लेकिन तुम्हें उसकी जानकारी न हो ।"

"हो सकता है ।" - रखवाले ने स्वीकार किया ।

वे लोग हवेली के मुख्य द्वार पर पहुंच गए ।

शेरा द्वार के सामने बैठा था और आशापूर्ण निगाहों से हवेली के भीतर की ओर देख रहा था ।

राजू और मिनी को देखकर वह लपककर उनकी टांगों में अपना शरीर रगड़ता हुआ कूं कूं करने लगा ।

वे लोग वापिस घर लौट चले ।

दादाजी घर नहीं थे लेकिन दादी आंगन में चारपाई पर बैठी हुई थी ।

"दादी, दादी ।" - मिनी उत्साहपूर्ण स्वर में बोली - "आज हमने हवेली देखी ।"

"अच्छा ।" - दादी बनावटी हैरानी से बोली - "क्या देखा वहां ?"

"दादी मैं बताऊंगा ।" - राजू जल्दी से बोला ।

"नहीं, मैं बताऊंगी ।" - मिनी मचलकर बोली ।

"अरे लड़ते क्यों हो ।" - दादी प्यार से बोली - "दोनों बारी बारी से बताओ ।"

"पहले मैं बताऊंगी ।" - मिनी बोली ।

"पहले मैं बताऊंगा । - राजू बोला ।

शेरा भी गुर्राया जैसे वह भी कुछ बताना चाहता हो ।

"अरे मिनी ।" - दादी बोली - "राजू तेरा बड़ा भाई है पहले उसकी बात सुनने दे ।"

"ऊं ।" - मिनी बोली - "वह मेरा बड़ा भाई है तो क्या हुआ मैं भी तो उसकी छोटी बहन हूं ।"

"अच्छा छोटी बहन ।" - राजू बोला - "तू ही पहले बोल ।"

"नहीं, पहले तू बोल ।" - मिनी बोली ।

"पहले तू ।"

"पहले तू ।"

"पहले......"

"अरे ठहरो ठहरो ।" - दादी बोली - "सुनो तुम दोनों भाग कर मोती काका के घर को हाथ लगाकर आओ । जो मेरे पास पहले पहुंचेगा, वही पहले बोलेगा ।"

"ठीक है ।" - दोनों हर्षित स्वर में बोले ।

"चलो तैयार हो जाओ । एक, दो, तीन.."

राजू और मिनी आंगन के कोने में बने मोती के घर की ओर भागे । शेरा भी जबान लटकाए उनके साथ भागा ।

दादी चेहरे पर अपार वात्सल्य के भाव लिए चारपाई पर बैठी रही ।

राजू मिनी से बड़ा था और तेज भागता था । वह बड़ी आसानी से दादी के पास पहले पहुंच सकता था लेकिन लौटती बार के चक्कर में वह जानबूझ कर पीछे रह गया ।

सबसे पहले शेरा वापिस पहुंचा । फिर मिनी जाकर दादी से लिपट गई ।

"पहले मैं .....पहले मैं ।" - वह हर्षित स्वर में चिल्लाई ।

“मैं एक ही कदम तो पीछे हूं ।” - राजू बोला ।

“फिर भी है तो पीछे ही ।” - मिनी बोली ।

“एक कदम से क्या होता है ?”

“क्यों नहीं होता ? हार जीत तो एक एक इंच से हो जाती है ।”

“अच्छा बाबा मैं हारा ।”

“चलो ठीक है । पहले मैं मिनी की बात सुनूंगी ।” - दादी बोली ।

दोनों चटखारे से लेकर हवेली की बातें सुनाते रहे ।

“दादी ।” - अन्त में मिनी मुंह बिगाड़कर बोली - “कैसी हवेली है तुम्हारे गांव की ! वहां कोई गुप्त रास्ता तो है ही नहीं ।”

“अरे मिनी बिटिया ।” - दादी बोली - “बच्चे ऐसी डरावनी जगहों की बात नहीं सोचते ।”

“मैं नहीं डरती ।” - मिनी बोली ।

“मैं भी नहीं डरता ।” - राजू छाती फुलाकर बोला ।

उसी क्षण एकाएक शेरा अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसने अपने दोनों अगले पंजे राजू की छाती पर रख दिए ।

“अरे अरे ।” - राजू हड़बड़ा गया - “यह क्या करता है ।”

“दादी ।” - मिनी खिलखिलाकर हंस पड़ी - “राजू कहता है मैं डरता नहीं ।”

“मारूंगा ।” - राजू खिसियाए स्वर में बोला ।

“अच्छा, झगड़ा छोड़ो ।” - दादी बोली - “तुम दोनों बहुत बहादुर हो । अब चल कर खाना खा लो ।”

दोनों दादी की उंगली पकड़ दांए बाएं चलने लगे । शेरा उनके पीछे था ।

***

खाना खाने के बाद राजू और मिनी सो गए और फिर चार बजे सोकर उठे । दादी ने दोनों को सत्तू और गुड़ घोलकर पिलाया जो दोनों को बहुत अच्छा लगा ।

फिर वे बाहर आंगन में आ गए ।

मोती काका के घर के सामने एक राजू की ही उम्र का लड़का खड़ा था । दोनों उसके समीप पहुंचे ।

“तुम कौन हो ?” - राजू ने पूछा ।

“मैं मोती काका का बेटा हूं ।” - वह लड़का बोला ।

“तुम्हारा नाम क्या है ?”

“भोला ।”

“मेरा नाम राजू है ।” - राजू बोला ।

“मेरा नाम मिनी है ।” - मिनी बोली ।

"मिनी मेरी छोटी बहन है ।" - राजू बोला - "ये हमारा कुत्ता शेरा है ।"

"बड़ा अच्छा कुत्ता है ।" - भोला बोला - "यह काटता तो नहीं ?"

"यह हमारे दोस्तों को नहीं काटता ।" - राजू बोला ।

"मुझे तो नहीं काटेगा ?"

"अगर तुम हुमारे दोस्त बनोगे तो नहीं काटेगा !"

"मैं तुम्हारा दोस्त बनूंगा ।"

"तो फिर शेरा तुम्हें कभी नहीं काटेगा ।"

"आओ खेलें ।" - मिनी बोली ।

"ठहरो, मैं सुन्दरी को ले आऊं ।" - भोला बोला और वापिस अपने घर में घुस गया ।

"सुन्दरी कौन?" - मिनी बोली ।

"इसकी बहन होगी ।" - राजू बोला - "जैसे तुम मेरी बहन हो ।"

लगभग फौरन ही भोला वापिस लौटा । उसके कन्धे पर एक बन्दरिया बैठी हुई थी ।

राजू और मिनी के नेत्र फैल गए ।

"यह सुन्दरी है ।" - भोला गर्वपूर्ण स्वर में बोला ।

"अरे ।" - राजू हंसता हुआ बोला - "मैं तो मिनी को कह रहा था कि सुन्दरी तुम्हारी बहन है ।"

भोला मुस्कराया ।

सुन्दरी भोला के कन्धे से उछलकर सिर पर पहुंच गई और तितर बितर राजू मिनी और शेरा को देखने लगी ।

"यह काटती तो नहीं ?" - राजू ने डरते हुए पूछा ।

"नहीं ।" - भोला विश्वासपूर्ण स्वर से बोला ।

"तुम हमें अपनी सुन्दरी से खेलने दोगे ?" - मिनी ने पूछा ।

"तुम दोनों मुझे अपने शेरा से खेलने दोगे ?" - भोला बोला ।

"हां ।" - राजू और मिनी एक साथ बोले ।

"तो फिर मैं तुम्हें सुन्दरी से खेलने दूंगा ।"

"आओ बाग में चलें ।" - राजू बोला ।

इमारत की बगल में ही कई घने फल देने वाले पेड़ उगे हुए थे जो चौधरी साहब की ही जायदाद थी ।

वे सब बाग में पहुंच गए ।

राजू ने भोला को बताया कि सुबह वे कुबड़ी बुढिया की हवेली देखने गए थे । मिनी ने उसे बताया कि उन्होंने वहां क्या क्या देखा था । साथ ही उसने हवेली में कोई गुप्त रास्ता न होने की शिकायत भी की ।

"लेकिन गुप्त रास्ता तो वहां है ।" - भोला बोला ।

“क्या ?” - मिनी हैरानी से उसका मुंह देखने लगी ।

“गुप्त रास्ता है वहां ?” - राजू बोला ।

“और नहीं तो क्या ?” - भोला बोला - “मैने खुद देखा है । वैसे बड़े काका ने दिखाया है मुझे ।”

“तो फिर रखवाले ने वह गुप्त रास्ता हमें क्यों नहीं दिखाया ?” - मिनी बोली ।

“भगवान जाने ।” - भोला बोला - “तुम लोग मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें गुप्त रास्ता दिखाता हूं ।”

“अभी चलते हैं ।” - मिनी उत्साहपूर्ण स्वर से बोली ।

“अभी ?” - राजू के स्वर में झिझक थी ।

“हां, हां । क्या हर्ज है ? अभी जाएंगे, अभी लौट आएंगे । हवेली तो हमने देख ही ली है । अब तो हमने सिर्फ गुप्त रास्ता देखना है ।”

“ठीक है ।” - भोला बोला ।

“अच्छा चलो ।” - राजू बोला ।

तीनों बच्चे हवेली की ओर चल दिए । शेरा उनके पीछे चल रहा था और सुन्दरी भोला के कन्धे पर बैठी हुई थी ।

वे हवेली के सामने पहुंचे ।

रखवाला हवेली के द्वार पर बैठा बीड़ी पी रहा था ।

“आओ बच्चो ।” - वह उन्हें देखकर बोला ।

“आपने हमें गुप्त रास्ता नहीं दिखाया !” - राजू शिकायत भरे स्वर से बोला ।

“दिखाया क्या” -मिनी बोली - “यह तो कहते थे ऐसा कोई रास्ता यहां है ही नही !”

“इस हवेली में कोई गुप्त रास्ता नहीं है ।” - रखवाला बोला ।

“है कैसे नहीं” -भोला बोला - “मैंने खुद देखा है । मीनार वाले कमरे से गुप्त रास्ता है ।”

“अरे कहा न कोई गुप्त रास्ता नहीं है यहां ।” - रखवाला झल्लाकर बोला ।

“है, है ।” - भोला जोर से बोला - “मेरे बड़े काका ने मुझे दिखाया है ।”

“हमें गुप्त रास्ता दिखाओ ।” - राजू और मिनी मचल उठे - “नहीं तो हम दादाजी से तुम्हारी शिकायत करेंगे ।”

रखवाला कुछ क्षण हिचकिचाया और फिर बोला - “अच्छा कल आना ।”

“यानी आप मानते हैं कि यहां गुप्त रास्ता है ?” - राजू बोला ।

“हां ।”

“तो फिर आपने पहले झूठ क्यों बोला ।” - मिनी बोली ।

“मैने सोचा था तुम बच्चे हो । गुप्त रास्ते को देखकर तुम डर जाओगे ।”

“हम नहीं डरते ।” - मिनी शान से बोली ।

“हम गुप्त रास्ता अभी देखेंगे ।” - राजू बोला ।

“कल आना ।” - रखवाला निश्चयपूर्ण स्वर में बोला ।

उसी क्षण भोला ने अपने कन्धे पर बैठी सुन्दरी की पूंछ मरोड़ी और फिर रखवाले की ओर संकेत किया । सुन्दरी ने फौरन भोला के कन्धे पर से छलांग लगाई और रखवाले के कन्धे पर जा बैठी । अपने अगले हाथों से उसने रखवाले का सिर थाम लिया ।

“अरे, अरे ।” - रखवाला घबराकर बोला ।

सुंदरी रखवाले की गर्दन में हाथ डालकर उसकी पीठ पर झूल गई ।

“अरे ! पकड़ो इस मुसीबत को ।” - रखवाला बोला ।

“पहले हमें आज ही गुप्त रास्ता दिखाओ ।” - भोला बोला ।

“अच्छा, अच्छा ।” - रखवाला बोला ।

“सुन्दरी !” - भोला ने आवाज की ।

सुन्दरी छलांग मारकर वापिस भोला के कंधे पर आ बैठी ।

“इसे बाहर ही छोड़कर जाना पड़ेगा ।” - रखवाला बोला ।

“अच्छा !”

बच्चों ने सुन्दरी और शेरा को हवेली के बाहर ही छोड़ दिया और रखवाले के साथ हो लिये ।

चेहरे पर तीव्र अनिच्छा के भाव लिये रखवाला आगे बढा । वह उन्हें मीनार वाले कमरे में ले गया ।

उस कमरे की सामने वाली दीवार पर एक विशाल तस्वीर लगी हुई थी । जिस में एक घुड़सवार अंकित था । रखवाले ने आगे बढकर घोड़े की आंख को दबाया ।

तत्काल तसवीर लगभग चार पांच इंच एक ओर सरक गई । तसवीर के पीछे दीवार में एक गोल पहिया सा लगा हुआ था । रखवाले ने उस पहिये को घुमाना आरम्भ कर दिया ।

बच्चों की निगाह क्योंकि पहिये पर ही थी इसलिए उन्हें यह दिखायी नहीं दिया दिया कि दायीं ओर की दीवार धीरे-धीरे अपने स्थान से सरक रही थी । सबसे पहले भोला ने उनका ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया ।

दीवार हटते ही पीछे एक सुरंग का मुंह निकल आया ।

राजू और मिनी नेत्र फैलाये गुफा के मुंह को देखने लगे ।

“यही वह गुप्त रास्ता है जिसे देखने के लिये तुम इतने उतावले हो रहे थे ।” - रखवाला बोला ।

“यह रास्ता कहां जाता है ?” - राजू ने पूछा ।

“कहीं भी नहीं ।” - रखवाला बोला - “यह थोड़ा आगे जाकर बंद हो जाता है ।”

“यह कैसे हो सकता है ?” - राजू असंतोषपूर्ण स्वर में बोला - “अगर यह कहीं जाता नहीं तो इसको बनाने की क्या जरूरत थी ?”

“मैंने किताब में पढा था कि गुप्त रास्ते संकट के समय चुपचाप भाग निकलने के काम आते हैं ।” - मिनी बोली - “इसमें से भला कोई कैसे भाग सकता है ?”

“शायद यह जगह संकट के समय छुपने के काम लायी जाती हो ।” - रखवाला बोला - “इसमें बीस पच्चीस आदमी बड़े आराम से छुप सकते हैं ।”

“इस सुरंग का मुंह आगे चलकर कहीं न कहीं जरूर खुलता होगा ।” - मिनी दृढ स्वर में बोली ।

“अरे, नहीं खुलता ।” - रखवाला बोला - “मैंने खुद भीतर जोकर देखा है । यह सुरंग आगे से बन्द है ।”

“हम भी भीतर जायेंगे ।” - राजू जिद भरे स्वर से बोला ।

“हरगिज नहीं ।” - रखवाला बोला - “मैं बच्चों को इस अंधेरी सुरंग में घुसने की इजाजत नहीं दे सकता ।”

“लेकिन...”

“और अगर तुम ज्यादा जिद करोगे तो मैं चौधरी साहब से तुम्हारी शिकायत कर दूंगा ।”

राजू और मिनी ठण्डे पड़ गये ।

रखवाले ने पहिया उल्टा घुमाया । दीवार धीरे धीरे अपनी पहली जगह पर सरक आई । रखवाले ने घोड़े की आंख दुबारा दबाई । तस्वीर अपने स्थान पर सरक गई और पहिया दृष्टि से ओझल हो गया ।

***

अगले दिन राजू, मिनी, शेरा, भोला और सुन्दरी फिर हवेली के सामने पहुंचे ।

रखवाला अपने पुराने स्थान पर बैठा बीड़ी पी रहा था ।

“तुम फिर आ गए ?” - उन लोगों को देखकर वह आशंकित स्वर से बोला ।

“हां ।” - राजू बोला - “फिर आ गये हम ।”

“तुम लोग अपनी बन्दरिया ओर कुत्ते को परे रखना । इस बार अगर बन्दरिया मुझ पर झपटी या कुत्ता मुझ पर गुर्राया तो मैं तुम सबके कान मरोड़ दूंगा ।”

“तुम बहुत बेईमान हो । बहुत झूठे हो ।”

“क्या झूठ बोला है मैंने ?”

“तुम कहते थे कि गुप्त रास्ता आगे से बन्द है । हमने बड़े काका से पूछा है । बड़े काका कहते हैं कि गुप्त रास्ता आगे से बन्द नहीं है ।”

“बड़े काका कौन ?”

“भोला के दादा के दादा ।”

“अच्छा ! वह बूढा । उसकी सिर फिर गया है । वह सौ साल पहले की बात करता है । तब रास्ता खुला था । अब वह बंद हो चुका है जो कि उसे मालूम नहीं है ।”

"अब रास्ता कैसे बन्द हो गया है ?"

"सुरंग की छत कई जगहों से भरभराकर गिर गई है। जिन स्थानों पर सुरंग की छत गिरी है उनके आगे अब दीवार चुनवा दी गई है। अब आई बात समझ में ?"

"लेकिन वह रास्ता जाता कहां है ?" - मिनी ने पूछा।

"अरे, कहा न कहीं भी नहीं जाता। अब रास्ते को दीवार बनाकर बन्द कर दिया गया है।" - रखवाला बोला।

"मैं अब की बात नहीं कर रही। मैं पूछ रही हूं, जब दीवार नहीं थी जब सुरंग की छत भरभराकर गिरी नहीं थी, तब रास्ता कहां जाता था ?"

"पता नहीं। और पता हो भी कैसे ? कोई उस सुरंग में नहीं घुसता। उस सुरंग में घुसना मौत को दावत देना है। सुरंग की सारी की सारी छत कभी भी बैठ सकती है।"

"लेकिन वह सुरंग हमेशा तो खतरनाक नहीं थी।" - राजू बोला - "किसी को तो मालूम होगा कि वह रास्ता कहां जाता है।"

"अरे बाबा तुम्हें उससे क्या लेना-देना है ?" - रखवाला चिड़चिड़े स्वर सें बोला - "वह रास्ता कहीं जाता हो। तुम्हें इससे क्या फर्क पड़ता है।"

"हम बड़े काका से पूछेंगे।" - भोला, जो इतनी देर से चुप खड़ा था, एकाएक बोला - "उन्हें जरुर मालूम होगा कि यह रास्ता कहां जाता है।"

"यह ठीक है।" - राजू बोला।

"अब भागो यहां से।" - रखवाला बोला। उसकी सशंक निगाहें रह रहकर कभी सुन्दरी की ओर और कभी शेरा की ओर उठ जाती थीं।

बच्चे वहां से चल दिये।

वे गांव के बाजार में पहुंचे।

वहां रेहड़ी वाला तरबूज बेच रहा था।

तरबूज की रेहड़ी से थोड़ी दूर एक ट्रक खड़ा था जो हर ओर से तिरपाल से ढका हुआ था। ट्रक जैक पर खड़ा था और दो आदमी उसका पहिया बदल रहे थे।

शेरा अपने शरीर को झटकता हुआ सड़क पर भागा। लेकिन सुन्दरी बहुत चालाक थी। जब वह गिरने को होती थी वह कूदकर उसकी पीठ से हट जाती थी और ज्यों ही शेरा भागना बन्द कर देता था वह फिर उसकी पीठ पर छलांग लगा देती थी।

शेरा परेशान होकर जोर जोर से भौंकने लगा।

उसी क्षण सुन्दरी ने उसकी पीठ से छलांग लगायी ओर सीधी ट्रक पर चढ़ गई।

पहिया बदलने वालों ने नहीं देखा कि सुन्दरी तिरपाल हटाकर ट्रक में घुस गयी थी।

एकाएक सुन्दरी की भयपूर्ण तेज चीख वातावरण में गूंज गई।

भोला हड़बड़ाकर ट्रक की ओर भागा।

शेरा भी चुप हो गया।

भोला ने जल्दी से ट्रक के पिछले भाग से तिरपाल हटाकर भीतर झांका ।

भीतर एकदम अंधेरा था । ट्रक भीतर से खाली था । भोला को कोई सफेद सी चीज ट्रक में हिलती दिखायी दी ।

उसी क्षण सुन्दरी ने ट्रक में से छलांग लगायी और आकर भोला की गरदन पर बैठ गई । उसकी गोलगोल भयभीत आंखें दायें-बायें फिर रही थीं ।

पहिया बदलने वाली में से एक आदमी भोला के समीप आया और क्रोधित स्वर से बोला - "ऐ लड़के, क्या कर रहा है ?"

"क्या कर रहा हूं ?" - भोला बोला - "कुछ भी नहीं कर रहा ।"

"हटो यहां से ।"

"तुम्हारे ट्रक में क्या है बाबू साहब ।" - भोला बोला - "जिसे देखकर मेरी सुन्दरी इतना डर गई है ।"

उस आदमी ने जल्दी से ट्रक की तिरपाल ठीक की और फिर चिल्लाकर बोला - "जाता है या दूं एक हाथ ।"

तब तक राजू और मिनी भी वहां पहुंच गये थे ।

भोला को ट्रक में वह सफेद सी चीज दुबारा हिलती दिखाई नहीं दी थी ।

"क्या बात है भोला ?" - राजू ने पूछा ।

"यह आदमी मुझे मारने की धमकी दे रहा है ।" - भोला बोला - "पहले इसने मेरी सुन्दरी को डरा दिया है और अब यह मुझे मारने चला है ।"

"अरे, भागते हो या नहीं यहां से ।" - ट्रक वाला बोला - "मैं एक-एक को ठीक कर दूंगा । साले बच्चे हैं या मुसीबत ।"

"शेरा ।" - राजू ललकारकर बोला ।

शेरा को समझाने की जरूरत नहीं थी कि उससे किस बात की अपेक्षा की जा रही थी । वह एक बार जोर से गुर्राया और फिर दांत निकालकर ट्रक वाले पर लपका ।

ट्रक वाले के होश उड़ गये । उसके मुंह से एक भय भरी सिसकारी निकली जिसे सुनकर उसका दूसरा साथी भी पहिया लगाना छोड़कर उसके समीप पहुंच गया ।

भोला ने सुन्दरी की पूंछ मरोड़ी और दूसरे आदमी की ओर इशारा कर दिया ।

सुन्दरी ने भोला के कंधे से छलांग लगायी और अगले ही क्षण वह दूसरे आदमी के सिर पर थी । वह दूसरे आदमी के सिर के बाल पकड़कर झूल गई ।

शेरा ने अपने दोनों अगले पांव ट्रक वाले की छाती पर रख दिये । ट्रक वाले के मुंह से एक दहशत भरी चीख निकली और वह जमीन पर लेट गया ।

"अरे !" - वह हांफता हुआ बोला - "कुत्ते को हटाओ ।"

"पहले माफी मांगो ।" - राजू बोला ।

"अच्छा, अच्छा ।"

"अच्छा अच्छा नहीं । माफी मांगो ।"
"मैं माफी मांगता हूं ।"
"शेरा !"
शेरा ने अपने मालिक की आवाज सुनी और झट ट्रक वाले की छाती से उतर आया । वह राजू और मिनी के समीप आ खड़ा हुआ और दुम हिलाने लगा ।
ट्रक वाला धूल झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ ।
"सुन्दरी !" - भोला ने आवाज दी ।
सुन्दरी ने दूसरे आदमी के सिर से ट्रक पर छलांग लगायी और ट्रक से शेरा की पीठ पर कूद गई ।
इस बार शेरा ने ऐतराज नहीं किया ।
भोला ने देखा सुन्दरी के अगले हाथों में कुछ बाल फंसे हुए थे जो वह दूसरे आदमी के सिर से नोंच लाई थी ।
दोनों आदमी अब एक दूसरे के पास खड़े आग्नेय नेत्रों से बच्चों को घूर रहे थे ।
लेकिन अब बच्चे घर की ओर चल दिए ।
ट्रक वाले फिर अपने काम में जुट गए थे ।
"भोला ।" - रास्ते में राजू बोला - "सुन्दरी चिल्लाई क्यों थी ?"
"पता नहीं ।" - भोला बोला - "लेकिन ट्रक में जरूर कोई डरावनी चीज थी जिसे देखकर सुन्दरी डरी थी । मैंने भी भीतर ट्रक के फर्श पर कोई सफेद चीज हिलती देखी थी ।"
"पता नहीं क्या था ।" - राजू बोला ।
घर पहुंच जाने तक कोई कुछ नहीं बोला ।
घर के दरवाजे पर चौधरी साहब मिल गए ।
"कहां गए थे बच्चो ?" - चौधरी साहब ने प्यार भरे स्वर से पूछा ।
"दादाजी, हमने कुबड़ी बुढ़िया की हवेली देखी ।" - राजू बोला ।
"अच्छा !"
"हां ।"
"तुम्हें डर नहीं लगा ?"
"मुझे तो बिल्कुल डर नहीं लगा लेकिन मिनी को डर लगा था ।"
"चल झूठा ।" - मिनी ने फौरन विरोध किया ।
"थोड़ा थोड़ा ।" - राजू बोला ।
"मुझे तो बिल्कुल भी डर नहीं लगा था ।"
"तुम बहुत बहादुर बच्चे हो ।"

"दादाजी ।" - भोला बोला - "अभी बाजार में हमारा एक ट्रक वाले से झगड़ा हो गया । मेरी सुन्दरी और राजू के शेरा ने उन्हें खूब मजा चखाया ।"

"क्या हुआ था ?"

बच्चों ने सारी बात बताई ।

"बच्चों ।" - चौधरी साहब ने प्यार भरी डांट पिलाई - "झगड़ा नहीं किया करते ।"

"लेकिन दादाजी झगड़ा तो वह कर रहा था ।" - राजू विरोधपूर्ण स्वर से बोला ।

"फिर भी झगड़े को रोकने की कोशिश करनी चाहिए और बखेड़े वाली जगह से दूर हो जाना चाहिए ।"

कोई नहीं बोला ।

"लेकिन जहां मान-सम्मान का सवाल आ जाए वहां पीछे नहीं हटना चाहिए ।"

बच्चों के नेत्र चमक उठे ।

"यही तो हमने किया ।" - राजू उत्साह से बोला ।

"शाबाश, तुम बहुत बहादुर हो ।"

"दादाजी ।" - एकाएक मिनी बोली - "क्या आपने कभी कुबड़ी बुढ़िया की हवेली का घंटा बजते सुना है ?"

"तुमने क्यों पूछा बेटी ?" - चौधरी साहब बोले ।

"वह रखवाला कहता था कि हवेली का घंटा अपने आप बजता है । क्या वह घन्टा अपने आप बज सकता है ?"

"बिटिया रानी ।" - चौधरी साहब गम्भीर स्वर से बोले - "उस घन्टे को आवाज तो मैंने भी सुनी है लेकिन मुझे इस बात पर विश्वास नहीं कि घंटा अपने आप बजता है ।"

"घंटा अपने आप नहीं बज सकता न, दादाजी ।" - राजू ने पूछा ।

"मेरे ख्याल से तो नहीं बज सकता ।" - चौधरी साहब बोले ।

"देखा !" - राजू गर्वपूर्ण स्वर से बोला - "मैं नहीं कहता था कि घन्टा अपने आप नहीं बज सकता । उसे जरूर कोई बजाता है ।"

"लेकिन कौन ?" - भोला बोला ।

"पता नहीं ।" - राजू बोला ।

"अच्छा बच्चो, तुम खेलो ।" - चौधरी साहब बोले - "मैं जाता हूं ।"

"अच्छा दादाजी ।" - राजू और मिनी एक साथ बोले ।

चौधरी साहब वहां से विदा हो गए ।

बच्चे कुछ क्षण चुपचाप खड़े रहे ।

"भोला ।" - राजू बोला - "चलो तुम्हारे बड़े काका से पूछें कि हवेली का गुप्त रास्ता कहां जाकर निकलता है ?"

"चलो ।" - भोला बोला ।

दोनों भोला के घर पहुंचे ।

बड़े काका सोए पड़े थे ।

"फिर पूछेंगे ।" - राजू बोला ।

"ठीक है ।" - मिनी बोली ।

"भोला ।" - एकाएक राजू बोला - "क्या तुम किसी प्रकार रखवाले की जानकारी में आए बिना हवेली में नहीं घुस सकते ?"

"तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो ?" - भोला ने पूछा ।

"मैं उस गुप्त रास्ते के भीतर जाकर देखना चाहता हूं कि क्या वह वाकई आगे से बन्द है । मुझे रखवाले की बात पर विश्वास नहीं ।"

"अगर हम गुप्त रास्ते में घुसते पकड़े गए तो ?"

"तो फिर क्या ? रखवाला हमें बाहर ही तो निकाल देगा । वह हवेली रखवाले की थोड़े ही है ।"

भोला सोचने लगा ।

"मैं तुम्हें दोपहर के बाद बताऊंगा ।" - अन्त में भोला बोला ।

"ठीक है ।" - राजू बोला ।

राजू, मिनी और शेरा वहां से विदा हो गए ।

***

लगभग तीन बजे बच्चे फिर मिले ।

"हवेली के पिछवाड़े में एक नीम का पेड़ है ।" - भोला ने बताया - "उसकी कुछ शाखाएं एकदम हवेली की एक खिड़की को छूती हैं । मैं दोबारा हवेली में गया था और रखवाले की आंख बचाकर उस खिड़की की चिटखनी खोल आया था । उस खिड़की के रास्ते हम भीतर घुस सकते हैं ।"

"ठीक है ।" - राजू उत्साहपूर्ण स्वर से बोला ।

"ठीक है ।" - मिनी भी वैसे स्वर में बोली ।

"मिनी ।" - राजू बोला - "तुम घर में ही रहो ।"

"क्यों?" - मिनी मुंह फुलाकर बोली ।

"यह खतरे का काम है ।"

"तो फिर क्या हुआ ?"

"तुम लड़की हो ।"

"फिर क्या हुआ ?"

"ऐसे कामों में लड़कियां दखल नहीं देती । ऐसे काम सिर्फ लड़के करते हैं । क्यों भोला ?"

भोला ने सहमतिसूचक ढंग से सिर हिलाया ।

"हम तुम्हें साथ नहीं ले जाएंगें ।" - राजू ने दृढ स्वर में कहा ।

"क्या ।" - मिनी आंखें निकाल कर बोली ।

"हां ।"

"अगर तुम मुझे साथ नहीं ले जाओगे तो मैं अभी जीकर दादी को कह दूंगी कि तुम और भोला चोरों की तरह हवेली में घुसने जा रहे हो ।"

"खबरदार ।"

"दादी !" - मिनी उच्च स्वर में बोली - "दादी यह राजू......"

"श-श-श । चुप हो जा ।"

"मुझे यही छोड़ कर जाओगे ?"

"नहीं, तुम्हें हम अपने साथ ले जाएंगे ।"

"फिर ठीक है ।"

उन्होंने दादी को बताया कि वे कुत्ते को घुमाने ले जा रहे हैं और वहां से विदा हो गए । राजू के पास एक छोटी सी टार्च थी जो उसने साथ ले ली ।

वे हवेली के पिछवाड़े में उस स्थान पर पहुंचे जिसका जिक्र भोला ने किया था ।

तीनों ने कुछ क्षण मन्त्रणा की और फिर राजू शेरा से बोला - "शेरा तुम यहीं रहना । कहीं जाना नहीं । समझ गए ?"

शेरा ने यूं गर्दन हिलाई जैसे वह राजू की भाषा सचमुच समझता हो ।

"सुन्दरी कहां रहेगी ?" - राजू ने पूछा ।

भोला के उत्तर देने से पहले सुन्दरी ने खुद ही बता दिया कि वह कहां रहेगी । वह भोला के कन्धे से कूदी और पेड़ पर चढ गई ।

"ठीक है । इसे यहीं पेड़ पर खेलने दो ।" - राजू बोला ।

"ठीक है ।" - भोला बोला ।

तीनों बच्चे पेड़ पर चढ गए । पेड़ की एक मोटी सी शाखा बिल्कुल खिड़की के साथ लग रही थी । सबसे पहले भोला आगे बढ़ा । वह शाखा के सिरे पर पहुंचा । उसने खिड़की को धक्का दिया । खिड़की भीतर की ओर खुल गई । भोला ने राजू और मिनी को संकेत किया और खिड़की से भीतर कूद गया ।

भोला के बाद मिनी खिड़की से भीतर कूदी ।

अन्त में राजू भी भीतर कूद गया ।

अब वे तीनों हवेली में थे और रखवाले को उनकी खबर नहीं थी ।

वे दवे पांव आगे बढ़े ।

एक बात की बच्चों को खबर नहीं लगी । उन तीनों के हवेली में प्रविष्ट होने के थोड़ी देर बाद ही सुन्दरी भी पेड़ की शाखा से उछली और खिड़की के रास्ते हवेली के भीतर कूद गई ।

बच्चे आगे बढते रहे ।

दबे पांव चलते वे उस कमरे में पहुंच गये जिस में से गुप्त रास्ते का मुंह फूटता था ।

किसी ने उन्हें रोका नहीं ।

वे मीनार वाले कमरे में पहुंच गये ।

“मुझे उठाओ ।” - राजू घुड़सवार वाली तस्वीर के समीप पहुंचकर भोला से बोला ।

“क्यों ?” - भोला बोला ।

“मुझे घोड़े की आंख दबानी है । मेरा वहां तक हाथ नही पहुंचता ।”

“अच्छा ।” - भोला बोला । उसने राजू को कंधे पर चढ़ा लिया । राजू ने घोड़े की आंख दबा दी ।

दीवार तत्काल लगभग चार इंच एक ओर सरक गई और तस्वीर के पीछे लगा गोल पहिया उनके सामने आ गया । राजू ने पहिया घुमाना आरम्भ किया ।

दाईं ओर की दीवार अपने स्थान से सरक गई और सुरंग का मुंह उनके सामने आ गया ।

“मिनी ।” - राजू बोला - “तू यहीं कमरे में रह । मैं और भोला सुरंग में जाते हैं ।”

“नहीं ।” - मिनी तीव्र विरोधपूर्ण स्वर में बोली - “मैं भी सुरंग को भीतर से देखूंगी ।”

“तू डर जायेगी ।”

“मैं नहीं डरूंगी ।”

“लेकिन बाहर रखवाली के लिए भी तो कोई होना चाहिए ! जो, अगर रखवाला इधर आ निकले तो हमें चेतावनी दे सके ।”

“रखवाली के लिए तुम ठहर जाओ ।”

“लेकिन....”

“हम तीनों भीतर चलते हैं ।” - भोला बोला ।

राजू ने बड़ी अनिच्छा से भोला की बात मान ली । तीनों सुरंग में प्रविष्ट हो गए ।

दरवाजे की ओट से सुन्दरी बितर-बितर उन्हें सुरंग में प्रविष्ट होते देख रही थी । बच्चों को सुन्दरी की खबर नहीं थी ।

सुरंग में राजू सबसे आगे था, क्योंकि उसके हाथ में टार्च थी । सावधानी से कदम रखते हुए वे सुरंग में आगे बढ़ते रहे ।

थोड़े से फासले के बाद सुरंग एकाएक नीचे को झुकाव खा गई ।

“अब शायद हम जमीन के नीचे चल रहे हैं ।” - राजू बोला ।

“हो सकता है ।” - भोला ने उसकी बात का समर्थन किया ।

मंत्रमुग्ध से बच्चे सुरंग में आगे बढ़ते रहे ।

कुछ क्षण बाद एकाएक राजू रुक गया । उसके पीछे चलते भोला और मिनी भी रुक गये और उसकी अगल-बगल आ खड़े हुए ।

सामने एक ईंटों की दीवार थी । जिस पर राजू की टार्च का प्रकाश पड़ रहा था । उस दीवार से सुरंग का मुंह बन्द हो गया था ।

"दीवार !" - मिनी के मुंह से निकला ।

"रखवाला सच कहता था ।" - राजू बोला - "यह सुरंग वाकई बंद कर दी गई है ।"

बच्चे एकदम बेहद निराश हो गए । उन्हें बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि रखवाले की बात सच निकलेगी । जिस एडवेंचर की कल्पना में वे वहां आये थे, वह समाप्त हो गई थी ।

"वापिस चलो ।" - राजू निराश स्वर से बोला ।

तीनों सुरंग में वापिस घूम पड़े ।

उसी क्षण उनके कानों में एक आवाज पड़ी ।

बच्चे एकदम चिहुंक पड़े । वे जड़ से अपने स्थानों पर खड़े रहे ।

"यह कैसी आवाज थी ?" - राजू तनिक भयभीत स्वर से फुसफुसाया ।

"मुझे तो ऐसा लगा था जैसे कोई खांसा हो ।" - भोला भी वैसे ही स्वर से बोला ।

तीनों स्तब्ध खड़े हो गए ।

किसी के धीरे से खांसने की धीमी आवाज फिर उनके कानों में पड़ी । आवाज से ऐसा लगता था जैसे कोई बहुत ही कमजोर आदमी बड़े कष्ट से खांस रहा हो ।

"कहां से आयी आवाज ?"

कोई फिर खांसा ।

"आवाज इस दीवार के पीछे से आ रही है ।" - राजू एकाएक उत्तेजित स्वर से फुसफुसाया ।

भोला ने सहमतिसूचक ढंग से सिर हिला दिया ।

"यह दीवार भी जरूर अपने स्थान से हटती है ।" - भोला बोला - "बिल्कुल वैसे ही जैसे बाहर की दीवार गुफा के मुंह के आगे से हट जाती है ।"

"लेकिन बाहर की दीवार तो पहिया घुमाने से हटती है । यहां तो कोई पहिया दिखायी नहीं दे रहा ।"

"पहिया नहीं तो कोई और इन्तजाम होगा ।"

राजू ने टार्च का प्रकाश सुरंग की दीवारों पर और छत पर डाला । दीवारें और छत सब एकदम सपाट थीं । कहीं कोई ऐसी चीज नहीं दिखाई दे रही थी जो सामने की ईटों की दीवार से किसी भी ढंग से सम्बंधित हो ।

"अब दीवार को ही चैक करते हैं ।" - राजू बोला और दीवार की ओर बढा ।

उसी क्षण एक और अप्रत्याशित घटना घटी ।

हवेली का मीनार में लगा घन्टा पहले एक दो बार धीरे से टन्न-टन्न बोला और फिर एकाएक जोर-जोर से बजने लगा ।

बच्चों के मुख से चीख सी निकल गयी ।

"हवेली की मीनार का घंटा बज रहा है ।" - राजू आतंकित स्वर से बोला ।

"अपने आप !" - मिनी के मुंह से निकला ।

"मेरे बड़े काका कहते थे ।" - भोला बोला - "कि यह घन्टा पुराने जमाने में अपने आप तब बजता था जब हवेली पर कोई संकट आता था । जैसे हवेली में कोई चोरी से घुस आये ।"

"हम चोरी से घुस आये हैं ?" - मिनी भयभीत स्वर से बोली - "इसीलिए घंटा अपने आप बजने लगा है ।"

"भागो !" - एकाएक राजू बोला ।

तीनों वहां से सरपट भाग निकले ।

वे सुरंग से बाहर निकल आये ।

घंटा अभी भी बज रहा था । सुरंग से बाहर आ जाने की वजह से अब घन्टे की आवाज और ऊंची सुनाई देने लगी थी ।

राजू ने दीवार अपने स्थान पर सरकाने के लिए पहिये की ओर हाथ बढाया ही था कि उसके कानों में भागते कदमों की समीप होती हुई आवाज पड़ी ।

राजू के हाथ पांव फूल गये । वह सकते की हालत में अपने स्थान पर खड़ा रहा ।

मिनी का भी वही हाल था ।

"अलमारी !" - एकाएक भोला बोला ।

कमरे के एक कोने में दीवार से थोड़ी हटाकर एक लकड़ी की विशाल अलमारी रखी हुई थी । तीनों लपककर उस अलमारी के पीछे जा छुपे ।

सुरंग का मुंह खुले का खुला रह गया ।

उसी क्षण कमरे में रखवाले के साथ एक अन्य व्यक्ति ने कदम रखा ।

घन्टा बजने की आवाज बन्द हो गयी । केवल आवाज की प्रतिध्वनि ही वातावरण में गूंजती रही ।

रखवाला और उसके साथ का आदमी लपककर मीनार में पहुंचे ।

"कमाल है ।" - बच्चों के कान में अजनबी की आवाज पड़ी - "घन्टा कैसे बजा ?"

"घंटा जरूर किसी दैवी शक्ति से बजा है ।" - रखवाले की आवाज आयी - "लोग कहते हैं कि जब हवेली में कोई अनाधिकार प्रवेश करता है तो यह घन्टा अपने आप बजने लगता है । तुमने हवेली में अनाधिकार प्रवेश किया है । इसलिये यह घन्टा बज उठा है ।"

"बकवास बन्द करो । घंटा अपने आप नहीं बज सकता ।"

"बज तो रहा था अपने आप ।" - रखवाला बोला ।

"इसे जरूर किसी ने बजाया था ।"

"किस ने ? हम दोनों के सिवाय तो यहां कोई भी नहीं है । और फिर किसी ने घन्टा बजाया तो बजाया कैसे ? घन्टा खींचकर बजाने वाली जंजीर को टूटे तो सदियां गुजर चुकी

हैं ।”

“समझ नहीं आता यह क्या गोरख-धन्धा है ?”

“यह गोरख-धन्धा नहीं, दैवी शक्ति है ।”

“अब बकना बन्द करोगे या नहीं !” - अजनबी का झुंझलाया स्वर सुनाई दिया - “मैं मीनार में ऊपर जाकर देखता हूं । ऊपर जरूर कोई है ।”

“अगर गिर गये तो हड्डी पसली अलग हो जाएगी ।”

“ऐसी की तैसी ।”

कुछ क्षण शान्ति रही ।

थोड़ी देर बाद अजनबी की आवाज फिर सुनायी दी - “ऊपर तो कोई भी नहीं था ।”

“ऊपर कोई हो नहीं सकता था । सारा मीनार तो यहीं से दिखाई देता है । ऊपर कोई छुपने की जगह है ही नहीं ।”

“फिर घन्टा कैसे बजा ?” - अजनबी बड़बड़ाया ।

“घन्टा अपने आप बजा है ।” - रखवाले का स्वर सुनाई दिया ।

“कमाल है !”

मीनार में से उनकी कमरे में प्रविष्ट होने की आवाज आयी । जो चीज उन्हें जाती बार नहीं दिखाई दी वह उन्हें लौटती बार दिखाई दी । जाती बार क्योंकि भागते हुए सीधे मीनार में जा घुसे थे इसलिए दायीं दीवार पर उनकी निगाह नहीं पड़ी थी ।

“अरे !” - रखवाले के मुंह से आश्चर्य भरी सिसकारी निकली - “सुरंग का मुंह कैसे खुल गया ?”

“यह भी तुम्हारी दैवी शक्ति से खुल गया होगा ।” - अजनबी का व्यंग्यपूर्ण स्वर सुनाई दिया ।

“अभी एक घन्टा पहले तो मैं इसे बन्द करके गया था ।”

“अक्ल खराब है तुम्हारी । खुद सुरंग का मुंह बन्द करना भूल गए और अब हैरानी यूं जाहिर कर रहे हो जैसे कोई करिश्मा हो गया हो ।”

“लेकिन...”

“अब बकवास बन्द करो और सुरंग का मुंह बन्द करो ।”

रखवाला पहिया घुमाने लगा ।

राजू ने बड़ी सावधानी से अलमारी के पीछे से सिर निकालकर सामने झांका ।

अजनबी के चेहरे पर उसकी निगाह पड़ी और उसके नेत्र फैल गये ।

वह वही ट्रक वाला था जिससे बाजार में उनका झगड़ा हुआ था ।

रखवाले ने घोड़े की आंख दबाई । तस्वीर अपने स्थान पर आ गयी । वे दोनों कमरे से बाहर निकल गये ।

कुछ क्षण बाद बच्चे अलमारी के पीछे से निकल आए ।

"भोला ।" - राजू बोला - "रखवाले के साथ जो दूसरा आदमी था न वह वही आदमी था जो दिन में बाजार में ट्रक का पहिया बदल रहा था और जिससे हमारा झगड़ा हुआ था ।"

"अच्छा !" - भोला बोला ।

"लेकिन वह यहां क्या कर रहा था ?" -मिनी बोली ।

"भगवान जाने ।" - राजू बोला । उसकी निगाह अपने आप मीनार की ओर उठ गई ।

"घन्टा कैसे बजा ?" - राजू होठों में बुदबुदाया ।

"रखवाला भी कह रहा था कि घन्टा किसी दैवी शक्ति से बजा था ।" - भोला बोला ।

उसी क्षण उनके कानों में सुन्दरी के किलकारने की आवाज पड़ी ।

"यह सुन्दरी की आवाज थी ।" - भोला चौकन्ना होकर बोला - "कहां से आई थी ?"

"मीनार में से ।" - मिनी बोली ।

"सुन्दरी यहां कैसे पहुंच गयी ?" - राजू बोला ।

"क्या पता कसे पहुंच गई ।" - भोला बोला । वह मीनार की ओर बढ़ा ।

तीनों बच्चे मीनार में आ गये ।

भोला ने देखा सुन्दरी मीनार की छत के पास टंगे घन्टे के पीछे से बितर-बितर नीचे झांक रही थी ।

"सुन्दरी !" - भोला डपटकर बोला - "इधर आ ।"

सुन्दरी एकदम गम्भीर हो गई । फिर वह झिझकती हुई झरोखे में से निकली और भोला के समीप आ खड़ी हुई ।

"घंटा तूने बजाया था ?" - भोला फिर डपटकर बोला ।

सुन्दरी ने खीसें निपोरीं ।

"जरूर घंटा तूने बजाया था, लेकिन नालायक यह तुझे क्या सूझी और तू यहां आयी क्यों ?"

सुन्दरी ने यूं मुंह बनाया जैसे हंस रही हो ।

"चल इधर आ ।"

सुन्दरी लपककर भोला के कंधे पर चढ़ गई ।

भोला वापिस घूमा ।

"अब फौरन निकल चलें यहां से ।" - राजू बोला - "इस वक्त मौका अच्छा है ।"

"ठीक है ।" - भोला और मिनी एक साथ बोले ।

तीनों वहां से चल दिए । भोला के कन्धे पर सुन्दरी बैठी थी और उसके बाल खींच रही थी ।

"सुन्दरी की बच्ची ।" - भोला धमकी भरे स्वर से बोला - "आज घर चलकर तेरी खबर लेता हूं ।"

उत्तर में सुंदरी ने खीसें निपोरी और दांत किटकिटाये, लेकिन भोला के बाल खींचने बन्द नहीं किये । शायद वह अपनी उस क्रिया से जाहिर कर रही थी कि वह भोला से भयभीत नहीं थी ।

वे जिस रास्ते से हवेली में प्रविष्ट हुए थे, उसी रास्ते से बाहर निकल आये ।

"मैं कहता हूं ।" - एकाएक राजू बोला - "उस सुरंग का जरूर कोई रहस्य है । अगर सुरंग आगे से बन्द है तो रखवाला और ट्रक वाला भीतर क्या करने गये थे ?"

"और ट्रक वाला रखवाले से किसी आदमी के बारे में पूछ रहा था ।" - मिनी बोली ।

"भीतर जरूर कोई आदमी है ।" - राजू उत्तेजित स्वर से बोला - "उसी की खांसी की आवाज हमने सुनी थी ।"

"लेकिन कहां ?" भोला बोला ।

"उस ईंटों की दीवार के पीछे ।" - राजू बोला - "अब मुझे विश्वास हो गया है कि बाहर की दीवार की तरह वह दीवार भी अपने स्थान से हट जाती है ।"

"लेकिन कैसे ?"

"उसका भी पता लगायेंगे । हम किसी दिन फिर सुरंग में घुसेंगे ।"

"ठीक है ।"

"जिस आदमी के खांसने की हमने आवाज सुनी थी" - मिनी सोचती हुई बोली - "वह सुरंग में क्यों रहता है ?"

"अपनी मर्जी से भला कोई उस सुरंग में क्यों रहेगा ।" - भोला बोला ।

"वहां जरूर कोई आदमी बन्दी बनाकर रखा गया है ।" -राजू बोला - "रखवाले के हाथ में खाने का डिब्बा भी था ।"

"हमें यह बात दादा जी को बतानी चाहिए ।" - मिनी बोली ।

"जैसे दादा जी हमारी बात पर विश्वास कर लेंगे ?" - राजू व्यंग्यपूर्ण स्वर से बोला - "वे हमारी बात मानेंगे नहीं । उल्टे हमारी इस बात पर पिटाई हो जायेगी कि हम यूं चोरों की तरह हवेली में और फिर सुरंग में क्यों घुसे ।"

"हमें खुद पता लगाना चाहिए कि सुरंग के भीतर कौन है ?" - भोला बोला ।

"यह ठीक है ।" - राजू बोला ।

"लेकिन हवेली में चोरों की तरह दुबारा घुसने में खतरा है ।" - मिनी बोली ।

"यह बात भी ठीक है ।" - राजू बोला ।

"तो फिर क्या किया जाये ?" - भोला बोला ।

राजू कुछ क्षण चुप रहा और फिर उत्साहपूर्ण स्वर से बोला - "मेरे दिमाग में एक बात आई है ।"

"क्या ?"

“हम पता लगायें कि उस सुरंग का दूसरा मुंह कहां जाकर खुलता है । फिर हम दूसरी ओर से सुरंग में घुसेंगे । इस प्रकार हमें यह तलाश करने में सिर खपाई नहीं करनी पड़ेगी कि सुरंग के बीच में बनी ईटों की दीवार अपने स्थान से कैसे हटती है ।”

“यह ठीक है ।” - भोला बोला ।

“लेकिन हमें यह कैसे पता लगेगा कि सुरंग का दूसरा मुंह कहां है ?” - मिनी बोली ।

“मेरे बड़े काका को जरूर मालूम होगा ।” - भोला बोला ।

“ठीक है ।” - राजू बोला - “हम कल भोला के बड़े काका से पूछेंगे ।”

“ठीक है ।” - मिनी और भोला ने समर्थन किया ।

हवेली के मुख्य द्वार के समीप से गुजरते समय उन्होंने देखा कि द्वार के समीप वही ट्रक खड़ा था जो उन्होंने दोपहर के समय बाजार में देखा था । उनके देखते देखते ही ट्रक वाले का दूसरा साथी ट्रक में सवार हो गया । वह ट्रक को चलाता हुआ हवेली से दूर ले गया ।

बच्चे घर वापिस लौट आये ।

***

सांझ को हवेली के घन्टे की अपने आप बजने की चिन्ता गांव के घर-घर में हो रही थी । रात के भोजन के समय जब दादी ने स्वयं घंटा बजने के सन्दर्भ में भगवान की लीला का गुणगान करना आरम्भ किया तो मिनी के लिए अपने आप पर काबू रखना कठिन हो गया । कई बार उसने दादी को बताना चाहा कि घन्टा अपने आप नहीं बजा था बन्कि भोला की बन्दरिया सुंदरी ने बजाया था लेकिन राजू को कड़ाई से अपनी ओर घूरते देखकर वह चुप हो जाती थी ।

अगली सुबह राजू और मिनी भोला के पास पहुंचे और फिर वे तीनों मिलकर बड़े काका के गले पड़ गए ।

बड़े काका अपनी पुरानी जगह पर चारपाई बिछाए बैठे थे और हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे ।

भोला ने जबरदस्ती बड़े काका का हुक्का परे सरका दिया और जिद भरे स्वर से बोला - “बड़े काका, बड़े काका हमें हवेली और गुप्त रास्ते के बारे में और बातें बताओ ।”

“और क्या बताऊं बच्चो ?” - बड़े काका स्नेहयुक्त स्वर से बोले ।

“वह गुप्त रास्ता दूसरी ओर कहां जाकर खुलता है ? - राजू ने पूछा ।

“अरे खुलता होगा कहीं ।” - बड़े काका लापरवाही से बोले - “तुम्हें क्या लेना-देना है इससे ?”

“नहीं बड़े काका ।” - भोला बोला - “बताओ न !”

“बड़े काका बताओ न ।” - मिनी ने अनुरोध किया ।

“मुझे नहीं मालूम ।” - बड़े काका बोले ।

“यह हो ही नहीं सकता ।” - भोला बोला ।

"आपको जरूर मालूम होगा ।" - राजू बोला - "आप कुबड़ी बुढ़िया की हवेली की इतनी बातें जानते हैं, यह हो ही नहीं सकता कि आपको मालूम न हो कि उस सुरंग का मुंह कहां जाकर खुलता है ।"

"बड़े काका, बताओ न ।" - मिनी बोली ।

"अरी बिटिया रानी ।" - बड़े काका बोले - "सच्ची मुझे नहीं मालूम ।"

"हम नहीं मानते । आप झूठ बोलते हैं ।"

"अरे बड़े काका को झूठा कहती है ।"

"और क्या ? आप तो हैं ही झूठे ।"

"बिटिया रानी, सच्ची मुझे नहीं मालूम कि सुरंग का मुंह जंगल में कहां जाकर खुलता है ।"

"जंगल में !" - राजू के कान खड़े हो गये ।

"हां । गांव के नहर वाले किनारे के पास जो जंगल है, सुरंग का दूसरा मुंह वहीं जाकर खुलता है लेकिन इतने बड़े जंगल में सुरंग का दूसरा मुंह कहां है, यह मुझे सच्ची नहीं मालूम ।"

"यह आपको पक्का मालूम है कि सुरंग का दूसरा मुंह खुलता जंगल में ही है ।"

"हां मैं बचपन से ही यह बात सुनता आया हूं ।"

"लेकिन आपको यह मालूम नहीं कि सुरंग का मुंह जंगल में कहां खुलता है ?"

"यह नहीं मालूम ।"

"अच्छा ।" - राजू बोला । उसने भोला और मिनी को संकेत किया ।

भोला ने हुक्का दुबारा बड़े काका के सामने कर दिया ।

"लेकिन बच्चो, तुम गुप्त रास्ते के बारे में इतनी बातें क्यों पूछ रहे हो ?" - बड़े काका बोले ।

"यह बात आपकी समझ में नहीं आयेगी बड़े काका ।" - भोला बोला ।

"ठहर जा नालायक ।" - बड़े काका बिगड़कर बोले - "तू बड़े काका से ज्यादा सयाना है ।"

"बड़े काका, आप अपनी अक्ल से काम कहां लेते हैं । आप तो या हुक्का पीते हैं या खर्राटे भरते हैं और कोई काम ही नही आपको । इतने बड़े हो गये हैं आप और आपको यह भी नही मालूम कि सुरंग का रास्ता कहां खुलता है ।"

यह कहकर भोला वहां से भाग खड़ा हुआ । उसकी बन्दरिया उसके पीछे भागी ।

"बहुत बेईमान हो ।" - काका बोले । उनका चेहरा वात्सल्य से चमक रहा था ।

राजू और मिनी भी बड़े काका को प्रणाम करके भोला के पीछे हो लिये । शेरा दुम हिलाता हुआ उनके साथ साथ चल रहा था ।

सब जंगल में पहुंचे ।

"इतने बड़े जंगल में आकर क्या पता लगे कि सुरंग का मुंह कहां खुलता है ?" - राजू असंतोषपूर्ण स्वर में बोला ।

"जंगल में एक इमारत के खंडहर हैं ।" - भोला बोला - "जो हवेली जितने ही पुराने हैं । हो सकता है सुरंग का मुंह उसमें खुलता हो ।"

"हो सकता है ।" - मिनी उत्साहपूर्ण स्वर से बोली - "मैंने किताब में पढ़ा था । किताबों में ऐसे गुप्त रास्तों के मुंह ऐसी ही जगह पर खुलते हैं ।"

"वहीं चलो ।" - राजू बोला ।

सब पुरानी इमारत के खंडहर के पास पहुंच गये । इमारत एकदम उजाड़ थी और सूरत से ही बहुत जर्जर मालूम हो रही थी ।

"कैसी डरावनी जगह है !" - मिनी झुरझुरी लेकर बोली ।

"यहां कोई रहता है ?" - राजू बोला ।

"नहीं ।" - भोला बोला - "यहां कौन रहेगा ।"

"आओ, भीतर से देखते हैं ।" - राजू बोला ।

बच्चे सावधानी से खंडहर में प्रविष्ट हो गए ।

अगले एक घन्टे तक उन्होंने उस खंडहर की खूब खाक छानी । उन्होंने एक एक दीवार, एक एक फर्श खटखटाकर देखा । कहीं उन्हें गुप्त रास्ते का आभास नहीं मिला ।

अंत में उन्होंने हार मान ली । एक घंटे की भयानक तलाश के बाद वे यह फैसला भी नहीं कर सके थे कि सुरंग का मुंह यहां था ही नहीं या उन्हें मिल ही नहीं रहा था ।

चेहरे पर निराशा के भाव लिये वे खंडहर के पिछवाड़े में आ गए ।

"अब ?" - राजू बोला ।

"अब जाकर बड़े काका के गले पड़ते हैं ।" - भोला बोला - "शायद उनको कुछ याद आ जाए ।"

"या शायद वे जानबूझकर छुपा रहे हों और हमें बताने के लिए तैयार हो जाएं ।" - मिनी बोली ।

"वह क्या है ?" - राजू एकाएक सामने एक स्थान की ओर संकेत करता हुआ बोला ।

"कुआं है ।" - भोला बोला ।

"यह इतना चौड़ा कुआं है ।" - राजू हैरानी से बोला ।

"और नहीं तो क्या ?"

राजू कुएं के समीप पहुंचा । कुएं के चारों ओर गोलाकार पक्की मुंडेर थी और उसका व्यास कम से कम पच्चीस फुट था ।

"इतना चौड़ा कुआं यहीं क्यों बनाया गया ?" - राजू बोला ।

"क्या मालूम ?" - भोला बोला - "वैसे यह कुआं भी इस खंडहर जितना पुराना है ।"

राजू ने कुएं के भीतर झांका । भीतर उसे गहरे काले अन्धेरे के सिवाय कुछ दिखाई न दिया ।

"यह कुआं तो बेहद गहरा मालूम होता है ।" - राजू बोला ।

किसी ने उत्तर नहीं दिया ।

राजू ने जमीन से एक पत्थर उठाया और उसे कुएं में उछाल दिया । कितनी ही देर बाद पत्थर के पानी से टकराने की आवाज उनके कानों पड़ी ।

"बहुत गहरा कुआं है ।" - राजू बोला - "देखा पानी में पत्थर गिरने की आवाज कितनी देर बाद हम तक पहुंची है...? आखिर इतना चौड़ा कुआं यहां बनाने का मतलब क्या है ?"

"होगा कोई मतलब ।" - मिनी बोली - "अब चलो यहां से ।"

"ठहरो ।" - एकाएक राजू कुएं में झांकता हुआ बोला - "यह क्या है ?"

भोला और मिनी भी कुएं में झांकने लगे ।

कुएं के भीतर एक कतार में एक दूसरे के ऊपर लगभग एक एक फुट के फासले पर लोहे की अर्धवृत्ताकार छड़ें लगी हुई थीं - बिल्कुल उसी प्रकार जैसे वे हवेली की मीनार में लगी हुई थी ।

"जैसे ऐसी छड़ें मीनार में चढने के काम आती हैं ।" - भोला बोला - "वैसे ही ये कुएं में उतरने के काम आती हैं ।"

"लेकिन किसी को कुएं में उतरने की क्या जरुरत है ?" - मिनी बोली ।

"शायद इसकी जरुरत कुएं के अन्दर से बाहर आने के लिये हो ।" - राजू धीरे से बोला ।

"क्या मतलब ?" - भोला चौंका ।

"भोला ! मिनी !" - राजू निश्चयपूर्ण स्वर से बोला - "जरूर सुरंग का दूसरा मुंह इस कुएं के भीतर कहीं खुलता है ।"

"हो सकता है ।" - भोला सहमतिसूचक ढंग से सिर हिलाता हुआ बोला ।

मिनी चुप रही ।

राजू कुछ क्षण कुएं में झांकता रहा और फिर दृढ स्वर से बोला - "पता लगाते हैं ।"

"कैसे ?" - भोला बोला ।

"कुएं में उतर कर ।" - राजू बोला ।

"तुम कुएं में उतरोगे ?" - मिनी आशंकित स्वर से बोली ।

"हां ।" - राजू ने कहा और निकट ही पड़ी रस्सी कमर में बांधी और उसका दूसरा सिरा पास के ही एक पेड़ पर बांधा ।

"अगर गिर गए तो ?"

"कैसे गिर जाऊंगा ? रस्सी जो बंधी है कमर में । पहले तो छड़ों की सहायता से उतरने में कोई दिक्कत नहीं होगी लेकिन अगर छड़ों का सहारा धोखा दे गया तो भी यह रस्सी मुझे

संभाल लेगी ।"

"लेकिन कुएं में उतरने की जरूरत क्या है ?"

"वाह ! अभी तो हर कोई सुरंग का दूसरा मुंह तलाश करने के लिये बेचैन हो रहा था । अब मौका हाथ आया है तो घबराहट होने लगी ।"

"लेकिन यह खतरे का काम है ।"

"क्या मैं खतरे से डरता हूं ?" - राजू छाती फुला कर बोला ।

"लेकिन.."

"अच्छा, अब तुम भोला के पास चुपचाप खड़ी हो जाओ और बिल्कुल घबराओ मत । मुझे कुछ नहीं होगा । मैं अभी गया और अभी आया ।"

राजू मिनी को दोबारा बोलने का अवसर दिए बिना कुएं की मुंडेर पर चढ़ गया । उसने कुएं के भीतर पांव लटकाए और मुंह कुएं की दीवार की ओर करके पहली छड़ पर पांव रख दिया । उसने अपना दूसरा पांव नीचे लटकाया । दूसरा पांव एक अन्य छड़ से छू गया । उस छड़ पर अपने शरीर का सारा जोर डाल कर उसने उसकी मजबूती को परखा और फिर उस पर अपने दोनों पांव टिका दिए ।

व्यग्रता की प्रतिमूर्ति बने भोला और मिनी कुएं की मुंडेर पर बैठे थे और राजू को कुएं में उतरते देख रहे थे ।

राजू मजबूती से छडों पर पांव जमाता हुआ सावधानी से कुएं में उतरता रहा ।

थोड़ी देर बाद भोला और मिनी को कुएं में राजू दिखाई देना बन्द हो गया ।

मिनी का चेहरा भय से पीला पड़ गया ।

"राजू ।" - उसने कुएं में आवाज लगाई ।

"हां ।"

"तुम ठीक हो?"

"बिल्कुल ।"

"तुम मुझे दिखाई नहीं दे रहे हो !"

"नीचे अंधेरा है ।"

"तुम्हें हम दिखाई दे रहे हैं ?"

"हां ।"

"तुम्हें नीचे कुएं का पानी दिखाई दे रहा है ?"

"हां अब दिखाई देने लगा है ।"

"तुम्हारे पास टार्च भी तो है । उसे जलाते क्यों नहीं ?"

"अभी मेरे हाथ खाली नहीं हैं ।"

"तुम्हें डर लग रहा है ?"

"नहीं ।" - वास्तव में राजू को थोड़ा थोड़ा डर लग रहा था ।

"मुझे बहुत डर लग रहा है ।"

"तुम बिल्कुल मत डरो । मैं एकदम सुरक्षित हूं । मैं अभी वापिस आ जाऊंगा ।"

"राजू ।" - भोला व्यग्र स्वर से बोला - "तुम्हें सुरंग का मुंह दिखाई दिया है ?"

"अभी नहीं । अभी मैं और नीचे उतर रहा हूं ।"

कुछ क्षण शान्ति रही । फिर राजू की उत्तेजित आवाज आई - "यहां दीवार में एक बहुत बड़ा छेद है । मैं भीतर जा रहा हूं ।" - राजू ने भोला और मिनी से कहा ।

"राजू ।" - मिनी भयभीत स्वर से चिल्लाई - "भीतर मत जाना ।"

"घबराओ नहीं । मैं अभी लौट आऊंगा ।"

राजू ने छेद में कदम रख दिया । उसने अपनी जेब से टार्च निकालकर उसका प्रकाश छेद के भीतर की ओर डाला । यह एक लम्बी अंधेरी सुरंग थी । राजू ने टार्च का प्रकाश नीचे कुएं के तल की ओर डाला । । लगभग दस फुट नीचे कुएं का पानी दिखाई दे रहा था । राजू के शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई । उसने अपनी कमर से रस्सी खोली और उसे छेद के समीप की छड़ के साथ बांध दिया ।

उसने ऊपर की ओर झांका ।

ऊपर उसे स्वच्छ नीला आकाश और मिनी और भोला कुएं में झांकते दिखाई दिये ।

टार्च के प्रकाश में राजू सुरंग में आगे बढ़ा ।

सुरंग का रास्ता बहुत गन्दा था और सीलन की बदबू से भरा हुआ था ।

मन ही मन बजरंग बली को याद करता हुआ राजू आगे बढ़ता गया ।

एक स्थान पर राजू ठिठक गया ।

आगे सुरंग की छत का एक भाग बैठ गया था और ढेर सारा मलबा सुरंग के फर्श पर इकठ्ठा हो गया था ।

राजू हिचकिचाया । वह सोच रहा था कि वह आगे बढ़े या नहीं । कहीं ऐसा न हो कि वह आगे कदम रखे और छत बैठ जाए और वह कहीं मलबे में दब जाए ।

उसने दो तीन बार जोर जोर से पांव फर्श पर पटका ।

छत से केवल जरा सी धूल नीचे गिरी और बस ।

राजू ने आगे बढ़ने का फैसला कर लिया ।

मलबे का ढेर लांघकर वह सुरंग में आगे बढ़ा ।

थोड़ी दूर आगे उसे पहले से बड़ा मलबे का ढेर सुरंग में इकठ्ठा हुआ मिला । मलबे का ढेर इतना बड़ा और ऊंचा था कि उसमें और छत में केवल इतना फासला रह गया था कि उससे अन्दर झांका जा सके । उतनी थोड़ी जगह से उस ढेर को पार करना बहुत कठिन था ।

उसी क्षण राजू के कानों में किसी की कराह और फिर खांसने की आवाज पड़ी । राजू वह आवाज फौरन पहचान गया । वह वही आवाज थी जो उन्होंने कल तब सुनी थी जब वे

सुरंग के हवेली वाले रास्ते के भीतर घुसे थे ।

राजू निशब्द मलबे के ढेर पर चढ़ गया । ऊपर से उसने सावधानी से दूसरी ओर झांका ।

दूसरी ओर सुरंग के फर्श पर एक जलती हुई लालटेन पड़ी थी । उसके प्रकाश में राजू को सुरंग के सीलन भरे कुर्सी पर कम्बल में लिपटा एक आदमी दिखाई दिया । उसकी शेव बढ़ी हुई थी, बाल बिखरे हुए थे और वह बेहद बीमार दिखाई दे रहा था । वह धीरे धीरे कराह रहा था और खांस रहा था ।

राजू को समझते देर नहीं लगी कि वह वही कैदी था जिसके लिये कल शाम को उन्होंने रखवाले को खाना लाते देखा था ।

राजू कुछ क्षण हिचकिचाया और फिर धीरे से बोला - "ए भाई साहब !"

वह आदमी एकदम उठ कर बैठ गया । उसकी बेचैन आंखें दाएं बाएं फिरने लगी ।

"कौन है ?" - वह आतंकित स्वर से बोला ।

"आप कौन हैं ?" - राजू बोला ।

"कौन बोल रहा है ?" - वह आदमी खांसता हुआ बोला ।

"मैं यहां हूं ।" -राजू बोला । उसने टार्च का प्रकाश उस आदमी पर डाला और फिर टार्च बंद कर दी ।

उस आदमी ने ऊपर सिर उठाया । लालटेन की पीली मध्यम रोशनी में उसें मलबे के ढेर के ऊपर से झांकती हुई राजू की सूरत दिखाई दी ।

"कौन हो तुम ?" - वह आदमी बेचैनी से बोला - "और यहां कैसे पहुंचे ?"

"पहले आप बताइए ।" - राजू बोला - "आप कौन हैं और यहां क्या कर रहे हैं ?"

"मैं पुलिस के खुफिया विभाग का इन्सपैक्टर दुष्यंत हूं । मैं स्मगलरों के एक गैंग के पीछे लगा हुआ था । मैं उनके कई अड्डों को जान गया था । लेकिन अब दुर्भाग्यवश उनके हाथ में पड़ गया हूं । उन्होंने मुझे गिरफ्तार करके यहां रखा हुआ है ।"

"क्यों ?"

"बदमाश यह जानना चाहते हैं कि मैं उनके बारे में क्या कुछ जानता हूं और उनसे सम्बंधित क्या क्या रिपोर्ट मैंने अपने विभाग को दे दी हैं । जब उन्हें अपने मतलब की बातें मालूम हो जायेंगी तो वे मेरी हत्या कर दंगे । इसलिए में उनके जुल्म सहन करता रहा हूं लेकिन अपनी जुबान नहीं खोल रहा हूं ।"

"आप मलबे के इस पार आ जाइये । सुरंग का इधर का रास्ता खुला है । आप बड़ी आसानी से बदमाशों की कैद से भाग सकते हैं ।"

"नहीं भाग सकता, बेटे । मेरे में इतनी भी हिम्मत नहीं है कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो सकूं, चलना तो दूर की बात है । उन बदमाशों ने मुझे मार मारकर अधमरा कर दिया है ।"

"तो फिर ?"

"जैसा मैं कहता हूं वैसा करो, बेटा ।"

"फरमाइये ।"

"तुम इस गांव की पुलिस चौकी पर चले जाओ और जाकर यहां के थानेदार को मेरे बारे में बता दो । उसे कहना कि पुलिस के खुफिया विभाग का इंस्पैक्टर यहां बदमाशों की कैद में है । आज रात को ग्यारह बजे यहां बदमाशों का सरदार आने वाला है । तुम थानेदार को कहना कि वह रात को ग्यारह बजे के करीब सिपाहियों को लेकर यहां आये और सबको घेर ले ।"

"तब तक आपका क्या होगा ?"

"मेरा कुछ नहीं होगा । मैं आज रात और कष्ट सहन कर लूंगा । थानेदार अगर तुम्हारे उसके पास पहुंचने के फौरन बाद ही यहां आ गया तो मैं तो मुक्त हो जाऊंगा और गैंग के दो तीन आदमी भी गिरफ्तार हो जायेगे लेकिन सरदार नहीं पकड़ा जायेगा जबकि सरदार का पकड़ा जाना सबसे जरुरी है । आज सरदार खुद आकर मुझे अपनी जुबान खोलने पर मजबूर करने वाला है । अगर तब भी मैंने जबान नहीं खोली तो आज रात को मेरी हत्या कर दी जाएगी ।"

"आप भयभीत नहीं हैं ?"

"मौत से कौन भयभीत नहीं होता, लेकिन भय में भी मैं अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं हो सकता ।"

इन्सपैक्टर फिर जोर जोर से खांसने लगा ।

राजू ने देखा गुफा के दूसरे सिरे पर वह ईंटों की दीवार दिखाई दे रही थी जो उन्होंने दूसरी ओर से देखी थी ।

"यह दीवार अपने स्थान से कैसे हटती है ?" - राजू ने पूछा ।

"क्या मतलब ?"

"मेरा मतलब है हवेली की ओर से आपके पास तो कोई तभी पहुंचेगा जब यह दीवार रास्ते से हटेगी ।"

"ओह ! यह दीवार अपने स्थान ने नहीं हटती इसकी ईंटें निकल आती हैं । ईंटें मसाले से एक दूसरे से जुड़ी हुई नहीं हैं ।"

"अच्छा !" - राजू नेत्र फैलाकर बोला ।

इन्स्पेक्टर लम्बी सांसें लेता रहा ।

"आप यहां इस सुरंग में कैसे पहुंचे ?" - राजू ने पूछा ।

"बदमाश मेरे हाथ-पांव और मुंह बांध कर मुझे ट्रक में लादकर यहां लाये थे । यह हवेली बदमाशों का हैडक्वार्टर है । किसी को ख्याल में भी नहीं सूझ सकता कि यह स्थान स्मगलरों का अड्डा हो सकता है ।"

एकाएक राजू को बदमाशों के उस ट्रक की याद आयी जो कल गांव के बाजार में पंचर हो गया था ।

"आप कल दोपहर से पहले यहां लाये गये थे ?" - उसने पूछा ।

"हां ।"

"क्या आपकी आंखों पर भी पट्टी बंधी हुई थी ?"

"नहीं ।"

"जब आप ट्रक में थे तब वहां कोई बंदरिया घुसी थी ?"

"हां । तुम्हें कैसे मालूम ? वह बन्दरिया मुझे वहां पड़े देखकर बेहद डर गई थी ।"

ओह ! तो सुन्दरी ट्रक में पड़े इन्सपेक्टर दुष्यंत से डरी थी और भोला को भी शायद ट्रक के भीतरी भाग के अंधेरे में इन्सपैक्टर के शरीर का कोई अंग हिलता दिखाई दिया था ।

"क्या हवेली का रखवाला भी बदमाशों का साथी है ?" - राजू ने पूछा ।

"सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं बेटा ।"

राजू कुछ क्षण चुप रहा फिर बोला - "ठीक है भाई साहब । मैं जाता हूं । आपने जैसा कहा है, मैं वैसा ही करूंगा ।"

"शाबाश ।"

राजू ने रस्सी अपनी कमर से बांध ली और छड़ों के सहारे कुएं में ऊपर की ओर चढने लगा ।

कुछ ही क्षणों में वह कुएं की मुंडेर पर था ।

मिनी और भोला के चेहरों पर हर्ष की लहर दौड़ गई ।

शेरा, जो सहमा सा मिनी के पास खड़ा था, राजू को देखते ही जोर जोर से भौंकने लगा और दुम हिलाने लगा ।

सुन्दरी खुशी से किलकारियां मारने लगी ।

राजू ने कमर से बंधी रस्सी खोल दी और मुंडेर से नीचे कूद गया ।

भोला और मिनी ने उसे घेर लिया ।

"क्या देखा ?" - भोला बोला ।

"वहां क्या था ?" - मिनी ने पूछा ।

राजू ने विस्तार से सारी घटना कह सुनाई ।

"हमें फौरन पुलिस स्टेशन जाना चाहिए ।" - सारी बात सुन चुकने के बाद मिनी उत्तेजित स्वर से बोली ।

"और यह भी हो सकता है कि वह हमारी बात पर विश्वास ही न करें ।" - राजू ने सन्देह व्यक्त किया ।

"तो फिर क्या किया जाए ?" - मिनी ने विचलित स्वर में प्रश्न किया ।

“मेरी बात मानो तो हमें रात को हवेली में जाकर कहीं छुप जाना चाहिए ।” - भोला बोला - “हमें सरदार की प्रतीक्षा करनी चाहिए । हमें तब थाने में जाकर सारी बात बतानी चाहिए जब सरदार अपने साथियों के साथ सुरंग में हो ।”

“यह ठीक है ।” - राजू ने सहमति प्रकट की ।

“लेकिन हवेली में हम छुपेंगे कहां ?” - मिनी बोली ।

“वहां छुपने की छुपने की बहुत जगह है । मैं बताऊंगा तुम्हें ।” - भोला बोला ।

“लेकिन एक बात हममें से कोई नहीं सोच रहा ।” - एकाएक राजू बोला - “हम रात को घर से बाहर कैसे निकलेंगे ।”

“मेरी तो कोई समस्या नहीं है ।” - भोला बोला - “मैं तो पीपल के पेड़ के नीचे सोता हूं । मैं तो चुपचाप उठकर चला आऊंगा । आप लोग अपने बारे में सोचिये ।”

“अभी बहुत वक्त है ।” - मिनी शान से बोली - “हम भी कोई तरकीब सोच ही लेंगे । क्यों राजू ?”

“हां ।” - राजू अनिश्चित स्वर से बोला ।

बच्चे वापिस लौट पड़े ।

***

शाम को आसमान पर बादल छाने लगे । अंधेरा होने तक बूंदा बांदी होने लगी । रात पड़ने पर बारिश होने लगी ।

राजू और मिनी बेहद चिंतित हो उठे । क्या ऐसे मौसम में वे दादा दादी की नजर बचाकर हवेली की ओर जा सकेंगे !

लेकिन जब वक्त आया तो उन्हें मालूम हुआ कि बारिश की ही वजह से उनका घर से चुपचाप निकल जाना आसान तो गया था ।

दादा दादी ने उन्हें एक कमरे में सुला दिया और खुद उस कमरे के बाहर बरामदे में चारपाई डालकर पड़ गये ।

लगभग साढ़े नौ बजे राजू ने चुपचाप कमरे के पिछवाड़े में खुलने वाली खिड़की खोली ।

बारिश थम चुकी थी ।

राजू और मिनी चुपचाप खिड़की के रास्ते बाहर निकल गये ।

उनके आंगन पार करते ही एक पेड़ के पीछे से भूत की तरह भोला निकला और उनके साथ हो लिया ।

तीनों चुपचाप चलते हुए कुबड़ी बुढिया की हवेली के समीप पहुंच गये । वे उसी खिड़की के रास्ते हवेली में घुस गए जिसके रास्ते वे पिछले दिन हवेली में घुसे थे । वे दबे पांव सुनसान अंधेरे गलियारे में आगे बढे ।

उसी क्षण दस का घन्टा बजा ।

वे एक घंटा पहले वहां पहुंच गये थे । इन्स्पेक्टर दुष्यंत के अनुसार बदमाशों का सरदार वहां ग्यारह बजे आने वाला था ।

"यह कमरा" - भोला एक कमरे के समीप ठिठकता हुआ फुसफुसाया - "सुरंग वाले कमरे के एकदम सामने है । हम इसी में छुप जाते हैं ।"

"ठीक है ।" - राजू बोला ।

भोला ने कमरे के दरवाजे को धक्का दिया और भीतर प्रविष्ट हो गया । राजू और मिनी उसके पीछे थे ।

फिर बच्चे एकदम जैसे पाषाण की प्रतिमा बन गये । वे हक्के बक्के से कमरे के भीतर देखते रहे ।

भीतर मेज पर एक लालटेन जल रही थी और उसके इर्द-गिर्द चार आदमी बैठे थे । उनमें से एक रखवाला था, दो वही ट्रक वाले थे जिन्हें वे बाजार में पहिया बदलते देख चुके थे और चौथा एक बड़ी बड़ी मूंछों वाला भारी भरकम सूरत से ही क्रूर लगने वाला आदमी था ।

बदमाशों का सरदार शायद समय से पहले ही आ गया था ।

एकाएक बच्चे उलटे पांव घूमे और सरपट वहां से भागे ।

लेकिन तब तक बदमाशों की निगाह भी उन पर पड़ चुकी थी । सब के चेहरे आश्चर्य से खुले के खुले रह गये ।

"अबे, रुक जाओ ।" - मूंछों वाला एकदम चिल्ला कर बोला - "रुक जाओ । कौन हो तुम ? वापिस आओ यहीं ।"

लेकिन कौन रुकता था ! कौन सुनता था । कौन वापिस आता था । बच्चे वहां से गोली की तरह जिधर सींग समाया भाग निकले ।

बदमाश उनके पीछे भागे ।

भोला सुरूंग वाले कमरे की बगल वाले कमरे में घुस गया । राजू और मिनी सुरंग वाले कमरे में घुस गए ।

राजू सरपट भागता हुआ मीनार में पहुंच गया ।

मिनी ने उस कमरे में एक बड़ा सा सन्दूक पड़ा हुआ देखा । उसने उस सन्दूक का ढकना उठाया और उसके भीतर घुस गई । लेकिन संदूक बन्द करते समय ढक्कन उसके हाथ से निकल गया और ढ़क्कन भड़ाक की आवाज करता हुआ सन्दूक पर आकर गिरा ।

बदमाशों के कानों में वह आवाज पड़े बिना न रह सकी । वे सीधे उसी कमरे में घुस आए ।

बगल के कमरे में छुपे भोला की ओर किसी का ध्यान नहीं था ।

"वे बच्चे इस कमरे में घुसे हैं ।" - मूछों वाला बोला ।

अपने आप को व्यवस्थित करने के उपक्रम में संदूक में घुसी मिनी का सिर भड़ाक से सन्दूक की साइड से जा टकराया ।

“कोई सन्दूक में हैं ।” - रखवाला बोला ।

मूछों वाले ने आगे बढ़कर सन्दूक का ढक्कन उठाया । उसने मिनी को भीतर देखा और फिर फुर्ती से ढक्कन नीचे गिरा दिया । उसने संदूक का कुंडा बाहर से बन्द कर दिया और बोला - “दूसरे को ढूंढो ।”

“दूसरा भी इसी कमरे में घुसा था ।” - रखवाला बोला ।

सौभाग्यवश उन्होंने केवल दो ही बच्चों की झलक देखी थी । उन्हें यह मालूम नहीं हो सका कि वास्तव में वे तीन थे ।

“मीनार में देखो ।” - मूछों वाले ने आदेश दिया ।

रखवाला और ट्रक वाला मीनार की ओर बढ़े ।

मूछों वाले का आदेश मीनार में घुसे राजू के कानों में भी पड़ा । वह व्याकुल हो उठा । वहां से भाग निकलना असम्भव था । लेकिन वह इतनी आसानी से बदमाशों के हाथ नहीं आना चाहता था कि वे दरवाजा खोलें और वह सामने खड़ा हो ।

वह तेजी से मीनार की दीवार में लगी अर्धवृत्ताकार छड़ों की सहायता से ऊपर चढने लगा ।

उसी क्षण दरवाजा खुला और रखवाले और ट्रक वाले ने भीतर कदम रखा । ट्रक वाले के हाथ में एक जलती हुई टार्च थी ।

उसने एक बार टार्च का प्रकाश मीनार में चारों और फिराया और फिर उसका रुख ऊपर की ओर कर दिया ।

उसे तेजी से मीनार को ऊंचाई की ओर चढता हुआ राजू दिखाई दिया ।

“ए लड़के ।” - वह धमकी भरे स्वर से चिल्लाया - “वापिस आ ।”

राजू और ज्यादा तेजी से ऊपर चढ़ने लगा ।

“वापिस आ नहीं तो ऊपर आकर वहीं से नीचे फेंक दूंगा ।” - ट्रक वाला गरजा ।

राजू ने वापिस आने का कोई उपक्रम नहीं किया ।

ट्रक वाले ने टार्च रखवाले के हाथ में दी और राजू के पीछे ऊपर चढ़ने लगा ।

मूछों वाला और ट्रक वाले का दूसरा साथी भी मीनार में आ गए ।

राजू तब तक घन्टे के पास पहुंच चुका था ।

ट्रक वाला तेजी से उसके समीप पहुंच रहा था ।

राजू ने घन्टे को एक ओर धकेला और घन्टे और दीवार के बीच बन गई थोड़ी सी जगह में फंस कर ऊपर उचक गया - बिल्कुल वैसे ही जैसे पिछले दिन सुन्दरी को पकड़ने के चक्कर में भोला ने किया था ।

राजू घंटे के ऊपर बने छोटे से लकड़ी के प्लेटफार्म पर पहुंच गया ।

तभी रखवाला भी घन्टे के पास पहुंच गया ।

टार्च के प्रकाश में उसने राजू को घन्टे के समीप सरककर ऊपर प्लेटफार्म पर जाते देखा था लेकिन उसने अनुभव किया कि खुद उसका प्लेटफार्म पर जाना असम्भव था । घन्टे और दीवार के बीच में बने थोड़े से रास्ते में से एक बच्चा तो गुजर सकता था लेकिन आदमी वहां से नहीं गुजर सकता था ।

ट्रक वाले को राजू तितर बितर अपनी ओर झांकता हुआ दिखाई दे रहा था लेकिन वह उस तक पहुंच नहीं सकता था ।

"ए ।" - ट्रक वाला डपटकर बोला - "बाहर निकल ।"

तब तक राजू भी समझ चुका था कि ट्रक वाला उस तक नहीं पहुंच सकता था ।

"नहीं निकलता ।" - राजू बोला ।

"बाहर निकल मैं तुझे कुछ नहीं कहूंगा ।" - ट्रक वाला प्यार से बोला ।

"ऐसा पागल नहीं हूं मैं । मैं बाहर निकला तो तुम मुझे यही से नीचे फेंक दोगे ।"

"नहीं फेकूंगा ।"

"ठीक है । जो मुझे कहना है यहीं कह लो । तुम्हारी आवाज मुझ तक पहुंच रही है । बाहर क्यों बुला रहे हो मुझे ?"

ट्रक वाला उसे गालियां देने लगा ।

"तू बाहर नहीं निकलेगा ?" - ट्रक वाला धमकी भरे स्वर से बोला ।

"नहीं निकलूंगा ।"

"अच्छी बात है बेटा ।" - ट्रक वाला असहाय स्वर से बोला - "देखता हूं कब तक भूखे प्यासे यही टंगे रहोगे ।"

और वह नीचे उतरने लगा ।

राजू उसे नीचे उतरता देखता रहा ।

ट्रक वाला नीचे पहुंच गया ।

"दरवाजे के अलावा इस मीनार से बाहर निकलने का कोई और रास्ता है ?" - मूछों वाले ने पूछा ।

"जी नहीं ।" - रखवाला बोला ।

"ठीक है । इस दरवाजे को बाहर से ताला बन्द कर दो और इन्सपेक्टर के पास चलो । इस वक्त दोनों बच्चे हमारे अधिकार में हैं । हम इनकी बाद में खबर लेंगे ।"

उन्हें नहीं मालूम था कि एक तीसरा बच्चा भी था जो बगल के कमरे में छुपा हुआ था ।

राजू के देखते देखते वे लोग बाहर निकल गए । मीनार का दरवाजा बाहर से बंद हो गया ।

राजू का दिमाग उस मुसीबत से निकलने का कोई तरीका सोचने लेगा । वह जानना था कि वह जब तक उस प्लेटफार्म पर था सुरक्षित था । वहां से निकलते ही वह पकड़ा जा सकता था और अब तो मीनार का दरवाजा भी बन्द था ।

फिर एकाएक राजू को सूझ गया कि इस मुसीबत से कैसे निकला जा सकता था । अगर वह जोर जोर से घंटा बजाना आरम्भ कर दे और बजाता ही रहे तो यह देखने के लिये कि घंटा कैसे बज रहा है, सारा गांव वहां इकट्ठा हो जाएगा ।

और शायद सुरंग के भीतर गए आदमियों को घन्टे की आवाज न सुनाई दे ।

वह उत्तेजित हो उठा । वह प्लेटफार्म से हटा और उस बल्ली पर लेट गया जिसके सहारे घंटा टंगा हुआ था । उसने । पूरी शक्ति से घंटे को झुलाना आरम्भ कर दिया ।

शीघ्र ही घन्टा बजने लगा ।

टन्न....टन्न...टन्न...टन्न... ।

घन्टा बजना आरम्भ होने से केवल कुछ क्षण पहले भोला अपने छुपने के स्थान से निकलकर बाहर आ गया था । उसने देखा वातावरण में सन्नाटा छाया हुआ था । उसने दरवाजे की ओर से सुरंग वाले कमरे में झांका ।

कमरा खाली था लेकिन सुरंग का मुंह खुला हुआ था । वह समझ गया कि बदमाश सुरंग के भीतर गए हैं । वह जल्दी से कमरे में आ गया और उसने तस्वीर के पीछे का पहिया घुमाना आरम्भ कर दिया ।

दीवार सुरंग के मुंह पर आ गई ।

उसी क्षण जोरों से घन्टा बजने लगा और बजता ही गया ।

सुरंग का मुंह बन्द हो जाने की वजह से बदमाशों के कान तक घंटे की आवाज नहीं पहुंची लेकिन सारा गांव जाग गया ।

कुत्ते भौंकने लगे ।

गाय भैंसे रंभाने लगी ।

बच्चे भयभीत हो गए ।

लोग बिस्तरों में से निकल निकलकर गलियों में इकट्ठे होने लगे ।

रात की निस्तब्धता को भेदता हुआ घन्टा जोरों से बजता रहा ।

टन्न.. .टन्न.. .टन्न.. टन्न.. ..।

राजू शान्ति से घन्टा झुलाता रहा ।

घन्टे की आवाज पुलिस चौकी तक भी पहुंची ।

थानेदार चौंका । सिपाही चौंके लेकिन जब घन्टे ने बजना बन्द होने का नाम ही नहीं लिया तो थानेदार भी अपने सिपाहियों को साथ लेकर हवेली की ओर भागा ।

हवेली के बाहर सारा गांव इकठ्ठा हो गया ।

"घन्टा कैसे बज रहा है ?" - कोई बोला - "जरूर मीनार में कोई है ।"

"मीनार में कोई नहीं है ।" - कोई और बोला - "घन्टा अपने आप बज रहा है । घन्टा सदियों से अपने आप बजता रहा है ।"

तभी थानेदार भी अपने दल बल के साथ वहां पहुंच गया ।

घन्टा निरंतर बजता रहा ।

टन्न.. टन्न...टन्न... .टन्न...।

घन्टे को झुलाते झुलाते राजू के हाथ दुखने लगे लेकिन उसने घन्टा झुलाना बन्द नहीं किया ।

भोला कुछ क्षण बौखलाया सा मीनार के द्वार के पास खड़ा रहा और फिर सरपट बाहर की ओर भागा । वह पुलिस को बुलाकर लाना चाहता था ।

उसी क्षण थानेदार के आदेश पर एक सिपाही ने हवेली का मुख्य द्वार भड़भड़ाया और साथ ही थानेदार की गर्जदार आवाज वातावरण में गूंज गई - "दरवाजा खोलो । कानून के नाम पर दरवाजा खोलो ।"

आवाज भोला के कानों में भी पड़ी । उसके शरीर में हर्ष की लहर दौड़ गई । थाने जाने की जरुरत ही नहीं पड़ी थी । पुलिस खुद ही वहां आ गई थी ।

वह लपककर द्वार के पास पहुंचा । द्वार के पास पड़ी मेज को उसने सरकाया । द्वार के साथ लगाया और उस पर चढ़कर द्वार की सांकल खोल दी ।

द्वार भड़ाक से खुला और थानेदार और उसके सिपाही भीतर प्रविष्ट हुए ।

सबसे पहले थानेदार की निगाह भोला पर पड़ी ।

"अरे !" - वह हैरानी से बोला - "यह लड़का यहां क्या कर रहा है ?"

"मेरा नाम भोला है ।" - भोला जल्दी से बोला - "दरवाजा मैंने खोला है । मेरे साथ मेरे दो साथी और भी हैं ।"

"दो साथी और कौन ?"

"राजू और मिनी । वे चौधरी साहब के बच्चे हैं ।"

तब तक चौधरी साहब भी भीड़ में रास्ता बनाते हुए थानेदार की बगल में पहुंच गये । भोला की बात उन्होंने भी सुनी ।

"राजू और मिनी कहां है ?" - उन्होंने आशंकित स्वर से पूछा ।

"वे भीतर कहीं छुपे हुए हैं ।"

"लेकिन तुम लोग यहां क्या कर रहे हो ?"

"यहां इन्सपैक्टर दुष्यंत गिरफ्तार है । बदमाश उनकी हत्या करना चाहते हैं । हम इन्स्पेक्टर की मदद कर रहे हैं ।"

थानेदार सकते में आ गया । उसने जल्दी से भोला को उठाया और मेज पर खड़ा कर दिया ।

"जल्दी बोलो ।" - वह व्यग्र स्वर में बोला - "क्या किस्सा है ?"

भोला ने जल्दी जल्दी सारी कहानी कह सुनाई ।

घंटा अभी भी बज रहा था ।

"मीनार में कौन है ?" - सारी कहानी सुन चुकने के बाद थानेदार ने पूछा ।

"जरूर राजू और मिनी में से कोई होगा ।" - भोला बोला ।

थानेदार भी सिपाहियों के साथ आगे बढ़ी ।

चौधरी साहब और भोला थानेदार के अगल-बगल चल रहे थे । एक सिपाही हवेली के द्वार पर खड़ा रहा । वह गांव के लोगों को भीतर आने से रोक रहा था ।

भोला उन्हें सुरूंग वाले कमरे में ले आया ।

थानेदार ने आगे बढ़कर मीनार के द्वार की चिटकनी खोली और भीतर घुस गया । उसने अपनी टार्च का प्रकाश ऊपर की ओर डाला ।

घंटा टनाटन बज रहा था ।

"ऊपर कौन है ?" - थानेदार जोर से बोला ।

"पहले आप बताइए आप कौन हैं ।" - राजू गला फाड़कर चिल्लाया ।

"मैं थानेदार हूं ।"

"अरे !" - चौधरी साहब बोला पड़े - "यह तो राजू की आवाज है - "राजू ! राजू !"

राजू ने भी चौधरी साहब की आवाज पहचान ली । उसने तत्काल घंटा बजाना बन्द कर दिया ।

वह अपने काम में सफल रहा था ।

"मैं नीचे आता हूं दादाजी ।" - राजू बोला ।

घंटा बजना बन्द होते ही वातावरण में एकाएक निस्तब्धता छा गई ।

राजू तेजी से मीनार से नीचे उतर आया और दादा जी और इंस्पेक्टर के सामने आ खड़ा हुआ ।

"थानेदार ।" - चौधरी साहब बोले - "यह मेरा पोता राजू है ।"

"तुम घंटा क्यों बजा रहे थे ?" - थानेदार ने पूछा ।

"मैं यहां फंस गया था । इन्स्पेक्टर दुष्यंत की जान खतरे में थी । पुलिस को सूचना पहुंचाने का कोई तरीका नहीं सूझ रहा था । मैंने सोचा अगर मैं घंटा बजा दूं तो सारा गांव यहां इकठ्ठा हो जायेगा और पुलिस भी आ जायेगी और बदमाश पकड़े जायेंगे ।"

"भोला हमें सारी कहानी सुना चुका है लेकिन बदमाश हैं कहां ?"

"वे सुरंग में इन्स्पेक्टर दुष्यंत के पास गये हैं ।"

"सुरंग में ! सुरंग कहां है ?"

"लेकिन राजू ।" - चौधरी साहब बोले - "पहले यह बताओ मिनी कहां है ?"

"मुझे नहीं मालूम ।" - राजू बोला ।

"भोला !" - चौधरी साहब ने भोला से पूछा ।

"मुझे भी नहीं मालूम ।" - भोला बोला - "वह यहीं कहीं छुपी हुई होगी ।"

"मिनी !" - चौधरी साहब ने उच्च स्वर से आवाज लगायी - "मिनी बिटिया !"

अपना नाम पुकारा जाने की मिनी के कानों में भी पड़ी । उसने चौधरी साहब की आवाज फौरन पहचान गई । वह जोरों से संदूक में हाथ मारने लगी ।

सब का ध्यान संदूक की ओर आकर्षित हो गया ।

"हे भगवान !" - एक सिपाही बोला - "यह क्या बला है ?"

"सन्दूक खोलो ।" - थानेदार ने आदेश दिया ।

सन्दूक खोला गया और उसमें से मिनी बाहर निकल आयी ।

थानेदार ने सुरंग की ओर कदम बढाया ।

उसी क्षण सुरंग के भीतर से आहट सुनाई दी ।

"शायद वे लोग वापिस लौट रहे हैं ।" - राजू धीरे से बोला ।

थानेदार ने अपनी टार्च बुझा दी । उसने सबसे चुप रहने का संकेत किया । उसने अपनी रिवाल्वर निकालकर हाथ में ले ली और प्रतीक्षा करने लगा ।

सब लोग गुफा के मुंह से एकदम परे हट गये ।

सुरंग में मद्धम सा पीला परकश दिखाई दिया । फिर एक आवाज आई - "इन्स्पेक्टर को यहीं सुरंग में पड़ा रुहने दो और उसे खाना देना बंद कर दो । वह खुद ही दम तोड़ देगा । कम्बख्त जुबान तो खोलता नहीं ।"

ज्यों ही वे लोग सुरंग के मुंह के पास पहुंचे थानेदार कूदकर उनके सामने पहुंच गया । उसके बाएं हाथ में थमी टार्च का तीव्र प्रकाश उन लोगों पर पड़ा ।

"खबरदार !" - थानेदार चिल्लाया - "कोई भी अपने स्थान से हिला तो शूट कर दूंगा ।"

सबसे आगे रखवाला था । उसके हाथ में एक जलती हुई मोमबत्ती थी । थानेदार पर निगाह पड़ते ही उसके मुंह से चीख निकल गई और मोमबत्ती उसके हाथ से गिर गई । उसके पीछे मूछों वाला था । उसका हाथ धीरे धीरे अपनी जेब की ओर सरकने लगा ।

थानेदार से उसका एक्शन छुपा नहीं रहा ।

"अपने हाथ ऊपर उठा लो मुच्छड़ ।" - थानेदार गरजा - "वर्ना गोली मार दूंगा ।"

"मूछों वाले के मुंह से एक गन्दी सी गाली निकली और उसने हाथ ऊपर उठा लिये ।

सब गिरफ्तार कर लिये गए ।

इन्सपेक्टर दुष्यंत को बड़ी सोचनीय हालत में सुरंग से बाहर निकाला गया । बदमाशों ने उसे बहुत कष्ट दिये थे । उस हालत में भी वह बच्चों के प्रति प्रशंसा के भाव व्यक्त किये बिना न रह सका ।

इन्स्पेक्टर दुष्यंत को जीप में फौरन शहर के हस्पताल में भेज दिया गया ।

समाचार जंगल की आग की तरह सारे गांव में फैल गया कि तीन छोटे बच्चों की वजह से स्मगलरों का बहुत बड़ा गैंग पकड़ा गया था और खुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर दुष्यन्त की जान बच गई थी ।

चौधरी साहब और भोला के पिता मोती और उसके काका की छाती गर्व से चौड़ी हो गई ।

अगले दिन सुबह तक समाचार पत्रों के रिपोर्टर वहां पहुंच गये ।

बच्चों के बयान लिये गये । उनकी तस्वीरें खींची गई । उनके साथ शेरा और सुन्दरी की तसवीरें खीची गई । दोपहर तक वहां पुलिस सुपरिटेंडेंट और उस इलाके के लोकसभा के सदस्य वहां पहुंच गये । गांव वालों की एक आम सभा में बच्चों के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई और उन्हें बिस्कुटों और टाफियों के डिब्बे इनाम में दिये गये ।

बच्चों की अभूतपूर्व वीरता और साहस का कारनामा सारे देश के अखबारों में छपा और साथ ही उनकी तसवीरें भी छपी ।

समाचार वकील हरिप्रकाश और उनकी पत्नी मीना के कानों में भी पड़ा ।

"देख लिया ।" - मीना तुनककर बोली - "मैं न कहती थी कि बच्चे गांव में रहेंगे तो जरूर कोई गड़बड़ होगी ।"

"कौन सी गड़बड़ हो गई है मेम साहब ।" - वकील साहब अट्ठाहास करते हुए बोले - "तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारे बच्चों ने इतनी बहादुरी दिखाई है कि सारा देश उनकी प्रशंसा कर रहा है ।"

"मुझे नहीं चाहिए ऐसी प्रशंसा । अगर मेरे बच्चों को कुछ हो जाता तो ?"

"लेकिन कुछ हुआ तो नहीं है ।"

"मुझे नहीं मालूम । आप बच्चों को फौरन वापिस लेकर आइए ।"

पत्नी की जिद के सामने वकील साहब को झुकना पड़ा । वे बच्चों को वापिस शहर ले आए ।

भोला और सुन्दरी से बिछड़कर राजू और मिनी को बड़ा दुख हुआ । मिनी की आंखों में तो आंसू ही आ गये ।

सुन्दरी अपनी तमाम शरारतें छोड़कर एकदम गंभीर हो गई जैसे उसे भी राजू मिनी और शेरा से बिछुड़ने का दुख हो रहा था ।

शेरा कूं कूं करता हुआ भोला के पास पहुंचा और उसकी टांगों से अपना मुंह रगड़ने लगा ।

भोला ने भरे दिल से शेरा को प्यार किया ।

शेरा ने पहले गुर्राकर और फिर बड़े सलीके से भौंककर सुंदरी से विदा ली ।

भोला और सुन्दरी को शहर आने का निमंत्रण देकर राजू, मिनी और शेरा अपने पिता के साथ गांव से विदा हो गये ।

समाप्त

बेताल और शहजादी

शहजादी शबनम घर से भाग गई ।

शहजादी शबनम !

रतनगढ़ के राजा विक्रम सिंह की इकलौती बेटी ।

बेहद सुन्दर ।

आधुनिक ।

इंगलैंड और स्विट्जरलंड में उच्च शिक्षा प्राप्त ।

बालिग । आयु चौबीस साल ।

राजा विक्रम सिंह की जैसे नाक कट गई ।

क्रोध और बेबसी में राजा विक्रम सिंह ने अपने सिर के बाल नोच डाले । उन्होंने । शहजादी को तलाश करने में कोई कसर नहीं उठा रखी और शहजादी थी कि मिली ही नहीं । उन्हें शहजादी की हवा भी न लगी ।

शहजादी घर से क्यों भागी ?

शहजादी घर से इसलिए भागी क्योंकि राजा विक्रम सिंह अपनी शाही अकड़ में यह भूल गये थे कि अपनी इकलौती बेटी के हिताहित का ध्यान रखना उनका परम कर्त्तव्य था । अपनी पुरानी दकियानूसी मान्यताओं पर उन्हें अपनी सयानी बेटी की बलि चढ़ाने का कोई हक नहीं था ।

राजा विक्रम सिंह शबनम की शादी राजा युद्धवीर सिंह से करना चाहते थे ।

राजा युद्धवीर सिंह उन्हीं की तरह नाम के ही राजा थे और उनमें से भी राजा विक्रम सिंह की तरह रियासतों के भारतीय गणतन्त्र में विलय हो जाने के चौबीस साल बाद भी अकड़ नहीं गई थी । दोनों ही राजाओं की निगाह में आज भी जो आदमी किसी रियासत का राजा या राजकुमार नहीं था, वह छोटा आदमी था और वह राजा लोगों में उठने-बैठने के काबिल नहीं था । चाहे वह भारत का प्रधानमंत्री ही क्यों न हो । इसीलिये राजा विक्रमसिंह ने अपने मान और प्रतिष्ठा के अनुरूप ही बेटी के लिए राजा दूल्हा ही तलाश किया था ।

शहजादी शबनम को वह राजा दूल्हा पसन्द नहीं था ।

क्यों ?

क्योंकि राजा दूल्हा अर्थात राजा युद्धवीर सिंह उससे कम से कम बीस साल बड़े थे और राजा विक्रम सिंह से केवल पांच या छ: साल छोटे थे । वे तीन ब्याह पहले कर चुके थे । दो पत्नियां उनके राजमहल में ही फांसी लगाकर मर गई थीं । तीसरी बीमारी से बिस्तर पर ही मरी थी । यह आज तक रहस्य ही बना हुआ था । वैसे अफवाह यह थी कि उस रानी की मौत जहर से हुई थी । जहर या तो उसने आत्महत्या करने के लिए खुद खा लिया और या किसी ने उसे खिला दिया था ।

किसने ?

राजा युद्धवीर सिंह ने ?

हो सकता है !

शायद उन्होंने चौथी शादी के लिये रास्ते में रुकावट बनी तीसरी पत्नी का काम तमाम करना जरूरी समझा हो ।

शहजादी शबनम राजा युद्धवीर के बारे में सब कुछ जानती थी ।

उसने शादी से साफ इन्कार कर दिया ।

राजा विक्रम सिंह ने शहजादी को समझाया ।

शहजादी ने राजा विक्रम सिंह को समझाया ।

लेकिन न पिता अपनी हठ छोड़ने को तैयार हुआ । और न ही बेटी ने उस शादी के लिए स्वीकृति दी ।

अन्त में शबनम ने स्पष्ट और बहुत कड़े शब्दों में कह दिया कि वह राजा युद्धवीर सिंह से हरगिज हरगिज शादी नहीं करेगी ।

राजा विक्रम सिंह के बूढ़े शरीर में बचा-खुचा खून खौल उठा । अगर पुराना रियासती जमाना होता तो वे अपनी हठी बेटी को शायद हाथी के पांव तले कुचलवा देते लेकिन आज के जमाने में ऐसी कोई हरकत करके वे फांसी की सजा नहीं पाना चाहते थे ।

उन्होंने राजनीति से काम लिया ।

उन्होंने अपनी जंग लगी बन्दूक निकाली । उसमें एक गोली भरी और बन्दूक की नाल को अपनी ठोढी के नीचे लगा दिया । उन्होंने शबनम को कहा कि या तो वह अभी इसी क्षण राजा युद्धवीर सिह से शादी की स्वीकृति दे वर्ना वह उसके सामने ही आत्महत्या करके मर जायेंगे ।

शहजादी डर गई ।

राजा विक्रम सिंह उसके साथ घोर अन्याय कर रहे थे लेकिन फिर भी वे उसके पिता थे ।

उसने फौरन हामी भर दी ।

राजा विक्रम सिंह ने बन्दूक अपनी ठोड़ी के नीचे से हटा ली और अपने चेहरे पर एक विजेता की मुस्कराहट लिये हुए वहां से विदा हो गये ।

शहजादी तभी समझ गई कि उसके साथ धोखा हुआ था । राजा विक्रम सिंह मरने-मराने वाले नहीं थे । उन्होंने केवल शहजादी से हां कहलवाने के लिए वह नाटक रचा था ।

शहजादी चुप रही ।

वह उस मुसीबत से छुटकारा पाने की तरकीब सोचती रही ।

अगले कुछ दिनों में उसे राजा युद्धवीर सिंह की अर्थात अपनें होने वाले पति की सूरत भी दिखाई दी । शहजादी ने अपने बाप की आयु के उस घिनौने इन्सान को देखा और उसे

उल्टी आते-आते बची ।

शहजादी ने मन ही मन कसम खा ली कि वह महल की तीसरी मंजिल से कूदकर जान दे देगी लेकिन राजा युद्धवीर सिंह से शादी नहीं करेगी ।

शहजादी ने जान नहीं दी ।

न ही उसने राजा युद्धवीर से शादी की ।

जिस दिन मंगनी की रस्म थी उससे पिछली रात को वह चुपचाप घर से निकल गई और फिर वह राजा विक्रम सिंह को या राजा युद्धवीर सिंह को ढूंढे न मिली ।

राजा विक्रम सिंह की जैसे नाक कट गई । उसकी बात कच्ची हो गई ।

राजा युद्धवीर सिंह के क्रोध और बेबसी का पारावार नहीं था । उनकी भावी रानी उनके हाथों से निकल गई थी । उन्होंने शहजादी की तलाश में जमीन आसमान एक कर दिया लेकिन शहजादी को न मिलना था न मिली ।

राजा युद्धवीर सिंह ने पचास हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया - उस आदमी के लिये जो रतनगढ़ की शहजादी और उनकी भावी रानी शबनम को खोजकर लाएगा या उसका पक्का पता बतलाएगा ।

उन्हीं दिनों अपनी उच्च शिक्षा समाप्त करके अनिल विदेश से लौटा ।

अनिल रियासत रतनगढ़ के ही एक सभ्रांत मध्यमवर्गीय परिवार का इकलौता दीपक था । सरकारी छात्रवृत्ति पर वह उच्च शिक्षा के लिये विदेश गया था । वह एक लम्बा-ऊंचा, धीर गम्भीर सजीला युवक था । यह एक भारी संयोग था कि अपनी ही रियासत की राजकुमारी को उसने कभी रियासत में नहीं देखा था लेकिन इंग्लैण्ड में वह और शबनम एक ही कालेज में पढ़ते थे ।

शबनम को अनिल बहुत अच्छा लगा ।

अनिन को शबनम बहुत अच्छी लगी ।

दोनों मन ही मन एक दूसरे को बहुत पसन्द करते थे लेकिन दोनों में ही अपने मन की बात जाहिर करने की हिम्मत नहीं थी ।

अनिल ने इसलिए क्योंकि शबनम शहजादी शबनम थी ।

और शहजादी शबनम ने इसलिए क्योंकि अनिल, अनिल था अर्थात उसके पिता की निगाहों में एक छोटा हल्का आदमी । मामूली आदमी ।

राजा विक्रम सिंह अपनी बेटी का हाथ किसी मामूली आदमी के हाथ में देने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे । उनकी निगाहों में शहजादी का रिश्ता शाही खून से ही होना सम्भव था । चाहे वह खून किसी बदसूरत बूढ़े, खूंसट विलासी राजा की नसों में ही क्यों न बह रहा हो ।

शबनम और अनिल दोनों को ही एक दूसरे के मनोभावों को पता था लेकिन दोनों ही चुप रहते थे ।

अन्त में बात तब खुली जब शहजादी के स्वदेश रवाना होने का समय आया ।

शहजादी ने वादा किया कि उचित समय आने पर वह अपने पिता के सामने यह बात रखेगी कि वह अनिल से विवाह करना चाहती है और उसे भरोसा था कि राजा साहब चीखे-चिल्लायेंगे तो जरूर लेकिन वे अपनी इकलौती बेटी के हठ के सामने जरूर झुक जायेंगे ।

उचित समय से उसका मतलब यह था कि अनिल भी स्वदेश वापिस लौट आए, कोई अच्छी नौकरी हासिल कर ले और इस योग्य हो जाए कि सुचारु रूप से एक परिवार का खर्चा चला सके ।

लेकिन शहजादी ने स्वदेश वापिस लौटकर देखा कि वहां तो कहानी ही और थी । उसके पिता तो पहले ही राजा युद्धवीर सिंह से उसका रिश्ता जोड़े बैठे थे । अनिल के बारे में कुछ कहने-सुनने की नौबत ही नहीं आई ।

अनिल के रतनगढ लौटने तक शहजादी को घर से गायब हुए आठ महीने हो चुके थे । राजा युद्धवीर सिंह के पचास हजार रुपये के इनाम की घोषणा से भी कोई परिणाम नहीं निकला था । शहजादी का कहीं अतापता नहीं था ।

शहजादी घर से क्यों भागी थी यह बात रतनगढ़ में किसी से छुपी नहीं थी । सारी कहानी रतनगढ़ रियासत के बच्चे-बच्चे की जुबान पर थी, इसीलिए अनिल को भी सहज ही मालूम हो गई ।

उसने शहजादी शबनम को खोज निकालने का बीड़ा अपने सिर उठा लिया ।

वैसे बहुत लोगों ने यूं ही शहजादी को खोज निकालने का बीड़ा उठाया था लेकिन उनमें और अनिल में फर्क था । दूसरे लोग रुपये के लालच में शहजादी की तलाश आरंभ करते थे कर कोई परिणाम न निकलता देखकर जल्दी ही हिम्मत हार जाते थे और तलाश से अपना हाथ खींच लेते थे । लेकिन अनिल ऐसा नहीं था । उसको राजा युद्धवीर सिंह के पचास हजार रुपए के लालच में शहजादी को तलाश नहीं करना था । उसको अपने लिए शहजादी को तलाश करना था ।

बड़े धैर्य और सलीके से उसने शहजादी शबनम की तलाश आरम्भ की ।

सबसे पहले उसने यह जानने के लिए कदम उठाया कि शहजादी रतनगढ से बाहर गई तो कैसे गई । रतनगढ रियासत में तो वह थी नहीं । वहां होती तो आठ महीने तक वह लोगों की निगाहों से छुपी न रहती । उसने रेलवे स्टेशन का आरक्षण का पुराना रिकार्ड देखा तो उसे मालूम हुआ कि शहजादी आठ महीने पहले अपने महल से भागने की रात को ट्रेन द्वारा दिल्ली गई थी ।

अनिल दिल्ली पहुंचा ।

उसके पास शहजादी शबनम का एक चित्र था जो शहजादी ने इंग्लैंड में उसे दिया था । शहजादी की तलाश में वह चित्र उसके एक काम आया ।

उसकी तकदीर अच्छी थी। दिल्ली में उसे एक बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिली। उसे मालूम हुआ कि तस्वीर वाली लड़की जगत प्रसिद्ध जादूगर सरकार की मंडली में देखी गई थी।

अनिल उन लोगों के पास पहुंचा जिन्होंने दिल्ली में जादूगर सरकार के जादू के शो का इंतजाम किया था। उन लोगों ने तस्वीर वाली लड़की को अर्थात शहजादी को पहचान लिया। उनके कथनानुसार यह वही लड़की थी जिसे जादूगर सरकार अपने शो में सहायक के रूप में प्रयोग में लाता था। वह लड़की को एक लकड़ी के बक्से में लिटाकर बक्सा बन्द कर देता था और बक्से को एक बिजली के आरे से बीचों-बीच काट देता था। देखने वालों को लगता था कि बक्से के साथ-साथ लड़की के भी दो टुकड़े हो गये थे, लेकिन बाद में जादूगर उस कटे हुए बक्से में से लड़की सही सलामत निकालकर दिखा देता था।

शो में जिस लड़की पर बिजली का आरा फिरता वह राजकुमारी शबनम थी।

शायद इसीलिए किसी दूसरे तलाश करने वाले को शहजादी की हवा नहीं मिली क्योंकि कोई यह स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि रतनगढ़ रियासत की राजकुमारी एक जादूगर की सहायक का घटिया और इज्जत घटाने वाला काम करेगी।

यह सात महीने पहले की बात थी।

अनिल को मालूम हुआ कि जादूगर सरकार का दल पन्द्रह दिन पूर्व दिल्ली से जयपुर रवाना हो गया था। लेकिन यह कोई नहीं बता सका कि आरे से कटने वाली लड़की अर्थात शहजादी भी जयपुर जादूगर के साथ गई थी या नहीं।

अनिल जयपुर पहुंचा।

वहां से उसे मालूम हुआ कि शहजादी जयपुर में भी जादूगर के साथ थी और उसके बिजली के आरे से सन्दूक में बन्द लड़की को काटने वाले शो में उसकी सहायक थी।

जयपुर में पन्द्रह दिन शो करने के बाद जादूगर कोटा रवाना हो गया था।

अनिल कोटा पहुंचा।

कोटा से उसे मालूम हुआ कि जादूगर अपने दल के साथ वहां से इन्दौर चला गया था।

अनिल इन्दौर पहुंचा।

जादूगर पन्द्रह दिन इन्दौर में अपना खेल दिखा कर बम्बई चला गया था।

अनिल बम्बई पहुंचा।

जादूगर सरकार क्योंकि जगत प्रसिद्ध जादूगर था, इसलिए किसी नगर में उसकी गतिविधि का पता लगाने में अनिल को कोई कठिनाई नहीं होती थी।

बम्बई से जादूगर बैंगलोर गया था।

बैंगलोर से मद्रास।

मद्रास से हैदराबाद।

हैदराबाद से रायपुर ।

रायपुर से रांची ।

रांची से कलकत्ता ।

कलकत्ता में उसे दो बातें मालूम हुई ।

नम्बर एक : जादूगर कुछ ही दिन पहले अपने दल-बल के साथ आसाम की ओर निकल गया था ।

नम्बर दो : शहजादी शबनम भी जादू के कई खेल जान गई थी और स्टेज पर उसका प्रदर्शन भी करती थी ।

अनिल आसाम की ओर रवाना हुआ ।

जादूगर अपने दल-बल के साथ शिलांग में मौजूद था ।

और यह अनिल का सौभाग्य था कि वह उस दिन शिलांग पहुंच गया था । वह दिन जादूगर सरकार का शिलांग में आखिरी दिन था । अगली सुबह वह वहां से बर्मा के लिए रवाना हो जाने वाला था । उसके बाद उसका प्रोग्राम थाईलैण्ड, लाओस, कम्बोडिया, और वियतनाम में शो करने का था । एक बार जादूगर सरकार विदेश निकल जाता तो अनिल के लिये राजकुमारी शबनम को तलाश कर पाना बहुत कठिन हो जाता ।

अनिल जादूगर सरकार से मिला ।

जादूगर से मिलने पर अनिल की सारी आशा निराशा में बदल गई ।

शहजादी शबनम उसके साथ नहीं थी ।

शहजादी शबनम तीन दिन पहले तक जादूगर के साथ थी । तीन दिन पहले एक आदिवासी-सा लगने वाला लगभग पचास वर्ष का आदमी उसके पास आया था । उस आदमी का नाम जुमाला था और वह आसाम के बीहड़ जंगलों भें रहने वाली किसी आदिवासी जाति का ओझा था ।

“जुमाला ने एक बड़ी अजीब कहानी सुनाई थी ।” - जादूगर बोला ।

“क्या ?” - अनिल ने पूछा ।

“उसने बताया था कि आसाम के बीहड़ जंगल में अटकरी नाम का एक गांव है । उस गांव में एक पुराना मठ है । जिसके महन्त का नाम है करीबो । उस महंत के पास कुछ अमानवीय शक्तियां हैं जो पुश्त दर पुश्त उसके खानदान में चली आ रही हैं ।”

“कैसी अमानवीय शक्तियां ?”

“जुमाला कहता है कि करीबो ऐसे मन्त्र जानता है जिसकी सहायता से वह किसी भी व्यक्ति को अपने वश में कर सकता है । वह मन्त्र के बल पर इन्सान को गायब कर सकता है । उसे कुत्ता, बिल्ली चिड़िया कुछ भी बना सकता है । यहां तक कि अपने मन्त्रों के बल पर ही वह हवा में भी उड़ सकता है । कहने का तात्पर्य यह है कि जो कुछ जुमाला उसके बारे में कहता था, अगर वह सब सच है तो, तो मेरा जादू जादू नहीं, बच्चों का तमाशा है ।”

"फिर ?" - अनिल ने पूछा ।

"जुमाला अटवारी के महन्त करीबो की वे अमानवीय शक्तियां यानी कि उसके मन्त्र वगैरह हथियाना चाहता है लेकिन करीबो किसी भी कीमत पर अपने मन्त्र किसी को नहीं बताना चाहता । करीबो के खानदान की परम्परा है कि मरने से पहले बार अपने सबसे बड़े बेटे को ही अपनी शक्तियां हस्तान्तरित करके जाता है । बाप के मरने के बाद बेटा अटवारी गांव का महन्त बन जाता है । यह सिलसिला करीबो तक चला है लेकिन करीबो के कोई औलाद नहीं है । इसी आधार पर जुमाला ने करीबो को कहा कि वह अपने मन्त्र वगैरह उसे लिखा दे क्योंकि अगर वह मर गया तो वह विद्या भी उसके साथ मर जायेगी । लेकिन करीबो अपनी मन्त्र-विद्या किसी गैर आदमी को देकर नहीं जाना चाहता और जुमाला के कथनानुसार करीबो अब कुछ ही दिन का मेहमान है ।"

"इन बातों का शहजादी शबनम से क्या सम्बन्ध है ?" - अनिल व्यग्र स्वर से बोला ।

"वही तो बताने जा रहा हूं ।" - जादूगर धैर्यपूर्ण स्वर में बोला - "जुमाला के लगातार पीछे पड़े रहने पर करीबो ने उसे बताया है कि वह अपनी मन्त्र विद्या अपने साथ नहीं ले जाना चाहता । वह भी यही चाहता है कि वह मरने से पहले अपनी मन्त्र विद्या किसी को दे जाये । उसने कहा कि वह अपनी मन्त्र विद्या जुमाला को नहीं देगा । क्योंकि जुमाला एक बदमाश और बेईमान ओझा है । अगर करीबो की खानदानी अमानवीय शक्तियां उसके हाथ आ गई तो वह जरूर उनका दुरुपयोग करेगा । वह गांव के भोले भाले लोगों को ठगेगा और उनमें अपना भय बिठाकर उनका बेताज का बादशाह बन जायेगा । करीबो ने कहा कि वह अपनी मन्त्र-विद्या किसी ऐसे ईमानदार इन्सान को सौंपकर जाना चाहता था जो उसे लोगों की भलाई में ही लगाये न कि उस विद्या से लोगों को डरा धमका कर अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश करे ।"

"करीबो अपनी मन्त्र विद्या किसे सौंपकर जाना चाहता था ?"

"उसके कथनानुसार उनके कुल देवता ने स्वप्न में उसे दर्शन दिये थे और उसे बताया था कि उसकी मृत्यु से पहले एक देवी उसके मठ में आयेगी । उसके बाल सुनहरी होंगे और आंखें नीली होंगी । उसके चेहरे से तेज टपकता होगा और उसमें जादू की शक्ति से चौंका देने वाले कृत्य कर दिखा देने की अद्भुत क्षमता होगी । कुलदेवता ने करीबो को आदेश दिया था कि वह अपनी सारी तन्त्र विद्या उस देवी को सौंप दे और उसे अटवारी गांव के मठ की गद्दी पर आसीन कर दे । करीबो उसी देवी की प्रतीक्षा में है और इसी वजह से वह जुमाला को या किसी भी अन्य व्यक्ति को मुंह नहीं लगा रहा है ।"

अनिल आशंकित हो उठा । शहजादी शबनम के बाल सुनहरी थे, आंखें नीली थी और उसके चेहरे से तेज टपकता था और वह यह पहले ही सुन चुका था कि जादूगर सरकार के साथ रहकर वह खुद भी कई जादू के करतब सीख गई थी ।

"फिर ?" - अनिल ने संशक स्वर में पूछा ।

"जुमाला ने मेरे शो में शबनम को देखा। शो के बाद वह हमसे मिला और उसने हमें सारी बात बताई। जुमाला चाहता था कि शबनम श्वेत परिधान पहने और बाल खोले अगर अटवारी गांव में करीबो के पास चली जाये तो करीवो अवश्य ही उसे वह देवी समझ बैठेगा जिसके विषय में उसके कुलदेवता ने उसे स्वप्न में बताया था। शबनम जादू के कई खेल जानती थी। अपने हाथ की सफाई से किसी के कान में से फुट भर का सांप निकाल देना या किसी की जेब में से खरगोश बरामद कर देना या वशीकरण द्वारा किसी को कोई विशेष कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना उसके बायें हाथ का खेल था। जुमाला को विश्वास था कि करीबो उसे जरूर स्वीकार कर लेगा और मरने से पहले उसे अपनी सारी मन्त्र विद्या सौंप जायेगा। फिर शबनम वह सारी मन्त्र विद्या जुमाला को सौंप देगी।"

"आप कहीं यह तो नहीं कहना चाहते कि शबनम जुमाला का साथ देने के लिए तैयार हो गई ?"

"बिल्कुल तैयार हो गई साहब। वह तो इस बात की कल्पना से ही आन्दोलित हुई जा रही थी कि वह करीबो से मन्त्र विद्या प्राप्त करके गायब हो सकेगी, हवा में उड़ सकेगी, जिसको चाहे अपने अधिकार में कर सकेगी, अपने आपको किसी भी रूप में ढाल सकेगी और दूसरे को अपनी इच्छानुसार चिड़िया, कबूतर कुछ भी बना सकेगी।"

"उसे विश्वास हो गया कि यह सब हो सकता है ?"

"विश्वास हो गया तभी तो चली गई।"

"वह पढ़ी लिखी आधुनिक युवती है। वह..."

"फिर क्या हुआ ? मेरे ग्रुप में शामिल होने से पहले उसे इस बात पर भी तो विश्वास नहीं था कि कोई किसी को बक्से में बन्द करके उसे बीच में से काटकर कटे हुए दोनों टुकड़ों को फिर से जोड़ सकता है। आपको भी विश्वास नहीं होगा।"

"नहीं है।"

"लेकिन फिर भी मैं अपने शो में ऐसा रोज करके दिखाता हूं।"

"यानी कि आपको विश्वास है कि मन्त्र या वशीकरण विद्या की सहायता से आदमी गायब हो सकता है, अपना रूप बदल सकता है, हवा में उड़ सकता है ?"

"इस संसार में असम्भव कुछ भी नहीं है। अगर करीबो में वाकई ऐसी अमानवीय शक्ति है जिनका जिक्र जुमाला ने किया था तो कुछ भी सम्भव है।"

"फिर भी शहजादी शबनम को जुमाला के साथ नहीं जाना चाहिये था। वह पढ़ी लिखी, समझदार आधुनिक लड़की है। मुझे हैरानी है कि उसे ऐसी दकियानूसी बातों पर विश्वास कैसे हो गया ?"

"विश्वास हो गया, तभी तो चली गई।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि जुमाला उसे जबरदस्ती अपने साथ ले गया हो।"

"नहीं, वह अपनी मर्जी से गई थी।"

अनिल कुछ क्षण चुप रहा । फिर वह अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और दृढ़ स्वर में बोला - “मुझे शबनम को तलाश करना ही होगा ।”

“कहां तलाश करोगे उसे ?”

“अटवारी गांव में ।”

“लेकिन नौजवान, अटवारी गांव ही तुम्हें ढूंढे नहीं मिलेगा । अटशरी गांव आसाम के बीहड़ जंगलों में कहीं है । किसी बाहरी आदमी का उसे तलाश कर पाना आसान काम नहीं है ।”

“मैं तलाश करूंगा ।”

“और फिर गांव के आदिवासी लोग बाहरी आदमियों का वहां आना पसन्द नहीं करते हैं । संभव है कि तुम अटवारी गांव तो तलाश कर लो लेकिन करीबो के मठ में पहुंचने से पहले ही आदिवासी तुम्हारा काम तमाम कर दें ।”

“कोई मजाक है क्या ? ऐसे खामखाह भला कोई किसी की जान ले सकता है ? आखिर कायदा-कानून भी कोई चीज होती है ।”

“वे सभ्यता से परे रहने वाले लोग सभ्य जातियों का कायदा कानून नहीं मानते । उनका अपना कायदा कानून है । आदिवासियों के गांव में वह होता है जो उनका मुखिया कहता है । वे अगर तुम्हें पकड़कर अपने कुलदेवता के सामने तुम्हारी बलि भी चढ़ा दें तो कोई हैरानी को बात नहीं होगी । आदिवासियों के गांव में तुम्हारे साथ क्या बीती यह बाहरी दुनिया को सात जन्म भी मालूम नहीं होगा ।”

“फिर तो यह भी सम्भव है कि करीबो अपनी शक्तियां शबनम को देवी समझकर सौंप दे । बाद में जुमाला शबनम से वे सब शक्तियां हथिया ले और फिर शबनम की ही हत्या कर दे ।”

“सम्भव है ।”

“फिर भी आपने शबनम को जुमाला के साथ जाने से रोका नहीं ?”

“नौजवान, मेरे कहे से वह रुकने वाली नहीं थी । उसने जुमाला के साथ जाने का खुद फैसला किया था और यह फैसला उसने तमाम ऊंच-नीच सोचकर किया था ।”

अनिल ने एक गहरी सांस ली और उठ खड़ा हुआ ।

“मैं शबनम को जरूर तलाश करूंगा ।” - वह पहले से कहीं अधिक दृढ़ स्वर में बोला ।

***

अगले पांच दिन अनिल दिन रात आसाम के बीहड़ जंगलों की खाक छानता रहा ।

जादूगर सरकार ने सच कहा था ।

अटवारी गांव का पता उसे नहीं मिला ।

उन पांच दिनों में अनिल ने बहुत यातनायें सही । उसके कपड़े, सिर के बाल सब धूल मिट्टी में अट गये । उन पांच दिनों में वह इतना चला कि उसके लिए पांव उठाना मुश्किल हो गया । कितनी ही बार वह जंगली जानवरों का शिकार होते-होते बचा । पांच दिन उसने अपने साथ लाये बिस्कुट खाकर और कभी कभार मिल जाने वाला कोई जंगली फल चबाकर गुजारा किया ।

पांच दिन बाद स्थिति यह थी कि न केवल वह अटवारी गांव को तलाश करने में असफल रहा था बल्कि जंगल में वह भटक भी चुका था । अब उसे उस बीहड़ जंगल से बाहर निकलने का रास्ता भी नहीं सूझ रहा था ।

उस मुश्किल की घड़ी में उसे बेताल की याद आई ।

महाबली बेताल !

जो जंगली कबीलों में चलते-फिरते प्रेत के नाम से प्रसिद्द था ।

जिसका जिक्र उसने बचपन में नानी की कहानियों में सुना था और जिसके अस्तिस्व पर उसे कभी विश्वास नहीं हुआ था ।

जो भले और जरूरतमन्द लोगों की मदद करता था और उनकी बुरे लोगों से रक्षा करता था ।

जो बुरे लोगों के सिर पर ईश्वर का प्रकोप बनकर टूट पड़ता था ।

जिसके बारे में उसने सुना था कि विपत्ति में फंसा हुआ आदमी उसे मदद के लिए कहीं पुकारे, कभी पुकारे, बेताल उसकी मदद के लिए जरूर हाजिर हो जाता था ।

अनिल ने बेताल के अस्तित्व पर कभी विश्वास नहीं किया था । वह हमेशा से ही उसे किस्से-कहानियों का पात्र समझता आ रहा था । लेकिन फिर उस मुश्किल की घड़ी में उसके मन में बेताल को पुकारने की इच्छा होने लगी ।

उस जंगल में ही कहीं बेताल की खोपड़ीनुमा गुफा थी जिसके पास किसी का भी फटकना मना था ।

“बेताल...” - एकाएक अनिल के मुंह से अपने आप निकल गया - “मेरी मदद करो ।”

वह उठकर खड़ा हो गया

उस बियाबान जंगल में बेताल का नाम एकाएक उसे बहुत बड़ा सहारा महसूस होने लगा ।

अगर बेताल का कोई अस्तित्व है तो वह उसकी पुकार सुनकर उसकी मदद के लिये जरूर आएगा ।

“बेताल...!” - वह उच्च स्वर से चिल्लाया और लड़खड़ाता हुआ बीहड़ जंगल में आगे बढ़ गया ।

“बेताल !”

“बेताल! !”

"बेताल !!!"
उसकी पुकार से बीहड़ जंगल गूंज गया।
फिर उसके कानों में नगाड़े पर पड़ती हुई थाप की आवाज पड़ी। अनिल के लिए उस आवाज का कोई अर्थ नहीं था लेकिन वास्तव में उस नगाड़े की थाप में एक संकेत निहित था। अनिल की पुकार एक घने पेड़ की चोटी पर छपकर बैठे एक आदिवासी ने सुनी थी। नगाड़े की थाप की संकेतात्मक भाषा में वह यह संदेश जंगल में फैला रहा था कि कोई नवयुवक जंगल में महाबली बेताल को सहायता के लिए पुकार रहा था।
"बेताल !"
"बेताल !"
"बेताल !!!
"बेताल ! मेरी मदद करो।"
अनिल पुकार रहा था।
उसकी आवाज के साथ-साथ जंगल में नगाड़ों की आवाज गूंज रही थी।
पहले आदिवासी का नगाड़े की थाप से भेजा संकेत उससे काफी दूर मौजूद एक अन्य आदिवासी ने सुना। उसने अपने नगाड़े पर थाप देनी आरम्भ कर दी।
नगाड़े की थाप की संकेतात्मक आवाज के साथ संदेश आगे बढ़ा।
"धप्प ! धप्प ! धप्प !"
"कोई नवयुवक महाबली बेताल को सहायता के लिये पुकार रहा है...।"
धप्प, धप्प ! धप्प ! धप्प ! धप्प !
संकेत बान्दर बौनों ने सुना।
उन्होंने तत्काल वह संदेश खोपड़ीनुमा गुफा में अपने सिंहासन पर बैठे बेताल को पहुंचाया।
महाबली बेताल तत्काल अपने सिंहासन से उठा।
उसने तुरन्त संदेश भिजवाया कि जब तक वह उस युवक के पास तक नहीं पहुंच जाता तब तक जंगल में हर प्रकार की विपत्ति से उसकी रक्षा की जाये।
बेताल की आज्ञा का तुरन्त पालन किया गया।
अनिल की निगरानी होने लगी।
जबकि अनिल को इतना भी आभास नहीं मिला कि उसके आसपास दूर-दूर तक कोई मौजूद था।
कई जोड़ी सतर्क निगाहें उस पर टिकी हुई थीं लेकिन वह इस स्थिति से पूर्णतया बेखबर था।
आशा और निराशा के झूले में झूलता हुआ वह अभी भी बेताल को पुकार रहा था।
क्या बेताल का अस्तित्व था !

अगर बेताल का अस्तित्व था तो क्या उसकी पुकार बेताल के कानों तक पहुंचेगी ?

अगर उसकी आवाज बेताल के कानों तक पहुंचेगी तो क्या वह उसकी मदद के लिए आयेगा ?

उसे नहीं मालूम था कि उसकी पुकार बेताल तक पहुंच चुकी थी, उसे बेताल का संरक्षण प्राप्त हो चुका था और बेताल उसकी मदद के लिए आ रहा था ।

बेताल अपने सफेद घोड़े तूफान पर सवार हुआ और उस दिशा में उड़ चला जिधर एक जरूरतमन्द नवयुवक उसे मदद के लिए पुकार रहा था ।

उसका वफादार कुत्ता शेरा उसके पीछे था ।

उधर अनिल बेताल को पुकार-पुकार कर थक गया ।

हार कर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा ।

उसके दिल में निराशा घर करती जा रही थी ।

उसका विवेक कहता था कि उसका बेताल को पुकारना बेकार था । बेताल का कोई अस्तित्व नहीं था ।

आशा कहती थी कि बेताल का अस्तित्व था । वह जरूर आयेगा ।

अन्त में जब उसके मन में आशा की अन्तिम किरण भी बुझ गई तो चलते-फिरते प्रेत की तरह बेताल उसके सामने आ खड़ा हुआ ।

"मुझे तुमने पुकारा नौजवान ?" - उसके कानों में एक गम्भीर स्वर सुनाई पड़ा ।

अनिल ने सिर उठाकर देखा ।

उसका मुंह खुले का खुला रह गया ।

सामने एक विशालकाय नकाबपोश खड़ा था । उसके स्थिर नेत्र अनिल के चेहरे पर टिके हुए थे ।

उसके पीछे एक खूबसूरत सफेद घोड़ा खड़ा था ।

घोड़े की बगल में खड़ा एक कुत्ता हांफ रहा था ।

बेताल !

चलता फिरता प्रेत !

बेताल साक्षात उसके सामने खड़ा था ।

तो बेताल का अस्तित्व था ।

बेताल केवल किस्से-कहानियों की ही चीज नहीं था ।

"बेताल !" - अनिल के मुंह से स्वयंमेव निकल गया ।

"क्यों पुकार रहे थे मुझे ?" - बेताल आश्वासनपूर्ण स्वर में बोला ।

अनिल को विश्वास हो गया कि अब उसकी सारी मुश्किलें आसान हो जायेंगी ।

उसने धीरे-धीरे बेताल को सारी कथा सुना दी ।

"हूं... ।" - सारी बात सुन चुकने के बाद बेताल बोला - "तो तुम्हारा ख्याल है कि शहजादी शबनम अटवारी गांव के मठ के महन्त करीबो के पास है ?"

"जी हां ! लेकिन यह भी हो सकता है कि अपनी मन्त्र विद्या शबनम को सौंप देने के बाद करीबो मर चुका हो और अब शबनम जुमाला के साथ हो ।"

"मैं जुमाला को जानता हूं । वह बहुत मक्कार ओझा है । अगर शबनम जुमाला के पास है तो शबनम का अनिष्ट हो सकता है । लेकिन करीबो अच्छा आदमी है । अगर शहजादी उसके पास है तो वह जरूर सुरक्षित होगी । हम पहले अटवारी गांव चलेंगे ।"

"आप जानते हैं अटवारी गांव कहां है ?"

बेताल के होठों पर मुस्कराहट फूट पड़ी ।

अनिल लज्जित हो गया । प्रश्न करते ही उसे उसकी निरर्थकता का मान हो गया था । महाबली बेताल से क्या छुपा होगा । चलता फिरता प्रेत सब कुछ जानता था ।

"तुम घोड़े की सवारी कर सकते हो ?"

"जी हां !"

बेताल के मुंह से एक विचित्र-सी आवाज निकली ।

शायद उस आवाज के ही जवाब में पता नहीं कहां से एक बान्दर बौना प्रकट हो गया ।

अनिल ने देखा, वह एक छोटे से कद का नंग धड़ंग आदमी था । हथियार के तौर पर वह अपने कन्धे पर तीर कमान लादे हुए था । अपनी नानी से सुनी कथाओं में अनिल ने बान्दर बौनों का जिक्र सुना था । बन्दर बौने बेताल के रक्षक थे और उनके जहर से मुझे तीरों से जंगल का हर कबीला डरता था ।

बेताल ने न जाने कौन-सी भाषा में बौने से कुछ कहा ।

बौना बिजली की कुर्ती से वहां से विदा हो गया ।

दस मिनट बाद वह अपने साथ एक काले रंग का घोड़ा लेकर लौटा । बेताल के संकेत पर घोड़े की लगाम उसने अनिल को थमा दी और स्वयं कहीं जंगल में गायब हो गया ।

बेताल के संकेत पर अनिल घोड़े पर सवार हो गया ।

बंताल भी घोड़े पर सवार हो गया ।

बेताल ने अपने घोड़े को जंगल में आगे बढ़ा दिया । शेरा बेताल के घोड़े तूफान की बगल में दौड़ने लगा ।

मन्त्र मुग्ध अनिल ने अपना घोड़ा बेताल के घोड़े के पीछे लगा दिया ।

रात के अन्धकार में बेताल और अनिल बीहड़ जंगल में आगे बढते गये ।

लगभग एक घंटे बाद एक स्थान पर बेताल ने घोड़ा रोका ।

सामने एक गांव का परकोटा दिखाई दे रहा था ।

गांव में एकदम सन्नाटा था ।

"यही अटवारी गांव है ।" - बेताल धीरे से बोला ।

अनिल चुप रहा । वह बेताल के निर्देश की प्रतीक्षा कर रहा था ।

बेताल घोड़े से उतरा । उसने घोड़े की पीठ थपथपाई ।

“यहीं ठहरना ।” - बेताल बोला ।

तूफान यूं धीरे से हिनहिनाया जैसे वह बेताल की बात समझ गया हो ।

शेरा भी धीरे से गुर्राया ।

तब तक अनिल भी अपने घोड़े से उतर आया था । उसने अपने घोड़े की लगाम पकड़कर तूफान के समीप कर दिया ।

बेताल गांव के परकोटे की ओर बढ़ा ।

अनिल उसके साथ हो लिया ।

दीवार फान्द कर वे दोनों गांव के भीतर प्रविष्ट हो गये ।

“हम मठ की ओर चल रहे हैं ।” - बेताल ने धीमे स्वर से बताया - “करीबो अपने मठ में ही होगा ।”

अनिल मन्त्र मुग्ध सा बेताल के साथ चलता रहा ।

गांव के झोपडों से अलग-थलग बनी एक विशाल इमारत के सामने आकर बेताल रुक गया ।

सामने एक बन्द दरवाजा था ।

“यही करीबो का निवास स्थान है ।” - बेताल बोला ।

उसने धीरे से दरवाजा खटखटाया ।

भीतर से कोई उत्तर नहीं मिला ।

बेताल ने फिर दरवाजा खटखटाया और साथ ही आवाज दी - “करीबो ।”

भीतर से किसी प्रकार की आहट सुनाई नहीं दी ।

बेताल ने द्वार को धक्का दिया ।

द्वार भीतर से मजबूती से बन्द था ।

अनिल बेताल की बगल में आ खड़ा हुआ ।

“भीतर से बड़ी अजीब सी दुर्गन्ध आ रही है ।” - एकाएक अनिल बोला ।

“मैंने भी महसूस किया है और मैं इस दुर्गन्ध को भी पहचानता हूं ।” - बेताल बोला ।

“कैसी दुर्गन्ध है यह ?”

“ऐसी दुर्गन्ध काफी दिनों से मृत शरीर में से निकलती है । यह सड़ती हुई लाश की दुर्गन्ध है ।”

“करीबो की लाश !”

“हो सकता है । दरवाजा भीतर से बन्द है और बाहर निकलने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है । भीतर करीबो के मरा पड़ा मिलने की पूरी सम्भावना है ।”

बेताल ने अपना शक्तिशाली कन्धा बन्द दरवाजे के साथ भिड़ाया और जोर से भीतर की ओर धक्का दिया ।

दरवाजा धीरे से चरमराया ।

बेताल ने फिर धक्का दिया ।

तीन चार धक्कों के बाद दरवाजे का एक पल्ला चौखट से उखड़ गया ।

बेताल भीतर प्रविष्ट हुआ ।

अनिल ने भी झिझकते हुए भीतर कदम रखा । भीतर दुर्गन्ध बहुत तेज थी ।

अनिल ने अपनी नाक दबा ली ।

भीतर एक तेल का दिया जल रहा था । दिए का मद्धम प्रकाश कमरे में फैला हुआ था ।

कमरे के एक कोने में दीवार के साथ लगी एक गठरी सी पड़ी थी ।

बेताल ने दिया अपने हाथ में ले लिया और उसे अपने सामने किये उस गठरी की ओर बढ़ा ।

गठरी के समीप पहुंचकर बेताल ने दिया ऊंचा किया । दिये का प्रकाश सीधा उस गठरी पर पड़ा ।

वह गठरी नहीं थी । वह एक वृद्ध व्यक्ति का शरीर था । लगता था कि वृद्ध दीवार के साथ लगा बैठा-बैठा ही मर गया था । लाश को कीड़े खा रहे थे । जिससे लगता था कि उसे मरे काफी दिन हो गये थे ! लाश में से दुर्गन्ध फूट रही थी ।

“यह करीबो है ।” - बेताल धीरे से बोला ।

“लेकिन...” - अनिल बड़ी मुश्किल से उबकाई रोकता हुआ बोला - “शहजादी शबनम कहां है ?”

“बगल में एक और दरवाजा है” - बेताल शान्ति से बोला - “उसे खोलकर भीतर देखो ।”

अनिल झिझकता हुआ बगल के दरवाजे की ओर बढ़ा । उसने दरवाजे को धक्का दिया । दरवाजा बन्द नहीं था । वह भारी चरचराहट की आवाज करता हुआ खुल गया । अनिल ने डरते हुए कदम रखा ।

भीतर वाला कमरा बाहरी कमरे से छोटा था । उसमें भी एक दिया जल रहा था ।

भीतर उसे जो दृश्य दिखाई दिया, उससे उसकी आंखें फट पड़ी । उसके मुंह से एक तेज आवाज निकली और वह यूं बगोले की तरह बाहर की ओर भागा जैसे उसने भूत देख लिया हो ।

बेताल ने उसे बीच रास्ते में पकड़ लिया ।

“क्या हुआ ?” - बेताल ने पूछा ।

“भ. ..भू...भूत...” - अनिल आतंकित स्वर में बोला ।

“होश में आओ ।” - बेताल ने उसे झिंझोड़ा ।

अनिल के चेहरे पर जैसे राख पुती हुई थी । वह यू कांप रहा जैसे उसे जूड़ी का बुखार चढ़ गया हो ।

बेताल ने दीपक यथास्थान रख दिया और मजबूती से अनिल का हाथ थामे छोटे कमरे की ओर बढ़ा ।

अनिल बेताल की पकड़ से स्वयं को मुक्त न कर सका लेकिन भीतर का दृश्य दुबारा देखने की उसकी हिम्मत नहीं हुई । उसने आंखें बन्द कर लीं ।

भीतर कमरे में एक अति सुन्दर युवती अधर में लटकी हुई थी । वह कमरे के फर्श से छः फुट ऊंची फर्श से समानान्तर यूं लेटी हुई थी जैसे हवा में नहीं बिस्तर पर लेटी हुई हो । वह एकदम सफेद परिधान पहने हुए थी और उसके सुनहरी बाल नीचे लटक रहे थे ।

“आंखें खोलो ।” - बेताल ने अनिल को झिंझोड़ा ।

अनिल ने डरते डरते आंखें खोलीं ।

“यह शहजादी शबनम है ?” - बेताल ने पूछा ।

अनिल के मुंह से बोल नहीं फूटा । उसकी घिग्घी बन्धी हुई थी । उसने जल्दी से स्वीकारात्मक ढंग से सिर हिला दिया ।

बेताल अनिल को द्वार पर ही खड़ा छोड़कर आगे बढ़ा । उसने हवा में लटकी हुई शबनम के समीप जाकर उसका शरीर छुआ ।

शबनम की सांस बड़े व्यवस्थित ढंग से चल रही थी और वह बिलकुल सोई हुई मालूम हो रही थी ।

बेताल ने उसके शरीर के नीचे हवा में हाथ फिराया । कहीं कोई सहारा नहीं था । शबनम बिना किसी आधार के हवा में तैर रही थी ।

बेताल ने उसे जोर से झिंझोड़ा ।

शबनम की नींद नहीं टूटी ।

बेताल ने उसकी बांहें पकड़ी और सीधा करके जमीन पर उसके पांव टिका दिये ।

कुछ क्षण शबनम जमीन पर खड़ी रही फिर वह गैस भरे गुब्बारे की तरह जमीन से ऊपर उठने लगी ।

बेताल ने उसे हवा में पकड़ लिया । उसने उसे अपने कंधे पर लाद लिया । शहजादी के शरीर में जैसे भार ही नहीं था । वह उसे फूल सी हल्की लग रही थी ।

अनिल हक्का बक्का सा बेताल और शहजादी को देखा रहा था ।

बेताल शहजादी को उठाये इमारत से बाहर निकल आया । अनिल चाबी लगे खिलौने की तरह उसके पीछे पीछे चलता रहा ।

वे लोग गांव का परकोटा पार करके गांव से बाहर निकले आये ।

“घोड़े पर सवार हो जाओ ।” - बेताल ने आदेश दिया ।

"क...क...कहां जाना है ?" - अनिल हकलाता हुआ बोला ।

"समीप ही माम्बा गांव है" - बेताल बोला - "उस गांव का मुखिया मेरा दोस्त है । बाकी रात हम वहां गुजारेंगे । सुबह आगे बढ़ेंगे ।"

"शह...शहजादी का क...क्या होगा ?"

उसे कुछ नहीं हुआ है । यह नींद में है । जाग जायेगी तो ठीक हो जायेगी ।"

"इसे देखकर तो लगता है जैसे यह कई दिनों से सो रही हो ।"

"हो सकता है ।"

"और कई दिन जागने वाली न हो ।"

"जाग जायेगी ।"

"यह हवा में कैसे तैर रही थी ?"

"फालतू बातें मत करो । सब ठीक हो जायेगा । घोड़े पर सवार हो जाओ ।"

अनिल ने आज्ञा का पालन किया ।

बेताल शहजादी के साथ तूफान पर सवार हुआ । तूफान और शेरा आगे बढ़े ।

अनिल अपने घोड़े पर उनके पीछे चल दिया ।

एक घन्टे बाद वे माम्बा गांव में पहुंच गये ।

बेताल गांव के परकोटे के समीप बनी एक अकेली इमारत के सामने रुक गया ।

"यह इमारत मुखिया के मेहमानों के लिये है" - बेताल बोला - "इतनी रात गये मुखिया को जगाना बेकार है । रात हम यहीं आराम करेंगे ।"

अनिल चुप रहा । रह-रह कर उसकी भयभीत निगाहें शहजादी शबनम की ओर उठ जाती थीं । शहजादी दीन दुनिया से बेखबर बेताल के कन्धे से लगी सोई पड़ी थी ।

वे घोड़ों से उतरे ।

बेताल ने शहजादी को ले जाकर भीतर के कमरे में बिछे एक तख्तपोश पर लिटा दिया ।

शहजादी कुछ क्षण पीठ के बल फर्श पर लेटी रही । फिर धीरे धीरे उसका शरीर पलंग से ऊंचा उठने लगा । उसका शरीर हवा में तैरता हुआ ऊपर उठता गया और कमरे की छत से जा लगा । वहां जाकर शरीर स्थिर हो गया ।

अनिल के चेहरे से यूं लग रहा था जैसे वह बेहोश होने वाला हो । उसके नेत्र फटे पड़ रहे थे और जुबान तालू से जा चिपकी थी ।

बेताल ने उसे बांह पकड़कर कमरे से बाहर निकाला और कमरे का द्वार बाहर से बन्द कर दिया ।

"सो जाओ ।" - बेताल बाहर बरामदे में बिछी एक चारपाई पर लेटता हुआ बोला ।

अनिल मशीन की तरह दूसरी चारपाई पर लेट गया ।

बेताल सो गया ।

अनिल ने सारी रात आंख नहीं झपकी ।

बेताल की आंखें खुली ।

सवेरा हो गया था ।

उसने देखा अनिल चटाई पर बैठा था और मुंह बाए भीतरी कमरे की तरफ देख रहा था ।

दरवाजा भीतर से भड़भड़ाया जा रहा था और साथ ही एक स्त्री स्वर सुनाई दे रहा था - “दरवाजा खोलो ।”

“उठकर दरवाजा क्यों नहीं खोलते हो ?” - बेताल अनिल से बोला ।

“मैं...?” - अनिल भयभीत स्वर में बोला ।

“और कौन ?

“नहीं ।”

“क्यों ?”

“भ. ..भ.. .भूत ।”

“पागल हो ।” - बेताल बोला । उसने उठकर दरवाजा खोल दिया ।

सामने शहजादी खड़ी थी ।

“यह क्या हरकत हुई ।” - शहजादी तमतमाये स्वर में बोली - “मुझे किसने बन्द किया था ?”

“यह गलती मुझसे हुई थी ।” - बेताल सिर नवाकर बोला ।

“तुम कौन हो ?”

“बन्दे को वाकर कहते हैं ।”

“बड़ा अजीब नाम है ।” - शहजादी बोली । उसी क्षण उसकी निगाह चटाई पर बैठे अनिल पर पड़ी । अनिल पत्थर की प्रतिमा की तरह स्थिर उसे घूर रहा था ।

“तुम !” - वह हैरानी से बोली - “तुम यहां कैसे ?”

“मैं...मैं...मैं...” - अनिल हकलाया - “शबनम, तुम ठीक हो ?”

“मैं ठीक हूं ।” - शहजादी हैरानी से बोली - “यह क्या सवाल हुआ । क्या हुआ था मुझे । और मैं यहां कैसे पहुंच गई । मैं तो करीबो के मठ में रहती थी । और यह नकाबपोश कौन है जो अपना नाम वाकर बताता है ?”

“यह....ये मेरे दोस्त हैं । ये तुम्हें ढूंढने में मेरी मदद कर रहे थे ।”

“मुझे ढूंढने में ?”

“हां । शबनम, विदेश से लौटने के बाद मुझे मालूम हुआ था कि तुम्हरे पिता राजा युद्धवीर सिंह से जबरदस्ती तुम्हारी शादी कर देना चाहते थे, इसलिये तुम घर से भाग निकली थी । मैंने तुम्हें खोज निकालने का बीड़ा उठाया था । अगर इन साहब ने मेरी मदद न की होती तो मैं कभी तुम्हें तलाश करने में कामयाब न हो पाता ।”

"लेकिन मैं करीबो के मठ से यहां कैसे पहुंच गई ? मुझे याद है मैं थोड़ी देर पहले सोई थी ।"

"थोड़ी देर पहले ?"

"हां, तेरह तारीख की रात को मैं अटवारी गांव पहुंची थी । रात को बहुत देर तक करीबो से बातें होती रही थीं । वह मुझे देवी समझ रहा था और बार बार मुझे प्रणाम कर रहा था । बाद में मैं सो गई थी । नींद खुली तो मैंने अपने आप को यहां पाया ।"

"मैडम" - बेताल धीरे से बोला - "आज इक्कीस तारीख है ।"

"पागल हो गये हो क्या ?"

"शबनम, वाकई आज इक्कीस तारीख है ।"

"यानी कि मैं...यानी कि मैं...।" - शबनम के नेत्र फैल गये - "हे भगवान !"

"तुम आठ दिन सोई रही हो ।" - बेताल बोला ।

"हे भगवान !"

"और करीबो के मठ में हमने तुम्हें हवा में तैरते पाया था ।"

"असम्भव ।"

"शबनम, विश्वास मानो । तुम में अवश्य कोई अमानवीय शक्ति आ गई है । तुम हवा में तैर सकती हो ।"

"मैं नहीं मानती ।"

"हुआ क्या था ? जुमाला तुम्हें करीबो के गांव में ले कर गया था न ?"

"हां । करीबो मुझे सचमुच ही देवी समझ बैठा था । गांव के सारे निवासी मुझे जमीन पर लेट-लेटकर प्रणाम करने लगे थे । गांव वालों ने करीबो के कहने पर जुमाला को गांव से खदेड़कर भगा दिया था और करीबो मुझे मठ में ले आया था । वहां काफी देर हम बातें करते रहे थे । लेकिन बातों में करीबो ने अपनी मन्त्र विद्या मुझे देने का एक बार भी जिक्र नहीं किया था । फिर मैं सो गई थी ।

मेरी आंख खुली तो मैंने अपने आपको इस कमरे में बन्द पाया ।

"""यानी कि करीबो ने तुम्हें कोई मन्त्र-विद्या नहीं दी ?"

"यही नहीं, उसने ऐसा कोई जिक्र तक नहीं किया । और मिस्टर अगर तुम समझते हो कि मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास हो गया है कि आज इक्कीस तारीख है और मैं गैस के गुब्बारे की तरह बिस्तर से उड़कर छत से जा लगा थी, तो यह तुम्हारी भूल है ।"

"यह युवक सच कह रहा है ।" - बेताल गम्भीर स्वर से बोला - "अगर आप तेरह तारीख को सोई थीं तो वाकई आप करीबो के मठ में आठ दिन तक लगातार सोई रही हैं और हमने आपको वहां हवा में ऊपर लटकी हुई पाया था ।"

"मैं नहीं मानती ।" - शबनम अविश्वासपूर्ण स्वर से बोली ।

"आप स्वयं में कोई अन्तर महसूस नहीं करतीं ?"

"कैसा अन्तर ?"

"जैसे आप महसूस करती हों कि आपमें कोई अमानवीय शक्ति आ गई है । आप उड़ सकती हैं, आप..."

"मुझे ऐसा कुछ महसूस नहीं हो रहा है । मुझे नहीं लगता कि मैं उड़ सकती हूं । और मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग मुझे यहां क्यों ले आए हो ? मुझे करीबो के मठ में होना चाहिए ।"

"करीबो मर चुका है ।"

"क्या ?"

"हां । पिछली रात जब हम करीबो के मठ में घुसे थे तो हमने करीबो को वहां मरा पाया था । उसकी लाश को कीड़े खा रहे थे । साफ जाहिर होता था कि उसे मरे कई दिन हो चुके थे और आप भीतरी कमरे में हवा में ऊपर लटकी सोई पड़ी थीं ।"

"लेकिन कल तक तो करीबो जिन्दा था ।"

"करीबो कल नहीं, आठ दिन पहले जिन्दा था । इतना अरसा आप सोई रही हैं ।"

"मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं ।"

बेताल ने कन्धे झटकाए ।

"अनिल ।" - शबनम बोली - "यह आदमी सच कह रहा है ?"

"एकदम सच कह रहा है ।" - अनिल बोला - "मैंने खुद तुम्हें हवा में तैरते देखा था ।"

"यानी कि नकाबपोश के साथ तुम्हारा भी दिमाग फिर गया है ।"

"लेकिन शबनम..."

उसी क्षण एकाएक शेरा जोर-जोर से भौंकने लगा ।

उन्होंने देखा, सामने जंगल की ओर से कई घुड़सवार धूल उड़ाते हुए उधर ही भागे आ रहे थे ।

बेताल सतर्क हो गया ।

पलक झपकते ही लगभग पन्द्रह घुड़सवार उनके सामने इकट्ठे हो गए । सबके हाथों में रायफलें थीं । उन्होंने रायफलें बेताल, अनिल और शबनम की ओर तान दीं ।

घुड़सवारों का मुखिया एक बेहद मोटा और लम्बा चौड़ा आदमी था । उसके हाथ में पिस्तौल थी । वह पिस्तौल ताने बरामदे में चढ़ आया ।

"कोई अपनी जगह से नहीं हिले ।" - वह बोला ।

"कौन हो तुम ?" - बेताल ने गम्भीर स्वर में पूछा ।

"मेरा नाम दुर्जन है ।" - वह बोला - "मेरी दिलचस्पी तुम दोनों आदमियों में नहीं है । तुम चुप रहो । मुझे छोकरी से बात करने दो ।"

"खबरदार जो मुझे छोकरी कहा ।" - शबनम चिल्लाकर बोली ।

"और क्या तुम्हें छोकरा कहूं ?" - दुर्जन सिंह बोला और फिर यूं हो हो करके हंसने लगा जैसे उसने भारी मजाक की बात कह दी हो । उसके घुड़सवार साथी उसके साथ हंसने लगे ।

"इतना मत हंसो ।" - शवनम नफरत भरे स्वर से बोली - "हंसते हो तो तुम्हारा मटके जैसा पेट हिलने लगता है ।"

दुर्जन सिंह की हंसी को ब्रेक लग गई । उसने घूरकर शबनम की ओर देखा । बड़ी मुश्किल से उसने अपने क्रोध पर काबू पाया और फिर अपने स्वर में भरसक मिठास उत्पन्न करता हुआ बोला - "तुम शहजादी शबनम हो ?"

"हूं तो तुम्हें क्या ?"

""तुम रतनगढ के राजा विक्रम सिंह की लड़की हो ?"

"तुमसे मतलब ?"

दुर्जन सिंह ने एक बड़ा-सा इश्तहार निकाला । उस पर शहजादी शबनम की बड़ी-सी तस्वीर छपी हुई थी और नीचे राजा युद्धवीर सिंह की ओर से शहजादी को तलाश करके लाने वाले के लिये पचास हजार रुपये के इनाम की घोषणा छपी हुई थी । दुर्जन सिंह ने बड़ी गौर से इश्तहार की तस्वीर के साथ शहजादी की सूरत मिलाई और फिर सन्तुष्टिपूर्ण स्वर सें बोला - "यही है ।"

"क्या यही है ?" - शबमम बोली ।

"शहजादी ।" - दुर्जन सिंह बोला - "शायद तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हें तलाश करके लाने वाले के लिये राजा युद्धवीर सिंह की ओर से पचास हजार रुपये का इनाम घोषित किया जा चुका है । मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा और फिर वह इनाम मेरा होगा ।"

और उसने हाथ बढ़ाकर शबनम की बांह थाम ली ।

शबनम ने उसकी बांह झटक दी और चिल्लाकर बोली - "खबरदार जो मुझे हाथ लगाया ।"

दुर्जन सिंह हो हो करके हंसने लगा ।

अनिल ने एक कदम आगे बढ़ाया ।

"खबरदार ।" - दुर्जन सिंह पिस्तौल उसकी ओर तानता हुआ बोला - "अगर हिले तो गोली मार दूंगा ।"

अनिल ठिठक गया ।

बेताल चुपचाप खड़ा था । उसके संकेत पर शेरा चुपचाप गांव की ओर भाग निकला था । किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था । बेताल के कुत्ते को गांव का मुखिया पहचानता था । बेताल जानता था कि शेरा मुखिया और उसके आदमियों को वहां लिवा लाने में सफल हो जायेगा ।

"अगर इन दोनों आदमियों में से कोई दोबारा अपने स्थान से हिले" - दुर्जन सिंह अपने साथियों से बोला - "तो उसे फौरन गोली से उड़ा दो ।"

कई रायफलें बेताल और अनिल की ओर तन गईं ।

दुर्जन सिंह ने फिर मजबूती से शबनम की बांह थाम ली ।

शबनम चिल्लाई ।

"चुपचाप मेरे साथ चली चलो ।" - दुर्जन सिंह क्रूर स्वर से बोला - "वर्ना हाथ पांव बांधकर ले जाऊंगा ।"

शबनम ने बड़ी मुश्किल से अपनी हाथ छुड़ाया और दुर्जन सिंह से परे हटकर खड़ी हो गई ।

"कमीने !" - वह चिल्लाई - "कुत्ते ! मोटे ! भगवान करे तू अभी घास का ढेर बन जाए और घोड़ा तुझे खा जाए ।"

दुर्जन सिंह ने जोर का अट्टाहास किया लेकिन तत्काल ही उसकी हंसी को ब्रेक लग गई ।

फिर जैसे करिश्मा हो गया ।

दुर्जन सिंह के आसपास न जाने कहां से ढेर सारा घना सफेद धुआं प्रकट हुआ और दुर्जन सिंह उस धुएं में घिर गया । पलक झपकते ही सफेद धुंए ने दुर्जन सिंह को अपने आप में लपेट लिया । फिर एक जोर का धमाका हुआ और धुआं छंटने लगा ।

धुआं छंट गया लेकिन दुर्जन सिंह अपने स्थान पर नहीं था । वह गायब हो गया था । जहां वह खड़ा था उस स्थान पर एक घास का छोटा सा ढेर पड़ा था ।

अनिल के नेत्र फट पड़े ।

शबनम खुद दहशत भरी निगाहों से घास के गट्ठर को देख रही थी ।

बेताल के चेहरे पर भी गहरी हैरानी के भाव थे ।

घुड़सवारों में खलबली मच गई । वे आंख फाड़-फाड़कर कभी घास के ढेर को और कभी शबनम को देख रहे थे । उनकी आंखों के साममे केवल शबनम के कह देने भर से उनका सरदार घास का ढेर बन गया था । फिर एकाएक सबने अपने घोड़ों की लगामें खींची और वे एक दूसरे को रोंदते कुचलते वहां से भाग खड़े हुऐ ।

पलक झपकने की देर थी कि वहां पन्द्रह घुड़सवारों में से एक भी दिखाई नहीं दे रहा था ।

बेताल का घोड़ा तूफान जोर से हिनहिनाया । वह आगे बढ़ा और बरामदे में पड़े घास के ढेर को खाने लगा ।

"रोको ।" - एकाएक शबनम चिल्लाई - "रोको । घोड़े को रोको । यह दुर्जन सिंह को खा जायेगा ।"

"यह घास का ढ़ेर है ।" - बेताल धीरे से बोला ।

“यह दुर्जन सिंह है ।”

“यह अब घास का ढ़ेर है ।”

“दुर्जन सिंह तुम्हारे कहने भर से घास का ढ़ेर बन गया है ।” - अनिल बोला ।

“नहीं, नहीं ।” - शबनम भयभीत स्वर से बोली - “मेरे कहने से कुछ नहीं हुआ है । मेरे कहने से भला कुछ हो भी कैसे सकता है । मैं क्या कोई जादूगरनी हूं ।”

“आप जादूगरनी से भी बढ़कर हैं ।” - बेताल बोला - “वास्तव में हुआ यह है कि करीबो ने आपको अपनी शक्ति द्वारा सम्मोहन में बांधकर आपकी जानकारी के बिना अपनी तमाम देवी शक्तियां आप में पहुंचा दी हैं और वह स्वयं मर गया है । उस सम्मोहन की वजह से ही आठ दिन तक आपकी नींद नहीं टूटी थी । अब करीबो की सारी देवी शक्तियां आपमें हैं । आप जो चाहें कर सकती हैं । आपने देखा ही है कि आपके कहने भर से एक जीता जागता इंसान घास का ढ़ेर बन गया है ।”

“तुम पागल हो गये हो । मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है । अनिल तुम इस आदमी को समझाते क्यों नहीं हो कि मैं एक साधारण लड़की हूं । मुझमें ऐसी कोई शक्ति नहीं है ।”

“लेकिन मैंने खुद देखा है कि तुम्हारे कह देने भर से दुर्जन सिंह घास का ढेर बन गया था ।” - अनिल बोला ।

“यह झूठ है । यह घास का ढ़ेर यहां पहले से ही पड़ा होगा । और दुर्जन सिंह कहीं जाकर छप गया है ।”

“फिर आपने यह क्यों कहा था कि घोड़ा दुर्जन सिंह खा रहा है ?” - बेताल बोला ।

“पता नहीं मैंने ऐसा क्यों कहा था ।” - शबनम असहाय भाव से बोली - “शायद मेरा दिमाग खराब हो गया है । हे भगवान मुझे क्या हो गया है ।”

और वह सिसकियां भरने लगी ।

तूफान घास खा रहा था ।

उसी क्षण गांव की ओर से धुएं का एक गुबार सा उठा ।

बेताल ने देखा शेरा उसी ओर भागा आ रहा था । उसके पीछे सैकडों सशस्त्र आदिवासी थे ।

तब तक घोड़ा सारी घास चट कर चुका था ।

घोड़ा एकाएक जोर से हिनहिनाया और उसके मुंह से आवाज निकली - “शहजादी, मेरे साथ चलो । मैंने तुम्हें राजा युद्धवीर सिंह को सौंपकर पचास हजार रुपये का इनाम हासिल करना है ।”

“यह कौन बोला ?” - शबनम दहशत भरे स्वर से बोली ।

“घोड़ा ।” - बेताल बोला ।

शबनम ने विस्फारित नेत्रों से तूफान की ओर देखा ।

“जल्दी चलो ।” - घोड़ा बोला - “वर्ना मुझे तुमसे जबरदस्ती करनी पड़ेगी ।”

शबनम के मुंह से एक चीख निकली । उसके नेत्र उलट गये और वह वहीं जमीन पर ढ़ेर हो गई ।

अनिल उसकी ओर लपका ।

शबनम बेहोश हो गई थी ।

"तूफान !" - बेताल ने पुकारा ।

घोड़ा जोर से हिनहिनाया । इस बार उसके मुंह से आदमी जैसी आवाज नहीं निकली ।

बड़ी मुश्किल से अनिल शबनम को होश में ला सका ।

शबनम उठकर बैठ गई । वह आतंकित भाव से घोड़े की ओर देख रही थी ।

गांव वाले वहां पहुंच गये । सबसे आगे गांव का मुखिया था । उसके साथ गांव का ओझा जुमाला था । उनके पीछे सैकड़ों सशस्त्र आदिवासी थे ।

शेरा बरामदे में चढ़ गया और बेताल की टांगों के साथ अपना शरीर रगड़-रगड़कर गुर्राने लगा ।

"शाबाश शेरा ।" - बेताल बोला ।

मुखिया ने बेताल को प्रणाम किया और फिर आदरपूर्ण स्वर से बोला - "क्या हुआ था महाबली ?"

"कुछ गुण्डे यहां आ गए थे ।" - बेताल बोला - "वे इस लड़की को भगाकर ले जाना चाहते थे । लेकिन वे आप लोगों के आने से पहले ही भाग गये ।"

"कैसे ?" - मुखिया ने पूछा ।

"शायद डर गये ।"

"उनका सरदार इसके कहने से घास का ढ़ेर बन गया था ।" - अनिल बोल पड़ा - "और वे लोग डरकर भाग गये थे ।"

"किसके कहने पर ?" - मुखिया हैरानी से बोला ।

"इसके कहने पर ।" - शहजादी जो अब तक उठकर अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी थी, अनिल उसकी ओर संकेत करता हुआ बोला - "शहजादी शबनम के कहने पर ।"

"यानी कि शहजादी शबनम ने कहा कि गुण्डों का सरदार घास का ढेर बन जाये ओर वह घास का ढ़ेर बन गया ?" - जुमाला ने पूछा ।

"हां ।" - अनिल बोला ।

"और घास का ढ़ेर कहां गया ?"

"उसे बेताल का घोड़ा तूफान खा गया ।"

जुमाला के नेत्र चमक उठे ।

मुखिया ने संशक भाव से पहले शबनम की ओर फिर तूफान को देखा और फिर बेताल से सम्बोधित हुआ - "क्या यह सच है महाबली ?"

"हां ।" - बेताल को स्वीकार करना पड़ा ।

मुखिया ने आगे बढकर शबनम को दण्डवत प्रणाम किया ।

शबनम घबराकर अनिल की ओर देखने लगी ।

"मूर्ख ।" - एकाएक घोड़े के मुंह से निकला - "इसको प्रणाम क्यों करता है । इसे पकड़कर राजा युद्धवीर सिंह के पास ले जा और पचास हजार रुपये का इनाम हासिल कर ।"

केवल भीड़ में आगे आगे खड़े कुछ आदिवासियों ने घोड़े को बोलते सुना और उनके होश उड़ गये । वह एकदम जमीन पर लेट गए ।

मुखिया भी भयभीत हो गया ।

केवल जुमाला सतर्कता की मूर्ति बना स्थिर खड़ा था ।

"तूफान !" - बेताल जोर से बोला ।

घोड़ा जोर से हिनहिनाया और शान्त हो गया ।

एकाएक जुमाला बरामदे में चढ गया और शबनम के समीप आकर बोला - "सुनहरे बालों वाली देवी !" - जुमाला आदरपूर्ण स्वर में शहजादी से बोला - "आशा है आप मुझे भूली नहीं होंगी ।"

"तुम कांम्बा गांव के ओझा जुमाला हो ।" - शबनम सहज स्वर में बोली - "तुम्हीं मुझे अटवारी गांव में करीबो के मठ में छोड़कर आये थे ।"

"ठीक !" - जुमाला शबनम के नेत्रों में झांकता हुआ बोला - "और आपने वादा किया था कि करीबो जो मंत्र विद्या आपको सिखाएगा, वह आप मुझे सिखायेंगी ।"

"हां ।"

"आपको अपना वादा याद है न ?"

"याद है ।"

"आप अपना वादा पूरा करेगी न ?"

"जरूर करूंगी ।"

"जुमाला...!" - एकाएक बेताल बोला - "बदमाश, तू शहजादी को अपने सम्मोहन में बांध रहा है ।"

"हा, हा हा ।" - एकाएक जुमाला ने एक गगनभेदी अट्टाहास किया - "बेताल ! बहुरूपिये, आज मुझे तुमसे अपना बदला लेने का मौका मिलेगा । काम्बा गांव के राजा को तुमने अपने बस में कर रखा है । राजा मेरी एक नहीं सुनता । वह पड़ौसी गांव वालों पर हमला करने का नाम नहीं लेता । आज मैं तुम्हें अपने रास्ते से हटाऊंगा । आज काम्बा गांव के लोग खुद अपनी इच्छा से काम्बा गांव के कुलदेवता के सामने तुम्हारी बलि चढ़ायेंगे ।"

तब तक राजा उठ खड़ा हुआ था ।

"ओझा !" - राजा क्रोधित स्वर में बोला - "क्या बकता है ?"

"मैं कुछ नहीं बकता ।" - ओझा चिल्लाकर बोला - "यह देवी की इच्छा है । देवी से पूछो ।"

"राजा..!" - बेताल बोला - "इस सिरफिरे आदमी की बातों में मत आओ । यह ओझा आरम्भ से मेरा दुश्मन है । यह मुझे अपने रास्ते से हटाना चाहता है । इसने शहजादी को अपने सम्मोहन में बांधा हुआ है । अगर ओझा के कहने से तुमने मेरी हत्या करवा दी तो याद रखो यह ओझा तुम्हारा और तुम्हारे कबीले का सर्वनाश करके छोड़ेगा ।"

"बेताल गांव के लोगों का दोस्त है ।" - राजा बोला - "ओझा, होश में आ । अगर फिर तुमने महाबली बेताल के बारे में कोई उल्टी-सीधी बात कही तो मैं तुम्हारी जुबान कटवा दूंगा ।"

"राजा !" - ओझा गरजा - "अगर मेरी बात नहीं मानेगा तो देवी का प्रकोप तुझ पर टूट पड़ेगा ।"

"राजा !" - बेताल बोला - "अगर इजाजत हो तो बदमाश के होश ठिकाने लगा दूं ?"

"जैसा ठीक समझो, करो महाबली ।" - राजा बोला ।

बेताल ओझा की तरफ बढ़ा ।

ओझा भयभीत हो गया ।

"देवी !" - एकाएक वह शबनम से बोला - "इस नकाबपोश को हाथ-पांव हिलाने से अयोग्य कर दो ।"

"नकाबपोश हाथ पांव हिलाने के योग्य न रहे ।" - शबनम यूं बोली जैसे वह स्वप्न में बड़बड़ा रही हो ।

आगे बढता हुआ बेताल वहीं अपने स्थान पर जड़ हो गया । भरपूर कोशिश करने के वावजूद भी वह अपने हाथ पांव नहीं हिला पा रहा था ।

"मैं अपने हाथ पांव नहीं हिला सकता ।" - बेताल के मुंह से निकला ।

"शबनम...!" - अनिल तीव्र स्वर में बोला - "यह क्या किया तुमने ?"

"चुप रह लड़के..." - ओझा चिल्लाया - "वर्ना तेरी बेताल से भी बुरी हालत होगी ।"

अनिल चुप हो गया । वह देख रहा था कि शबनम पूरी तरह से ओझा के वश में थी ।

"राजा !" - ओझा बोला - "देखा, देवी का प्रकोप ! यह बेताल बुरा नहीं होता तो क्या देवी उसकी ऐसी हालत बनाती ? क्या तुम भी देवी के कोप का भाजन बनना चाहते हो ?"

"देवी !" - राजा आर्तनाद करता हुआ बोला - "रहम ! रहम !"

"गांव वालों" - ओझा गरमाकर बोला - "देवी को दण्डवत् प्रणाम करो ।"

राजा समेत सारे गांव वाले जमीन पर लेट गए ।

"उठो ।" - ओझा ने आदेश दिया ।

सब उठकर खड़े हो गये ।

“देवी !” - ओझा शबनम की आंखों में झांकता हुआ बोला - “बेताल बुरा आदमी है न ?”

“बेताल बुरा आदमी है ।” - शबनम भावहीन स्वर में बोली ।

“गांव वालों को बताओ कि सबके हित के लिये काम्बा गांव के कुलदेवता के सामने बेताल की बलि चढ़ाना जरूरी है ।”

“काम्बा गांव के कुलदेवता के सामने बेताल की बलि चढ़ाना जरूरी है ।” - शबनम बोली ।

“नहीं ।” - अनिल आतंकित स्वर से चिल्लाया ।

“चुप रह नौजवान ।” - ओझा कड़ककर बोला - “वर्ना देवी तेरी बेताल से भी बुरी हालत करेगी ।”

अनिल ने आशापूर्ण नेत्रों से शबमम को देखा लेकिन शबमम तो ओझा के सम्मोहन से बंधी हुई थी । उसमे अनिल की ओर निगाह भी नहीं उठाई ।

अनिल के चेहरे पर क्रोध और विवशता के भाव उभर आये । वह चुप रहा ।

“बेताल को गांव में ले चलो ।” - ओझा ने आदेश दिया ।

कुछ आदिवासी भयभीत से आगे बढ़े ।

“शेरा !” - बेताल ने अपने कुत्ते को ललकारा ।

बेताल का वफादार कुत्ता शेरा बेताल का मंतव्य समझ गया । वह एक बार जोर से गुर्राया और फिर दांत निकाले ओझा पर झपटा ।

ओझा के मुंह से एक भयभरी चीख निकली ।

“देवी ! बचाओ !” - ओझा ने आर्तनाद किया - “कुत्ते को रोको ।”

“कुत्ते...!” - शबनम बोली - “रुक जा ।”

कुत्ते के जैसे हाथ-पांव बन्ध गये । वह तत्काल रुक गया ।

“इसको कबूतर बना दो ।” - ओझा बोला ।

“कुत्ते ! कबूतर बन जा !” - शबनम बोली ।

कुत्ते के आसपास ढ़ेर सारा सफेद घना धुआं प्रकट हुआ । लोगों के देखते-देखते कुत्ता धुयें में गायब हो गया । फिर एक जोरदार घमाका हुआ और धुंआ छंटने लगा । जब धुंआ छंटा तो कुत्ता वहां से गायब था और उसके स्थान पर एक कबूतर पर फड़फड़ा रहा था ।

आदिवासियों की आंखें फट पड़ी । वे थर-थर कांपने लगे ।

“बेताल को गांव में ले चलो ।” - ओझा चिल्लाया ।

चार आदिवासी आगे बढे । उन्होंने हिलने-डुलने से लाचार बेताल को उठाकर घोड़े पर बैठा दिया ।

“यह क्या मजाक है...?” - घोड़ा नाराजगी भरे स्वर में बोला - “मेरे ऊपर किसे बिठा रहे हो ?”

आदिवासियों के चेहरे भय से विकृत हो उठे ।
ओझा के डर से वह थर-थर कांपते हुए बेताल को घोड़े पर बिठाये रहे ।
सफेद कबूतर जो कुछ क्षण पहले शेरा था, बेताल के सिर पर उड़ रहा था ।
"आओ देवी ।" - ओझा सम्मानपूर्ण स्वर से बोला ।
शबनम यन्त्र-चलित सी आगे बढ़ी ।
"राजा !" - ओझा बोला - "देवी का मार्ग-निर्देशन करो ।"
राजा कांपता हुआ आगे बढ़ा ।
सब लोग गांव को ओर बढ़े ।
आदिवासियों की भीड़ में अनिल भी गांव की ओर चल पड़ा ।

***

रात हो गई ।

काम्बा गांव के सारे आदिवासी गांव के बीच में बने एक बहुत बड़े मैदान में एकत्रित थे । मैदान के बीच में पत्थरों को काटकर बनाई हुई लगभग एक फुट ऊंची काम्बा गांव के कुल-देवता की प्रतिमा थी । उस प्रतिमा के सामने बेताल की चिता बनाई गई थी । बेताल के शरीर पर कई प्रकार के सुगंधित पदार्थों का लेप किया गया था । और फिर उसे चिता के ऊपर के लकड़ी के खम्भे के साथ बांधकर खड़ा कर दिया गया था ।

कुल-देवता की प्रतिमा के सामने मैदान के सिरे पर एक ऊंचा मंच था । मंच पर राजा, उसके परिवार के लोग, शबनम और ओझा जुमाला विराजमान थे ।

अनिल मंच के नीचे आदिवासियों की भीड़ में खड़ा था ।

कुल-देवता की प्रतिमा के सामने विचित्र प्रकार के परिधान पहने आदिवासी स्त्री-पुरुष झूम-झूमकर नाच रहे थे ।

सारा मैदान सशस्त्र आदिवासी सैनिकों ने घेरा हुआ था ।

मैदान से बाहर घोड़ा खड़ा था । उसकी पीठ पर सफेद कबूतर बना शेरा बैठा था ।

ओझा मंच पर खड़ा हुआ और गला फाड़कर बोला - "देवी का आदेश है कि बली की रसम आरम्भ
हो ।"

उसी क्षण कहीं से एक तीर सनसनाता हुआ आया और ओझा के कान से केवल दो इंच परे स्थित एक लकड़ी के खम्बे में गड़ गया ।

ओझा को जैसे सांप सूंघ गया ।

"गांव को सशस्त्र बानर बौनों ने घेर लिया है ।" - कोई चिल्लाया ।

सभा में सन्नाटा छा गया ।

राजा भयभीत सा अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ । उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई ।

मैदान के चारों सिरों पर सैकड़ों बानर बौने मौजूद थे । उनके जहर से मुझे तीर कमान पर चढे हुए थे ।

बानर बौनों की शक्ति से सारा काम्बा गांव परिचित था । वे यह भी जानते थे कि बानर बौने बेताल के रक्षक थे । बेताल को हानि पहुंचाने की कोशिश करने वालों का वे समूल नाश कर देते थे ।

आदिवासी भयभीत हो उठे । उन्हें अनुभव होने लगा कि बेताल को पकड़कर उन्होंने भारी मुसीबत मोल ले ली थी ।

"गांववासियो !" - ओझा चिल्लाया - "हमला करने वालों पर टूट पड़ो ।"

कोई आदिवासी अपने स्थान से हिला भी नहीं ।

"आदिवासियो !" बानर बौनों का सरदार बोला - "पहले महाबली बेताल को बन्धनमुक्त करके हमारे पास ले आओ । फिर तुम्हारे लिए और तुम्हारे विवेक-हीन राजा के लिए सजा सोची जायेगी ।"

कई आदिवासी बेताल को बन्धन-मुक्त करने के लिए आगे बढ़े ।

"खबरदार !" - ओझा चिल्लाया - "कायरो, दुश्मन का मुकाबला करो ।"

"ओझा !" - बानर बौनों का सरदार बोला - "अपनी जान की खैर चाहता है तो अपनी जुबान बन्द रख ।"

ओझा ने देखा आदिवासी बानर बौनों से इतने भयभीत थे कि वे किसी कीमत पर उनके विरुद्ध शस्त्र उठाने को तैयार नहीं थे ।

"ठीक है, कायरो ।" - ओझा गरजा - "देवी की शक्ति से जुमाला अकेला बानर बौनों की पूरी सेना का मुकाबला करेगा ।"

"ओझा ।" - राजा दबे स्वर से बोला - "हमने बेताल को पकड़कर भारी भूल की है । बेताल को मुक्त करके उससे क्षमा मांगने से ही हमारा सर्वनाश होने से बच सकता है ।"

"बको मत ।" - ओझा दहाड़ा ।

"ओझा" - बानर बौनों का सरदार बोला - "क्यों अपनी मौत बुला रहा है । क्यों अपने साथ-साथ गांव वालों का भी सर्वनाश कर रहा है ।"

"बौनों ।" - ओझा जोर से अट्टाहास करके बोला - "तुम मेरी शक्ति से परिचित नहीं हो । अभी देखो मैं तुम्हारी क्या गत बनाता हूं ।" - ओझा देवी की ओर घूमा - "देवी, ये बानर बौने हमारे शत्रु हैं और हम पर यह आक्रमण करके हमारा समूल नाश करने आये हैं । आदेश दो कि वे सब पत्थर की प्रतिमायें बन जायें ।"

"सब बानर बौने पत्थर की प्रतिमायें बन जाएं ।" - शबनम ने आदेश दिया ।

बानर बौनों के हाथ उठे के उठे रह गए । उनके जहर से मुझे तीर कमानों पर चढे के चढ़े रह गये ।

शबनम के कहने की देर थी कि वे सब पत्थर की प्रतिमा बन गये ।

आदिवासियों में हाहाकार मच गया । वे थरथर कांपते हुए जमीन पर लेट गये ।

बेताल परेशान था । उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उस कठिनाई से कैसे निकले ।

अनिल के तो जैसे होश ही उड़ गये थे । वह मुंह उठाए खड़ा सब तमाशा देख रहा था ।

"उठो ।" - ओझा ने आदेश दिया ।

सब उठकर खड़े हो गये । उनके हाथ जुड़े हुए थे और सिर झुके हुए थे ।

राजा के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं ।

ओझा ने एक विजेता की तरह चारों ओर दृष्टि दौड़ाई ।

"नृत्य आरम्भ करो ।" - ओझा ने आदेश दिया ।

तुरन्त आदिवासी बेताल की चिता के आसपास झूम झूमकर नाचने लगे ।

आधी रात को ओझा के आदेश पर नृत्य बन्द हुआ ।

"अब बेताल की बलि का समय आ गया है ।" - ओझा ने घोषणा की - "देवी स्वयं अपने हाथों से बेताल की चिता में आग लगायेंगी । आइये देवी ।"

ओझा, शबनम और राजा मंच से उतरे । वे बेताल की चिता की ओर बढे । आदिवासियों की भीड़ उनके लिए रास्ता बनाने के लिए काई की तरह फटती चली गई ।

वे लोग चिता के पास पहुंचे ।

ओझा विचित्र सी भाषा में जोर-जोर से कोई मन्त्र बोलने लगा । कुछ देर वह मन्त्र बोलता रहा फिर बस दो कदम पीछे हट गया और शबनम से बोला - "चिता में आग दो, देवी ।"

किसी ने शबनम के हाथ में एक जलती हुई मशाल थमा दी ।

शबनम हाथ में मशाल लेकर आगे बढी ।

"नहीं ! नहीं !" - अनिल गला फाड़कर और चिता की ओर दौड़ा ।

"पकड़ लो इसे ।" - ओझा चिल्लाया ।

दो आदिवासियों ने अनिल को पकड़ लिया ।

अनिल ने बहुत हाथ-पांव मारे लेकिन वह उनके बन्धन से मुक्त नहीं हो सका ।

शबनम जलती मशाल हाथ में लिए चिता के एकदम पास आ खड़ी हुई ।

"शबनम !" - अनिल गला फाड़कर चिल्लाया - "भगवान के लिये ऐसा मत करना । अगर तुमने बेताल की जान ली तो जीवन भर पछताओगी । बेताल भला इन्सान है । यह ओझा बदमाश है । अगर कोई अहित करना है तो इसका करो ।"

"इस मूर्ख छोकरे की जुबान बन्द करो ।" - ओझा क्रोधित स्वर से बोला ।

एक आदिवासी ने अनिल के मुंह में कपड़ा ठूंस दिया ।

"चित्ता में आग लगाओ, देवी ।" - ओझा मीठे स्वर में बोला ।

शबनम का मशाल वाला हाथ आगे बढ़ा ।

उसी क्षण चिता की लकड़ियों में से एक बिच्छू निकला और शबनम के पैर पर चढ़ गया । शबनम ने पैर को धीरे से झटका लेकिन बिच्छू वहां से अलग नहीं हुआ और फिर इससे पहले कि शबनम बिच्छू को देख पाती, बिच्छू ने डंक मार दिया ।

शबनम पीड़ा से बिलबिला उठी । मशाल उसके हाथ से छूट गई और उसने अपना पांव थाम लिया । बिच्छू के काटने से जो भयंकर पीड़ा शबनम के शरीर में हुई उससे ओझा का शबनम पर किया सम्मोहन टूट गया । शबनम ओझा के प्रभाव से मुक्त हो गई ।

"देवी ।" - ओझा बोला - "मशाल उठाओ और चिता में आग लगा दो ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि हमने काम्बा गांव के कुल-देवता को बेताल की बलि देनी है ।"

"बलि नहीं होगी ।"

"पगली, बलि नहीं हुई तो देवता नाराज हो जायेंगे ।" - ओझा सकपकाकर बोला । उसे दाल में काला दिखाई दे रहा था । वह शबनम को अपने सम्मोहन में नहीं बांध पा रहा था ।

"बलि नहीं होगी ।" - शबनम पीड़ा से बिलबिलाती हुई बोली - "यह क्या बकवास है । तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम एक आदमी को जिन्दा जलाने की सोच रहे हो । इसे चिता से बाहर निकालो ।"

आदिवासियों में सन्नाटा छा गया ।

"लेकिन देवी ।" - राजा हकलाता हुआ बोला - "आप ही ने तो कहा था कि बेताल को कुलदेवता की बलि चढ़ाया जाना चाहिये ।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा । मुझे तुम्हारा सिर फिर गया मालूम होता है । इस आदमी को फौरन चिता से उतारो और कोई मेरे पांव को देखो । मुझे किसी जहरीले कीड़े ने काट खाया है ।"

लोग दुविधा में पड़ गये । उन्हें समझ नहीं रहा था कि वे क्या करें ।

"अरे सुना नहीं तुम लोगों ने ?" - शबनम चिल्लाई - "इस आदमी को चिता से उतारो और कोई मेरा पांव देखो ।"

"देवी ।" - ओझा प्रभावशाली स्वर से बोला - "बलि होगी ।"

"अरे बूढ़े चूहे, मैंने कहा न बलि नहीं होगी । बदमाश तू यूं हत्या करेगा तो फांसी पर लटक जायेगा ।"

अब असली शबनम सोच रही थी । वह जंगली लोगों को शहर का कानून बता रही थी जो कि भैंस के आगे बीन बजाने जैसा था ।

"बलि अवश्य होगी ।" - ओझा दहाड़ा - "अगर कुलदेवता का आहार छीना गया तो हम सबका सर्वनाश हो जायेगा । मैं चिता में आग लगाऊंगा ।"

ओझा ने जमीन से जलती हुई मशाल उठा ली और चिता की ओर बढ़ा ।

"हे भगवान !" - शबनम पीड़ा से बिलबिबाती हुई बोली - "कैसा मरदूद आदमी है यह । इसे तो आदमी की जगह गधा होना चाहिए था ।"

शबनम के मुंह से ये शब्द निकलने की देर थी कि ओझा के आसपास ढ़ेर सारा घना सफेद धुंआ प्रकट हुआ और ओझा उस धुएं में घिर गया ।

ओझा आतंकित भाव से जोर से चिल्लाया ।

सफेद धुएं ने ओझा को अपने आपमें लपेट लिया । फिर एक जोरदार धमाका हुआ और धुआं छंटने लगा ।

धुआं छट गया । ओझा गायब हो चुका था । उसके स्थान पर एक गधा खड़ा था ।

आदिवासी सकते की सी हालत में खड़े रहे ।

"कमाल है ।" - शबनम भयभीत स्वर से बोली - "मैंने कहा इसे आदमी नहीं गधा होना चाहिये था और यह सचमुच गधा हो गया ।"

उसी क्षण राजा की निगाह शहजादी के पैर पर पड़ी ।

शहजादी के पैर में से खून बह रहा था और पैर के समीप ही एक बिच्छू रेंग रहा था ।

राजा फुर्ती से आगे बढ़ा । उसने बिच्छू को अपने पैरों से कुचल दिया । फिर राजा ने एक आदिवासी को अपनी भाषा में कुछ आदेश दिया ।

आदिवासी कमान से छूटे तीर की तरह वहां से भागा । दो मिनट से भी कम समय में वह वापिस आ गया । उसके हाथ में एक छोटी-सी डिबिया थी ।

राजा ने डिबिया खोलकर उसमें से एक काला सा लेप निकाला और उसे शहजादी के पैर पर मल दिया ।

शहजादी के पैर से रक्त बहना बन्द हो गया और उसकी पीड़ा भी हवा हो गई ।

उसने अपने आसपास दृष्टि दौड़ाई ।

दूर उसे दो आदिवासियों के बन्धन में अनिल दिखाई दिया ।

"छोड़ो उसे ।" - वह बोली ।

तत्काल अनिल को स्वतन्त्र कर दिया गया ।

अनिल लपकता हुआ शहजादी के पास पहुंचा ।

"शबनम ।" - वह बोला - "बेताल को स्वतन्त्र करवाओ ।"

"बेताल को चिता से नीचे उतारा जाये ।" - शहजादी बोली ।

राजा ने शहजादी के आदेश को दोहराया ।

पलक झपकते ही बेताल को चिता से उतार लिया गया लेकिन वह अपने हाथ पांव अभी भी नहीं हिला सकता था ।

"वह ओझा बदमाश था ।" - शहजादी बोली - "उसी की वजह से ऐसा सम्भव हुआ । अच्छा हुआ वह मर गया ।"

"मैं अपने हाथ पांव नहीं हिला सकता ।" - बेताल बोला ।

"क्यों ?" - शहजादी हैरानी से बोली ।

"क्योंकि ओझा के कहने पर आपने कहा था कि मैं अपने हाथ पांव हिलाने के योग्य न रहूं ।"

"मैंने कहा था ?"

"जी हां ।"

"मैं भला ऐसा क्यों कहती ?"

"क्योंकि ओझा ने आपको अपने सम्मोहन में बांधा हुआ था । आप अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर रही थीं । ओझा आपसे अपनी मनमानी करवा रहा था ।"

"कमाल है । अगर मेरे कहने से तुम हाथ पांव हिलाने से अयोग्य हो गये हो तो मेरे कहने से तुम्हें हाथ पांव हिलाने में समर्थ भी हो जाना चाहिये ।"

"जी हां ।"

"तुम अपने हाथ पांव हिलाने के योग्य हो जाओ ।"

तत्काल बेताल ने अनुभव किया कि उसके हाथ पांव चलने लगे थे ।

बेताल ने घूरकर राजा की ओर देखा ।

राजा भयभीत हो गया ।

"मेरा कोई दोष नहीं था महाबली ।" - वह हकलाता हुआ बोला - "उस बदमाश ओझा की वजह से ही सब कुछ हुआ ।"

"राजा !" - बेताल गम्भीरता से बोला - "इन आदिवासियों के कबीले के राजा तुम हो, ओझा नहीं । एक राजा को यह शोभा नहीं देता कि वह किसी दूसरे के हाथों की कठपुतली बन जाये ।"

"मैं अपने कृत्य से शर्मिन्दा हूं ।"

"आशा है भविष्य में तुम विवेक से काम लोगे । अपना और अपने कबीले का भला-बुरा खुद पहचानने की आदत डालोगे ।"

"दुबारा कोई गलती नहीं होगी, महाबली ।" - राजा सिर नवा कर बोला ।

"शहजादी !" - बेताल शहजादी से बोला - "अब तो आपको विश्वास हो गया कि आप में अमानवीय शक्तियां हैं । अटवारी गांव के मठ का महन्त करीबो आपकी जानकारी के बिना आपकी निद्रा की दशा में ही अपनी सारी दैवी शक्तियां आपको दे गया है । और आप जो कहती हैं वह हो जाता है ।"

"ऐसा ही लगता है ।" - शहजादी धीरे से बोली ।

"आपके कह देने भर से दुर्जन सिह घास का ढेर बन गया और घास को मेरा घोड़ा तूफान खा गया । आपके कहने से मैं हाथ पांव हिलाने से अयोग्य हो गया । आप के कहने

से मेरा कुत्ता शेरा, कबूतर बन गया । आप के कहने से मेरी सहायता के लिये आए तमाम बन्दर बौने, पत्थर की प्रतिमाएं बन गए । आपके कहने से ओझा जुमाला गधा बन गया ।"

"यह सब कुछ मेरे कहने से हुआ ?"

"जी हां ।"

"तो फिर अब मुझे क्या करना चाहिए ?"

"आप कहिए कि हर कोई अपनी पहले जैसी स्थिति में आ जाए ।"

"हर कोई अपनी पहले जैसी स्थिति में आ जाए ।" - शबमम बोली - "केवल ओझा जुमाला जैसा है वैसा ही रहे ।"

गधा जोर से रेंका ।

आकाश में उड़ता हुआ सफेद कबूतर बेताल के पैरों के समीप आकर बैठ गया । कबूतर के आस पास धुआं प्रकट हुआ । एक जोरदार धमाका हुआ । कबूतर गायब हो गया । उसके स्थान पर शेरा दिखाई देने लगा । वह जोर जोर से हांफने लगा और बेताल की टांगों से अपना शरीर रगड़ने लगा ।

तूफान जोर से हिनहिनाया । उसके मुंह से धुएं के बादल निकलने लगे । धुआं उसके सामने इकट्ठा होने लगा । थोड़ी देर बाद उसके मुंह से धुंआ निकलना बन्द हो गया । एक जोर का धमाका हुआ । धुंआ गायब हो गया । उसके स्थान पर दुर्जन सिंह खड़ा दिखाई देने लगा ।

दुर्जन सिंह ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई । हर ओर उसे आदिवासी-ही-आदिवासी दिखाई दिए । उसके मुंह से एक आतंक भरी चीख निकली और वह सरपट गांव से बाहर की ओर भाग निकला ।

घोड़ा फिर हिनहिनाया ।

मैदान को चारों ओर से घेरे खड़े बानर बौने भी पुन: अपनी वास्तविक स्थिति में आ गये । उनके जहर से बुझे हुए तीर कमानों पर चढ़े हुए थे । लेकिन अब उन्हें महाबली बेताल चिता में खड़ा दिखाई नहीं दे रहा था ।

और न ही कहीं वह बदमाश ओझा दिखाई दे रहा था ।

बानर बौनों को तत्काल अनुभव हो गया कि लड़ाई की जरूरत नहीं रही । उनका सरदार आगे बढ़ा और महाबली बेताल के समीप आ खड़ा हुआ ।

बेताल ने उसे समझा दिया कि विपत्ति की स्थिति टल गई थी ।

आदिवासी यू जड़ खड़े थे जैसे उन्हें लकवा मार गया था । अपने सारे जीवन में एक साथ इतने चमत्कार उन्होंने कभी नहीं देखे थे ।

"राजा ।" - बेताल बोला - "माम्बा गांव के वासियों को दुष्ट ओझा के कुप्रभाव से मुक्ति मिली है । क्यों न इसी खुशी में जश्न मनाया जाये और सबके भोज का प्रबन्ध किया जाए ।"

"जरूर जरूर ।" - राजा खुशी से दमकता हुआ बोला ।

***

बानर बौनों की सुरक्षा में अनिल और शबनम को जंगल के बाहर पहुंचा दिया गया ।

वे दोनों रतनगढ़ पहुंचे ।

शबनम के लिये अब अपने पिता या राजा युद्धवीर सिंह से पार पाना कठिन काम नहीं था । वह जानती थी कि वह अपनी दैवी शक्ति के दम पर अपने पिता का उसकी राजा युद्धवीर सिंह से शादी करने का इरादा एकदम बदल सकती थी ।

वह राजा विक्रम सिंह के पास पहुंची और होठों में बुदबुदाई - "मेरे पिता को मुझसे कोई शिकायत न रहे ।"

राजा विक्रम सिंह जो कि अपनी बेटी पर बिफरे पड़ रहे थे एकदम शान्त हो गये । उन्होंने बड़े प्यार से शबनम को गले लगाया और स्वयं ही उससे बोला - "बेटी, मैंने राजा युद्धवीर सिंह के हाथ में तेरा हाथ देने का इरादा छोड़ दिया है । अब मैं तेरी शादी उसी से करूंगा जिसे तू पसन्द करेगी ।"

"पिता जी ।" - शबनम सिर झुकाकर बोली - "आप मेरे लिये जो लड़का पसन्द करेंगे, मुझे वही स्वीकार होगा ।"

मन ही मन वह बोली - "मेरे पिता का अनिल से साक्षात्कार हो जाये और अनिल इन्हें भावी दामाद के रूप में पसन्द आ जाये ।"

अगले ही दिन राजा विक्रम सिंह फिर बेटी के पास आये और बोले - "बेटी, आज मैंने तेरे लिए एक बड़ा ही सुशील और होनहार लड़का देखा है । वह कोई राजकुमार नहीं है । वह हमारी ही रियासत के एक मध्यवर्गीय सभ्रांत परिवार का इकलौता दीपक है । बेटी, ज्यों ही मैंने उसे देखा पता नहीं कैसे मेरे मन में यह भावना उमड़ने लगी कि मेरी बेटी के लिये इससे अधिक योग्य वर इस संसार में मिलना कठिन है । लड़के का नाम अनिल है । विलायत में पढ़कर आया है और उसका बड़ा उज्जवल भविष्य है । अगर तुम्हें राजपरिवार से बाहर विवाह करने से एतराज नहीं हो तो मैं लड़के के मां-बाप से बात चलाऊं ।"

"मुझे कोई ऐतराज नहीं पिता जी ।" - शबनम प्रत्यक्ष में लजाती और मन ही मन खुश होती हुई बोली ।

अगले दस दिनों में अनिल और शबनम की शादी हो गई ।

पूरे चांद की रात करे एक विचित्र घटना घटी ।

शहजादी एकाएक नींद से जागी और जोरों से चिल्लाने लगी - "छोड़ो, छोड़ो ।"

अनिल भी उठ खड़ा हुआ ।

"क्या हुआ ?" - उसने घबराकर पूछा ।

"अनिल ।" - शहजादी घबराकर बोली - "कोई अदृश्य शक्ति मुझे बिस्तर से घसीट रही है ।"

"तुम सपना देख रही हो ?"

"नहीं । कोई अदृश्य शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही है । मुझे मजबूती से पकड़ लो ।"

अनिल ने शहजादी को कसकर पकड़ लिया । उसे भी अनुभव हुआ कि शहजादी का शरीर उससे विपरीत दिशा में खिंच रहा था । अनिल शहजादी को अपनी बांहों में जकड़े रहा ।

फिर धीरे-धीरे शहजादी का शरीर उस अदृश्य शक्ति के चंगुल से मुक्त हो गया ।

अनिल ने डरते हुए उसे छोड़ा ।

"अब कैसी तबीयत है ?" - उसने पूछा ।

"एकदम ठीक है ।" - शबनम बोली ।

"क्या हुआ था ?"

"मुझे सपने में अटवारी गांव का महन्त करीबो दिखाई दिया था । वह कह रहा था कि उसकी आत्मा का मुझ में वास हो गया था और इसीलिए मुझमें दैवी शक्ति आ गई थी, लेकिन क्योंकि मैं उस दैवी शक्ति को प्रयोग में नहीं ला रही हूं इसलिये उसकी आत्मा मेरा शरीर छोड़ रही है । अगर वह सच बोल रहा था तो अब मुझमें कोई दैवी शक्ति नहीं रही ।"

"परीक्षा करके देखो ।"

शबनम ने मेज पर पड़े पानी के गिलास की ओर देखा और बोली - "गिलास का पानी दूध बन जाये ।"

पानी दूध नहीं बना ।

"भगवान करे यह कुर्सी यहां से गायब हो जाये ।"

"मैं हवा में उड़ने लगूं ।"

शहजादी के शरीर में हरकत भी नहीं हुई ।

"जान छूटी ।" - शहजादी छुटकारे की गहरी सांस लेकर बोली - "एकाएक मुझे अपने दिल और दिमाग से एक भारी बोझ हट गया मालूम हो रहा है ।"

"अच्छा ही हुआ ।" - अनिल बोला ।

पूरे चांद की उस रात को जिस समय करीबो की आत्मा ने शबनम के शरीर से प्रस्थान किया, ठीक उसी समय माम्बा गांव का एक गधा धुयें के बादलों में घिर गया । एक जोर का धमाका हुआ । थोड़ी देर बाद बादल छंटे । गधे के पास मौजूद कुछ आदिवासियों ने देखा कि बादल छंटने के बाद गधा गायब हो गया था और उसके स्थान पर माम्बा गांव का पुराना ओझा जुमाला खड़ा था ।

आदिवासियों ने ओझा को पकड़ लिया और उसे राजा के पास ले गये ।

राजा ने ओझा को एक कोठरी में बन्द करवा दिया ।

अगले दिन सुबह सारे गांव वालों के सामने ओझा का मुंह काला किया गया, उसके गले में हड्डियों की माला पहनाई गई और उसे एक गधे पर बिठाकर गांव से बाहर निकाल दिया गया ।

लगभग एक साल बाद अनिल और शबनम के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उन्होंने अजीत रखा ।

अजीत तीन साल का हो गया ।

एक दिन अनिल अपनी कोठी में एक कमरे में बैठा अखबार पढ़ रहा था कि उसे बाहर लान से आती हुई शबमम की चीख सुनाई दी । अनिल अखबार फेंककर बाहर भागा ।

शबनम बाहर लान में आतंकित सी खड़ी थी ।

अनिल को देखते ही वह भागकर उसके पास आई और आसमान की ओर वाली उठाकर कांपते स्वर से बोली - "अनिल, देखो अजीत..."

अनिल ने आसमान की ओर निगाह उठाई तो उसका मुंह खुले का खुला रह गया ।

अजीत जमीन से कम से कम तीस कुट ऊपर यूं हवा में हाथ पांव मार रहा था जैसे पानी में तैर रहा हो ।

"पापा !" - अनिल पर निगाह पड़ते ही वह किलकारियां मारता हुआ बोला - "देखो ! मैं उड़ रहा हूं ।"

शबनम और अनिल घबरा उठे । अजीत किलकारियां मारता हवा में तैरता रहा । उसे मजा आ रहा था ।

एकाएक अनिल को लगा जैसे अजीत धीरे-धीरे और ऊंचा होता जा रहा है । अजीत को ऊंचा होता शबनम ने भी देखा और उसके मुंह से चीख निकल गई - "अजीत बेटा...उधर नहीं...नीचे आ जाओ ...मेरी गोद में आ जाओ बेटे..."

हवा में एक सर्राटा-सा हुआ और अजीत तैरता हुआ नीचे आया और शबनम की गोद में चिपक गया ।

अनिल की जान में जान आई ।

तभी सामने एक कालीसी छाया खड़ी दिखी ।

शबनम के होठ थरथराये - "करीबो......ओझा । करीबो की आत्मा...।"

छाया बोली - "हां बेटी...तुम्हें आशीर्वाद देने आया था...अब विदा लेता हूं ।"

शबनम और अनिल ने छाया को प्रणाम किया ।

छाया धीरे-धीरे लोप हो गई ।

समाप्त